सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - द तों ध

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

दसम दवार : दसम दवार देह दरवाज़ा। खुल्ह़ावे आप प्रभ वड राजन राजा। पंज तत्त विच्च कर आकार, झूठी देह साजन साजा । पवण रूप दे सहार, अनहद धुन वजाए वाजा। महाराज शेर सिँघ भाणा वरते संसार, भगत जनां हरि रक्खे लाजा। (१२ सावण २००८ बि)

साचा शब्द सोहँ ब्रह्म ज्ञान दे, प्रभ दसम दवार खुल्ह़ाया।(१५ सावण २००८ बि)

दसम दवार सति ध्याना। (५ जेठ २०१० बि)
हरि सेवक वड्ड सुल्तान है, साचे तख़त रिहा समाए। दाता दानी मेहरवान है, जुग जुग दया रिहा कमाए। शब्द निशानी दो जहान है, आप आपणा राह वखाए। नाम कानी तीर कमान है, गुरमुखां रिहा लगाए। अनहद बाणी मारे बाण है, प्रभ चिल्ले रिहा चढ़ाए। काया मन्दर इक्क मकान है, हरि बैठा डेरा लाए। नौ दवारे सुंञ मसाण है, तृष्न रही बिललाए,। गुर पूरा सद बलवान है, आपणा पल्ला नाम फड़ाए। गुरमुख बाला बाल निधान है, प्रभ साचा राह वखाए। मेट मिटाए पंज शैतान है, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आए। चौदां हट्ट वखाए सच दुकान है, तन मन्दर आप टिकाए। शब्द वस्त इक्क महान है, प्रभ साचा आप रखवाए। ना कोई अक्खर ना ज्ञान है, ना कोई विद्या होर पढ़ाए। ना कोई रसना मुख नक्क ना कान है, नेत्र दोए ना कोई दिसाए। बसतर शस्त्र ना कोई तन पहनान है, ना कोई वेस वटाए। ना कोई राग सुनान है, रागी राग ना कोई अलाए। साज बाज ना कोई धुन धुनकान है, सारंग किंग ना कोई वजाए। पुरख अबिनाशी आपे जाणी जाण है, हर घट बैठा रिहा समाए। जन भगतां करे पछाण है, आप आपणे लड़ लगाए। जुगा जुगन्तर धुर दी बाण है, हरि भगतां लए तराए। चरन प्रीत रखवाए एका आण है, लक्ख चुरासी फंद कटाए। आपे करे पुण छाण है, नीत अनीती वेख वखाए। देवणहारा

जीआ दान है, दाता दानी आप अखवाए। हरिजन साचे रसना गान है, गोबिन्द मेला सहज सुभाए। जोती नूर कोटन भान है, निर्मल नूर रिहा उपाए। राग अनादी एका कान है, अनरंगा रिहा सुणाए। दसम दवारी इक्क मकान है, हरिजन विरला वेख वखाए। शाहो भूपी शाह शहान है, हरि बैठा आसण लाए। सीस ताज इक्क महान है, जोती नूर डगमगाए। चारों कुण्ट वेख वखान है, उतर पूरब पच्छिम दक्खण एका रंग समाए। दह दिशा इक्क ध्यान, है, पर्दा उहला रहे ना राए। सुरती सुरत ब्रह्म ज्ञान है, पारब्रह्म समाए। आपे होए मेहरवान है, साचा मेला मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन देवे साचा वर, दर दवारा आप सुहाए। (२७ पोह २०१३ बि)

दसम दुआरा घर अनडीठ, बिन गुर किरपा नज़र किसे ना आइंदा।

(१७ चेत २०१६ बि)

जगत लेखा चुक्के जग, जग जीवण दाता आप चुकाईआ। जन भगतां दरस दिखाए उप्पर शाह रग, रघुपत आपणा मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दी बुज्झे अग्ग, त्रैगुण अग्ग ना लग्गे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। काया मन्दर अंदर कराए साचा हज्ज, काअबा इक्को नज़री आईआ। सन्त सुहेले आपे सद्द, गुर चेले भेव चुकाईआ। भगत भगवन्त लक्ख चुरासी विच्चों कर अड्ड, एका बंधन नाम पाईआ। अन्तम सचखण्ड दुआरे आए छड्ड, शब्द बबाणे लए चढ़ाईआ। विष्नूं तेरी विश्व यद, ब्रह्मे तेरी पारब्रह्म ब्रह्म आपणे लेखे लाईआ। पंज तत्त काया विच्चों कढ्ढ, निरगुण निरगुण लए मिलाईआ। दसम दुआरी गुरसिख तेरी निक्की जिही नेड़े हद्द, तेरा पैहला चरन दसम दुआरी विच्च टिकाईआ। अनहद शब्द थल्ले जाणा छड्ड, अग्गे राग सके ना कोई वज, नाद धुन ना कोई शनवाईआ। सुन अगम्म चुक्के हद्द, अन्ध अन्धेर ना कोई वखाईआ। थिर घर साचे लए सद्द, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। प्रभ चरन कँवल जाणा बझ, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह अगम्म अगम्मड़ा बिन हड्ड मास नाड़ी चंमड़ा, गुरसिख करे गुर गुर कुड़माईआ। सचखण्ड दुआरे चरन चरनामत प्याए मदि, मधुर एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए तराईआ। (१ हाढ़ २०१६ बि)

कर बेनन्ती जे लभ्भे दसम दवार, एह मंज़ल सतिगुर सच्चे कदे ना भाईआ।

(१ हाढ़ २०२१ बि)

दस पोह कहे सुणो बेनन्ती इक्क, दर ठांडे दिआं जणाईआ। पंजां तत्तां वाल्यो बण जाओ साचे सिख, सतिगुर सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। जिन्नां दे पूरब लेखे लए लिख, अन्तम झोली पाईआ। जो श्री भगवान तुहाढ्ढे उत्ते गिआ विस, विसरयां फेर उठाईआ। तुहाढ्ढा औदयां दा वेखे मुख, जांदयां दी तक्के पिठ, सवा गिठ अंदर आपणी खेल रचाईआ। जिस दसम दवारी दी करदे रहे सारे खिच, जोग अभिआस तप साधना जगत कराईआ। उस दी जन भगतां घर बैठयां दे देवे चिट, उप्पर सोहँ नाम रखाईआ। गुरसिख तूं मेरा मैं तेरा पित, पिता पूत इक्को घर दे मालक नज़री आईआ। जिन्नां दे अंदर मैं वड़ जावां विच, उहनां नूं दसम दवारी चंगी मूल ना भाईआ। उह कौडी वांग सिक्के भरी रिच, विचे बन्द कराईआ।

जिन्हां दे अन्तर वसेरा होया निझ, उहनां निझ नेत्र पन्ध मुकाईआ । मैं भगतां नाल आदि जुगादी निरगुण हो के गिआ गिझ, सरगुण खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी मेरी वक्खरी बिध, शास्त्र सिमरत वेद ना कोई समझाईआ। जो दस पोह रात नूं लग्गे पाला तुहाडे अंदर वड़ के माणा निध्ध, निगाह तुहाडी आपणे विच्च मिलाईआ। जे तुसीं करो ज़िद, आपणा बल वधाईआ। मैं फेर वी कहणा एह छिन्दे मेरे पुत्त, जिन्हां आपणी गोद उठाईआ। जिन्हां नाल मेरी मौले रुत्त, सुहञ्जणी घड़ी सोभा पाईआ। उहनां उत्ते क्यों ना होवां खुश, जो खुशीआं विच्च मेरा नाम ध्याईआ। सृष्टी नालों हो के चुॅप, मुख आपणा बैठे बदलाईआ। जन भगतां कोलों भगत रहे पुच्छ, किथे मिले बेपरवाहीआ। पाल सिँघ कहे उह सभ दी मंगे सुख, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना मानस ना मनुख, जोती जाता पुरख बिधाता मालक ख़ालक पतिपरमेश्वर पारब्रह्म निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस नूं भगतां मिलण दी लग्गी भुक्ख, बिन दर्शन सांत कदे ना आईआ। सो दूर दुराडा नेरन नेरा नेड़े गिआ ढुक, लहणा देणा पन्ध मुकाईआ । जन भगतो उस तों लहणा देणा लै लिउ कुछ, जेहड़ा लव कुछ सीता जनक सपुत्तरी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। (१० पोह २०२१ बि)

सृष्टी दी दृष्टी होणी दंग, भेव अभेद कोई समझ ना सके राईआ । जिस वेले काया मन्दर अंदर दूई द्वैत दी ढैहन्दी कंध, दसम दवारी जोत निरँकारी चिट्टी धार नज़री आईआ। (१ चेत श सं १)

किरपा कर के जे किसे नूं थोड़ा जिहा दस्सया दसम दवारी कोटी, इशारे नाल समझाईआ। उह हउमे दा हो गिआ रोगी, हंगता विच्च आपणा आप मिटाईआ। (२६ पोह श सं २)

छे मध्घर कहे मेरी सोहणी थित, सम्मत शहनशाही वडयाईआ। धन्न वडिआई मिल्या धुर दा मित, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ । सदा स्वामी वसे चित, मन ठगोरी रहे ना राईआ। बिन अक्खां पए दिस, चारों कुण्ट नूर रुशनाईआ। धुर दा वंडे हिस्स, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। अन्तर आत्म मारे खिच, सुरती शब्द विच्च समाईआ। जन भगतां दर्शन देवे नित्त, जागत सोवत सोभा पाईआ। आत्म सेजा जाए लिट, सच सिँघासण डेरा लाईआ। गुरमुखो किसे नूं तारे कोई ना पत्थर इट्ट, पाहन पूजन कोई ना जाईआ। बिना सतिगुर तों सुरती किसे ना जावे टिक, समाधीआं विच्च समझ ना कोई पाईआ। जिन्हां दे कोल धुर दे नाम दी चिट्ट, चिट्टी धारी दसम दवारी लए मिलाईआ। पंजां दा झगढ़ा आपे लए नजिट्ठ, एह सतिगुर हत्थ वडयाईआ। पूरा सतिगुर कदे ना देवे पिट्ठ, सनमुख हो के गोद टिकाईआ। कूड़ी क्रिया विच्च होण ना देवे जिच, औखे राह ना कोई पाईआ। जिस प्रेम प्यार नाल कीता हित्त, ओसे नूं लक्ख चुरासी विच्चों कढाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडे दए टिकाईआ। (६ मध्घर श सं ४)

भादरों कहे मैं चार कुण्ट भज्जा, भजन बन्दगी तेरी वेख वखाईआ। मैं साधां सन्तां सूफ़ीआं अंदर कीती गजा, गृह गृह जा के अलख जगाईआ। दस्सो केहड़ा नाम केहड़ा कलमा किस दा आवे मज़ा, रस कवण चखाईआ। किस दे नाल मिटदी कज़ा, जीवण जीवण विच्च रखाईआ। क्यों नाम कलमा पढ़दयां जीवां मिलदी सज़ा, चुरासी विच्च दुहाईआ। सच दस्सो प्रभ दा पूरा नाम कि अद्धा, हिस्सा की की वंडाईआ। की सभ नाल प्रभ ने चार जुग कीता दग़ा, आपणा भेव ना कोई खुल्ह़ाईआ। किसे नूं दस्सया मैं वस्सया उप्पर शाह रगा, नौ दवारे डेरा ढाईआ। किसे नूं किहा मैं दसम दवारी वसा, घर साचे वज्जे वधाईआ। किसे नूं किहा मेरी इस तों अग्गे जगह, सच दवारे सोभा पाईआ। किसे नूं किहा मेरी कोई ना जाणे वजह, वज़ाहत विच्च ना कोई दृढ़ाईआ। जां तक्कया सभ नूं दीन मज़हब दा ला के धब्बा, साफ़ रहण कोई ना पाईआ। किसे ने पिता किहा किसे ने बाप किसे ने किहा अब्बा, अब्बा वाले अम्मी संग ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। (१ भादरों श सं ५)

दसम दवार कहे मेरी अरदास, अर्ज़ बेनन्ती इक्क सुणाईआ। मेरे साहिब पुरख अबिनाश, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। खेल खिला के हड्ड नाड़ी मास, पंज तत्त बणत बणाईआ। त्रैगुण माया पा के रास, प्रकृती रंग रंगाईआ। नौ दवारे दे के साथ, जगत संग जणाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन बणा के घाट, मंज़ल मंज़ल विच्च अटकाईआ। कँवली बखश के बूंद सवांद, नाभी नाभ टपकाईआ। शब्द अगम्मी जणा के नाद, धुन धुन शनवाईआ। सुरती सुरत अराध, रसना रस चखाईआ। आपणा भेव रक्ख के बोध अगाध, अगाध बोध बोध बेपरवाहीआ। कँवल कँवला बुझा के आग, तृसना तृखा गवाईआ। मन मनूए दे वैराग, वैरी अन्तर निरंतर मिटाईआ। मेरे घर विच्च निक्का जेहा आपणा जगा के चराग, सूर्या चन्न तों परे कीती रुशनाईआ। जगत साधूआं वास्ते खुशीआं वाला बाग, बगीचा दित्ता प्रगटाईआ। इस विच्च वड़ के कहण एथे करीए राज, अग्गे कदम ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। दसम दवार कहे मेरा निक्का जेहा घराना, घर घर विच्च टिकाईआ। जिस नूं माण जगत जहाना, जीव ईश समझाईआ। जिथ्थे पंचम पंच सुण धुनकाना, शब्द शब्द वडयाईआ। जिथ्थे मसती मसत दीवाना, खुमारी खिमां विच्च रखाईआ। धर्म धर्म दा ईमाना, अमलां तों बाहर दृढ़ाईआ। तेरी मंज़ल दा पैहला निशाना, निशानेबाज़ तेरी सरनाईआ। एथे दरस हुंदा तेरा नूरी नूर दा काहना, राम तेरी वडयाईआ। तेरी मंज़ल मंज़ल दा मिले बहाना, रहबर तेरा राह दरसाईआ। कलमा कलमे विच्च दस्से कलामा, संदेशा अगम्म अथाहीआ। साचा नूर नूर नुराना, रव सस सीस निवाईआ। दूसर दिसे ना कोई बेगाना, वैरी मीत ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा रंग रंगाईआ।

दसम दवार कहे मैनूं अक्खरां विच्च पढ़दे, सिफ्तां विच्च वडयाईआ। अभिआसां विच्च लड़दे, नैण मूंद ध्यान लगाईआ। पाणी विच्च ठरदे, जल धारा सीस कराईआ। अगनी विच्च सड़दे,

हवन हवन समझाईआ। इष्ट जगत वाला देव मूरती धरदे, धर्म धार दरसाईआ। ढोले गाउण नरायण नर दे, बिन रसना रसन हिलाईआ। सुरती शब्द नाल जड़दे, शब्द सुरत वल रखवाईआ। बौहड़ी मेरे घर मूल ना वड़दे, राह विच्च बैठण पत्त गवाईआ। दसम दवार कहे मैं कोटन कोट वेखे लोभ मोह हँकार विच्च लड़दे, दिवस रैण करन लड़ाईआ। कोई मुख करदे चढ़दे, कोई लहिंदे सीस निवाईआ। कोई दक्खण पहाड़ नठ्ठदे, भज्जण वाहो दाहीआ। कोई राह तक्कण निझ नेत्र अक्ख दे, जगत नैण नैण शरमाईआ। कोई बूंद सवांत अमृत रस चक्ख दे, कँवली कँवल कँवल उलटाईआ । दसम दवार कहे प्रभू मेरे दवारे बिना तेरे भगतां तों मूल कोई ना वसदे, विद्या जगत ना कोई वडयाईआ। कर किरपा जिस नूं आपणी मत दे, मत मतांतर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

दसम दवारी कहे मेरा घर छोटे तों छोटा, साहिब तेरी वड वडयाईआ । मैनूं लभ्भदे कोटी कोटा, कोटन कोट भज्जण वाहो दाहीआ। मैं उच्ची कूक सुणावां लोका, धुर दा नाम इक्क जणाईआ। बिना सतिगुर किरपा मेरे घर दा किसे नूं नहीं मिलदा मौका, दर चढ़न कोई ना आईआ। गोबर नाल मेरा कदे किसे साफ कीता नहीं चौंका, जगत पोच ना कोई लगाईआ। बसतर तन किसे नहीं धोता, अन्तर करे ना कोई सफाईआ। छत्तां वाला नहीं कोई कोठा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। मेरे विच्च मेरे प्रभू ने रक्खी निक्की जिही आपणी जोता, जोती जोत नाल जगाईआ। मेरा कोई माण नहीं वड्डा बहुता, घर विच्च घर दित्ता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच भेव आप खुल्ह़ाईआ। दसम दवार कहे मेरा दरवाजा किसे ना लभ्भा, हाए उफ मेरी दुहाईआ। मेरे अंदर सति सरूप इक्को बग्गा, जोती धार सोभा पाईआ । जिथ्थे हँस बण गए कग्गा, काग हँस रूप वखाईआ। तैंगुण लग्गे कोई ना अग्गा, तत्तव तत्त ना कोई जलाईआ। मेरा कोई सकेअर नहीं विच्च गज़ां, फुट्टां विच्च ना कोई लंबाईआ। मेरे घर दी किसे अग्गे ब्यान नहीं कीती पूरी वज़ह़, चार जुग दे शास्त्र इशारे दे के गए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच लेखा आप दृढ़ाईआ।

दसम दवार कहे मेरा मुहीत मज़ले मुज़लू, मिज़ान मज़हब ना कोई लगाईआ। जिथ्थे आफ्ताब ना होवे कोई तलूह, ग़रूब गिरहा ना कोई समझाईआ। सिलाने सलल रूहाने रूह, रहमत यकसू ज़ू अखवाईआ। जिथ्थे बिना रूप रंग रेख तों शब्द गुरू, गृह मन्दर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा भेव खुल्ह़ाईआ।

दसम दवार कहे मेरा कज़ा बू इरद गिर्द, कबीर नानक मुहम्मद ज़हूरे ज़ाहिर जीव समझाईआ। कोई जाण ना सके बाल बिरध, जोबनवन्त ना कोई चतुराईआ। भेव पा ना सके सुरत निरत, नैण अक्ख ना कोई दरसाईआ। जिथ्थे मनुआ करे कोई ना किरत, किरतघन ना कोई वडयाईआ। मिरतू विच्च होवे कदे ना मिरत, मिरतक रूप ना कोई दरसाईआ। वेखणा पए ना दीप घृत, जोती जगत ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, दर दरबारा इक्क दरसाईआ।

दसम दवार कहे मेरा गृह निक्के तों निक्का, नक्का सूई ना कोई चतुराईआ। जिस दा

मालक इक्को इका, एकँकार इक्क रखाईआ । जो मेरे मंत्र अन्तर निरंतर हो के टिका, घर घर दिती वडयाईआ । मैं कदे हत्थ नहीं आया विच्चों पत्थर इट्टां, पाहन पूजस मिलण कोई ना पाईआ। मेरा आदि तों लै के अन्त तक्क इक्को गृह ते इक्को मन्दर इक्को जुग चौकड़ी सिट्टा, दूजा रूप ना कोई दरसाईआ। सच दवार एकँकार किरपा धार अपर अपार मेरा दवार जद वखाया वखाया भगतां सिखां, सहज नाल समझाईआ। जिथ्थे इक्को धुर धार दी मिलदी भिच्छा, दूजी वस्त ना कोई वरताईआ। तृष्ना तृखा रहे ना इच्छा, निरइच्छत रंग रंगाईआ। मेरा कोई लंमा चौड़ा हरफ़ां हरूफ़ां वाला नहीं कोई किस्सा, सतरां वाली ना कोई लिखाईआ। मेरा गृह मन्दर टकयां विच्च कदे ना विका, कीमत हट्ट ना कोई पवाईआ। मेरा इक्को मालक इक्को पिता, इक्को देवणहार वडयाईआ। पुत्त कहे पिओ नूं की तैनूं पैहले वी कदे दिसा, जे अग्गे वेखणा ई बेनन्ती विच्च मंग मंगाईआ। जिथ्थे साहिब दा दर्शन होए निता, जागत सोवत नूर दए चमकाईआ। कोई चुक्कणी पए ना चिका, कुण्डी हत्थ ना कोई खुल्ह़ाईआ। प्रभ दी किरपा नाल भगतां दा पैहला एहो हिस्सा, दसम दवारी विच्च पैहलां दरस दिखाईआ। फेर दसम दवारी नूं दे के पिछा, अग्गे लए कढ्ढाईआ । इस तों अग्गे मंज़लां चार होर जिथ्थे साहिब सतिगुर बैठा अनडिट्ठा, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। ओथे दसम दवारी तक्के बिट बिटा, दूर दुराडी ध्यान लगाईआ । जन भगतां कहे मेरी अरजोई हिका, इक्क दिआं सुणाईआ। जिथ्थे तुहाढ्ढा साहिब स्वामी वसे पिता, ओथे मेरी मंज़ल मूल रहे ना राईआ। मैं तां साढ्ढे तिन्न हत्थ विच्च हां टिका, नौं दवारयां उप्पर आपणा घर रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त सभ दी पूरी करे इच्छा, निरासा रहण कोई ना पाईआ। (११ अस्सू शहनशाही सम्मत ६)

दर दरवाजा : आत्म दर सच दरवाजा। जिथ्थे वसे आप ग़रीब निवाजा। आपणा आप आप जिस साजन साजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव दर सच्चा घर, आपे खोल्ह़े दसम दवारा। (१७ भादरों २००६ बि)

भगत भगवान दा इक्क दरवाज़ा, दूजा राह ना कोई वखाइंदा। गुरसिख गुर इक्क काजा, सतिगुर सेव कमाइंदा। जोत शब्द निरगुण राजन राजा, भूपन भूप दया कमाइंदा। उजड़या वसाइआ फेर माझा, गुर गोबिन्द हो के फेरा पाइंदा। अन्तम अन्त रक्खे लाजा, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। पुरख अकाल बणया दादा, पूत सपूते वेख वखाइंदा। हरि संगत सीस पहनाए ताजा, साचा लेख लिखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दी साची नींह, हरि संगत लेखा चुकाए साढ्ढे तिन्न हत्थ सीं, अंदर आया लक्ख चुरासी विच्च रहण ना पाइंदा।

हरि संगत सीस गुर शब्दी ताज़, तख़त निवासी आप रखाइंदा। दया सिँघ दर देवे दाज, धर्म मत दी जड़्ह लगाइंदा। बिशन सिँघ मारे आवाज़, जन्म जन्म नाल समझाइंदा। मत सति दा सति जहाज़, सति सतिवादी आप चलाइंदा। देवे वड्डिआई मिसत्री राज, मिसल श्री भगवान बणाइंदा। हरि संगत सुआरे काज, जो गुरसिख दर आ के सेव कमाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शब्द सरूपी गुण निधान, निरगुण दाता पुरख बिधाता साची धार आप चलाइंदा।
दो दस दा दर दरवाज़ा, सच धार वडिआया। सोलां सोलां खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक खुदाया। इक्की नौं बोध अगाधा, शब्दी शब्द समझाया। उप्पर बैठ वड राजन राजा, जन भगतां फड़ बाहों पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करनी आप कमाया। (७ चेत २०२० बि)

पारब्रह्म प्रभ तेरा सदका, मिले माण मोह वडिआया। ग़रीब निमाणा निरधन अदना, बलहीण नैण शरमाया। तेरा लेखा कृष्न बध का, बद्धक मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडिआया।
बद्धक मार तीर, तीर निशानया। बद्धक वेख अख़ीर, आख़र पछतानया। बद्धक वेख अख़ीर, हरि साहिब गले लगानया। तीर देवे नाम निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सुल्तानया।
गोडे उप्पर पैर पसार, चरन कँवल रुशनाया। दोहां अंदर खेल अपार, नज़र किसे ना आया। प्रेम रत्त डिगे आपणी धार, सच प्रीती चरन रंग रंगाया। बद्धक रोवे ज़ारो ज़ार, वेख वेख कुरलाया । कृष्न कहे मेरा सच विहार, सच सच जणाया। तेरा निशाना अपर अपार, मेहरबाना रंग रंगाया। लेखा जाणे आदि करतार, कादर वड वडिआया। दोहां चरनां दे विचकार, प्रेम रत्त वहे वाहो दाहिआ। कृष्न काहन करे गुफ़तार, सच सच जणाया। दर दरवाज़ा अपर अपार, चरनां दोहां विच्च रखवाया। नव दुआरे बद्धक करे हाहाकार, दसवें सांतक सति रखवाया। नव दस दा सति विहार, सोलां कलां सोलां इछया दए वडिआया। इक्की नव खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ भेव जणाया। सच सच दा सच विहार, सच सच समझाया। जिउँ कृष्न तेरा करे आधार, घाउ आपणे तन लगाया। तिउँ श्री भगवान निरगुण जोत करे आकार, निराकार सरूप धराया। ग़रीब निमाणयां कोझे कमलयां पतित पापीआं देवे तार, जिस जन देवे चरन सरन सरनाया। मेला सोहे अन्तम वार, कलिजुग मिले वडिआया। सेवा करे आप करतार, करनी करता आप कमाया। भगत दुआरे खोल्ह कवाड़, दर दरवाज़ा इक्को इक्क वखवाया। उप्पर लेख लिखे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार करे लोकाया। हरि संगत सिर पहनाया ताज, ताजां वाले राए धर्म हत्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत जुग लहणा लहणेदार झोली पाया।
दरवाज़ा कहे मैं साची सेव कमाऊंगा। जन भगतां राह तकाऊंगा । सोहँ ढोला इक्क सुणाऊँगा। हरि संगत दे माण जगत वड्डिआवांगा । हरि भगतां दे ज्ञान गुरमुख तार वजावांगा। सच धर्म सच निशान इक्को इक्क वखावांगा। आपा कर कुरबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरवाज़ा कहे दरबान अखवावांगा।

जन भगतां हो मेहरबान, फड़ बाहों पार लगावांगा। मनमुख जीव शैतान, मूंह दे भार सुटावांगा। गुरसिख साची सिख्या इक्क दरसावांगा। सज्जा चरन अग्गे रखा के, पैहला कदम टिकावांगा।

बल राजा मेल मिला के, बावन पन्ध मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, वर आपणी झोली पावांगा।

जन भगत सज्जा चरन अग्गे टिकौणगे। माण हँकार आपणे विच्चों कढौणगे। दोए जोड़ सीस झुकौणगे। पिछली भुल्ल बख्शौणगे। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जिह्वा गौणगे। सिधे चल के सच दुआरे दर्शन पौणगे। काम क्रोध लोभ मोह हँकार जन्म कर्म दे दुःख मिटौणगे। सज्जे खब्बे नेत्र ना कोई उठाल, नीवीं नज़र ध्यान लगौणगे। साहिब सतिगुर हो दयाल, गल पल्लू वासता पौणगे। जिन मन होए शैतान, तिन्नां गुरमुख संग ना कोई रखौणगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना बणे अणजाण, नीच कर्म कुकर्मी दो जहानी धक्के खाणगे।

दरवाज़ा कहे जो मेरे अंदर लंघेगा। निउँ चरन प्रीती मंगेगा। बुरी नीती कोई ना रक्खेगा। सतिगुर मार्ग इक्को दस्सेगा। हर हिरदे विच्च वसेगा। जो सतिगुर प्रेम फसेगा। पिच्छे फेर कदे ना हटेगा। इक्को सोहँ ढोला रटेगा। राए धर्म कोलों बचेगा। सच दुआरे बह सजेगा। भगत दुआरे भगतां नाल फबेगा। मनमुखां पर्दा कोई ना कज्जेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल इक्को गज्जेगा।

दरवाज़ा कहे सुणो ला कर कन्न, शब्दी शब्द खेल खलाइंदा। बद्धक प्यार कृष्न चरन कँवल, नव दस्स वंड वंडाइंदा। कलिजुग अन्तम बेड़ा बंन्न, साचा राह वखाइंदा। धुरदरगाही इक्क धन्न, नाम निधान इक्क सुणाइंदा। मैनूं वेख फेर जाणा अंदर लंघ, मेरे वेंहदिआं सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ नूं चेते आइंदा। नेत्र हुन्दआं ना होणा अंन्न, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। मेरा कहणा लैणा मन्न, मैं अग्गे पुरख अकाल मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, मेरी सेवा इक्को लाइंदा।

(७ चेत २०२० बि)

जन भगतां नाम दृढ़ावांगा। दूरों औंदिआं राह वखावांगा। ढोला गौंदिआं नज़री आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, घर साची सेव कमावांगा। सेवा करां बण दरवेश, दर दरवाजा सीस झुकाया। सीस निवाइण ब्रह्मा विष्न महेश गणेश, नित नवित्त ध्यान लगाया। भगत भगवान करे हेत, हितकारी वड वडिआया। बीस बीसा महीना चेत, किस्मत मात फुलवाड़ी महकाया। बद्धक नेत्र लए पेख, दोए चरन धार लए समझाया। कलिजुग अन्तम धरे भेख, भेस अव्वलड़ा आप वटाया। जगत दस्से ना कोई रेख, कलम शाही बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरबान मंग मंगाया।

दर दरवेश बण दरबान, भगत दुआर अलख जगाइंदा। मेरी करनी कर परवान, प्रभ तेरे चरन ध्यान लगाइंदा। शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, शहनशाह इक्को इक्क अखवाइंदा। तख़त निवासी नौजवान, भूपत भूप भेव ना आइंदा। जोधा सूरबीर राज राजान, धुर फ़रमाणा हुक्म अलाइंदा। कलिजुग अन्तम हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड आपे वेखे मार ध्यान, मेहर नज़र नरायण नर निरँकार आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा।

मंगे मंग चरन कँवल सीस, नेत्र नैण नैण ध्यान लगाईआ। किरपा कर साहिब जगदीश,

मेहरबान तेरी वडयाईआ। हरिसंगत दस्सां इक्क हदीस, सच सच पढ़ाईआ। माणस जन्म लैणा जीत, अजन्म रूप ना कोई वटाईआ। साहिब सतिगुर दा इक्को गीत, दर औंदयां दए समझाईआ। हिरदे वसाओ आपणे चीत, चेतन्न रूप कराईआ। दर्शन पाओ इक्क अतीत, दर घर साचे मिले वडयाईआ। काया करो ठंडी सीत, अगनी तत्त ना लागे राईआ । नाता छुट्टया मन्दर मसीत, भगत दुआर भगवन नूर रुशनाईआ। सदी बीसवीं रही बीत, दूजा अवर ना कोई सहाईआ। सभ दे होणे ख़ाली ख़ीस, बेपरवाह खेल खिलाईआ। मैं नेत्र वेखां ठीक, दर दरवाजा रिहा जणाईआ। जिन हसत कीते कीट, कीटों हसत बणाईआ। तिस नाल लाओ प्रीत, लग्गी प्रीत ना कोई तुड़ाईआ। सतिजुग दी साची रीत, सतिजुग कलिजुग विच्च बदलाईआ। प्रभ का खेल सदा अनडीठ, सार किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वडयाईआ।

दर दरवाजा रिहा कूक, कूक कूक जणाईआ। भगत भगवान दे साचे पूत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण ताणा पेटा सूत, तन्द आपणे नाम बंधाईआ। वेखणहारा तत्त काया कलबूत, तत्त वस्तू आपणी दए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला सच्चे महबूब, मुहब्बत इक्को इक्क रखाईआ। भगत दुआर दी भगवन हदूद, भावी नेड़ कोई ना आईआ। इक्को मंज़ल मंज़ले मकसूद, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवणहारा असल नाल सूद, शरअ फ़ी सदी आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

दर दरवाज़े तेरा दर्दी दर्द, दस्तगीर आप अखवाईआ। तेरा होण ना देवे हर्ज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। तूं खड़ा होणा बण के मरद, सच मरदानगी दए जणाईआ। तेरे मस्तक धुर दी फ़रद, लेख अलेख दए जणाईआ। करे खेल आप असचरज, अचरज रीत चलाईआ। कूड़ कुड़िआरे देणा वरज, सच सुच्च समझाईआ। आपणा पूरा करां फ़र्ज़, फ़रमांबरदार बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी पुशत आपणा हत्थ रखाईआ।

श्री भगवान तेरा हुक्म मनज़ूर, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। सद वसां तेरे हज़ूर, हाज़री आपणी इक्को वार लगाईआ। तेरा लै के जोती नूर, तेरे भगतां करां रुशनाईआ। राह तक्कां नेड़े दूर, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ। जन भगतां सज्जे चरन दी धूड़, धुर दी खेल वखाईआ। चतुर सुघड़ बणन मूर्ख मूढ़, जो मेरे विच्चों अग्गे चरन टिकाईआ। तूं ओन्नां बख्शीं सर्ब कसूर, जो आइण दर सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

जो तेरे विच्चों लँघणगे। काया चोली रंग रंगणगे। नाम मंग इक्को मंगणगे। प्रभ संग रह रह वसणगे। भुक्ख नंग दर्द दुःख कट्टणगे । आत्म अनन्द प्रेम रस चक्खणगे। साहिब सतिगुर दे साचे चन्द, जीवां जंतां राह दस्सणगे। दर्शन पा हरि बख्शंद, प्रेम प्रीती विच्च नच्चणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वसणगे।

दरवाजा कहे मोहे दे ज्ञान, आपणा नाम दृढ़ाईआ। किस बिध तेरे भगतां करां पहचाण, लक्ख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। निरगुण बोले गुण निधान, गुण आपणा दे समझाईआ।

भगत भगवान खेल महान, महिमा अकथ्थ वडयाईआ। तेरे सनमुख आ के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन ढोला गाण, सो मंज़ल आपणी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच समझाईआ।

दरवाज़ा कहे प्रभ जे कोई तेरा ढोला झूठा गावे, रसना नाल सुणाईआ। मेरी पहचाण विच्च ना आवे, धोखा करे विच्च लोकाईआ । श्री भगवान अग्गों समझावे, दे मत रिहा जणाईआ। साचा भगत दर आ के सीस झुकावे, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। सोहँ ढोला सच्चा गावे, अन्तर ध्यान लगाईआ। सज्जा चरन फेर उठावे, नेत्र नैण शरमाईआ। बण निमाणा दर दर्शन पावे, घर साचे वज्जे वधाईआ। मनमुख ना कोई सीस झुकावे, धूढ़ी टिक्का ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, सच ज्ञान इक्को दए जणाईआ। (८ चेत २०२० बि)

लछमी कहे दस्स आपणे लच्छण, इक्को मंग मंगाईआ। मेरी सेजा दिसे सख्खण, विष्नूं रंग ना कोई रंगाईआ। प्रभ मैं तैनूं आई दस्सण, बण बण पान्धी राहीआ। लोकमात भगत भगवान इक्को घर वसण, वज्जे सच वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र तक्कण, नैण नैण उठाईआ। पिछला लेखा सारे छड्डण, दोए जोड़ वासता पाईआ। पंज तत्त नाता टुट्टया हड्डण, मास नाड़ी तत्त ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मिले माण वडयाईआ।

लछमी कहे प्रभ बेपरवाह, बेपरवाही खेल खलाइंदा। नानक कबीर दस्सया राह, मार्ग इक्को इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटा, अवल्लड़ी कार कमाइंदा। जोती जाता नूर धरा, नूर नुराना डगमगाइंदा। पिछली रीती सभ उलटा, उलटी कल वरताइंदा। मन्दर मसीती पन्ध मुका, लिखण पढ़न वक्त चुकाइंदा। सच दुआरा इक्क सुहा, सोभावन्त वडिआइंदा। भगत भगवान कर रुशना, ज़मीर रोशन आप कराइंदा। मेहरबान बख्श गुनाह, बेनज़ीर खेल कराइंदा। दर दुआर इक्क वड्डया, दर्दी दर्द वंड वंडाइंदा। चोबदार कोई दिसे ना, दवारपाल ना कोई वखाइंदा। जै विजे मारन धाह, नेत्र नैण नीर शरमाइंदा। लोकीं कहण मैं लछमी मां, भेव अभेद जणाइंदा। तेरे कहणे श्री भगवान आपणा बल लिआ धरा, अछल छल आपणी खेल कराइंदा। निरगुण हो शहनशाह, पातशाह आपणा रंग वखाइंदा। लोकमात भेव चुका, पर्दा आप उठाइंदा। भगत दुआर इक्क सुहा, श्री भगवान आसण लाइंदा। सच दरवाजा दए बणा, सेवक शब्दी नज़री आइंदा। आत्म परमात्म रिहा जगा, सोया कोई रहण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव माण गवा, शक्ती आपणे विच्च समाइंदा। धुर फ़रमाणा हुक्म जणा, लेख अलेख वडिआइंदा। आत्म तैनूं गिआ भुला, साडी सार कोई ना पाइंदा। चार कुण्ट दह दिशा नेत्र नैण लए तका, ताजर नज़र कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा।

लछमी कहे मैं की दस्सां, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। अन्तम कीहदे कोल वसां, मेरी पत्त नज़र कोई ना आईआ। अबड़वाही उठ उठ नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। एको नाम सच्चा रटां, सो पुरख निरञ्जण ढोला गाईआ। मैहन्दी रंगले वेखां हत्थां, नैण कज्जल धार शरमाईआ। मेरी पलक ना खुल्लीआं अक्खां,

आख़र मेल ना कोई मिलाईआ। मैं हत्थ मथ्थे ते रक्खां, सोच सोच विच्च समाईआ। बौहड़ी बौहड़ी वासता घत्तां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैं किहा हासे विच्च ठट्ठा, प्रभ ठोकर गिआ लगाईआ। निरगुण हो के भगत दुआर जा के वसां, विष्नूं आपणी उंगली लाईआ। जन भगतां फड़ फड़ कीता इक्ठा, इक्को गंढ पुआईआ। पिछला मेटिआ पिच्छे रट्टा, अग्गे इक्को राह जणाईआ। राग गौण दी लोड़ रहे ना भट्टां, ढाडी मिले ना कोई वडयाईआ। साचा ढोला दस्सया जट्टां, इक्को नाम जणाईआ। ग़रीब निमाणयां लेखे लाए इट्टां, इट्ट ना जाणो अटकण दए कढ्ढाईआ। जिस भगत दवारे काग़ज़ दबाया चिट्टा, चिट्टी धार वखाईआ। सच सच करे साचा हित्ता, हितकारी सेव कमाईआ। पिच्छों जगत जहान रह जाए किस्सा, कासर बिन करनीउँ पार कराईआ। दर दरवाजे अग्गे दिसा, दृष्ट इष्ट इक्क जणाईआ। मेरे वल कर के पिट्ठा, बैठा मुख भुआईआ। लछमी कहे निरगुण हो के बणया निक्का, घर घर अंदर आपणा आसण लाईआ। मैं जाणया मैं इकल्ली दा हिस्सा, माण विच्च माण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच दए वडयाईआ। लछमी कहे मैं होई हैरान, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। बाली नढी बणी रही जवान, जोबन इक्क हंढाईआ। लाल भूशन पहन रकान, तन शिंगार रखाईआ। नाता जोड़ विष्नूं भगवान, भगवन आपणे घर वसाईआ। अछल्ल छल करया महान, भेव अभेद छुपाईआ । जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों दवौंदा रिहा ब्यान, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। कलिजुग अन्त हो प्रधान, शहनशाह आपणा खेल कराईआ। दर दरवाजा इक्क निशान, सचखण्ड निवासी आप सुहाईआ। बिन भगतां कोई ना लभ्भे विच्च जहान, जाण पहचान ना कोई कराईआ। लछमी वेख टुट्टा माण, गल पल्लू वासता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरबान दवारपाल इक्को इक्क वखाईआ।

दर दरवाजा दवारपाल खड़ेगा। सुण लछमी बिन भगतां अंदर कोई ना वड़ेगा। भगत भगवान दी सेजे चढ़ेगा। तेरा पल्लू वेख वेख डरेगा। सालू रत्तड़ा तेरे नाल लड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्को इक्क हरी दा।

लछमी कहे की मैं बाहर रहांगी। श्री भगवान कोल ना बहांगी । आपणा हाल अहिवाल ना कहांगी। दूर दुराडा विछोड़ा किस तरां सहांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी सरनी साची पड़ांगी।

सुण लछमी सच विहार, श्री भगवान आप जणाइंदा। विष्नूं नाल तेरा प्यार, विष्नूं सांगो पांग सेज हंडाइंदा। बाशक तशका सेवादार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र उठाइंदा।

वर देवे निरँकार, दयावान वडयाईआ। तेरा लाल भूशन अपार, अपरम्पर वेख वखाईआ। चरन झसणा तेरी कार, साची सेवा सेव समझाईआ। घर घर आप निरँकार, निरगुण आपणी कार कमाईआ। भगत दुआर सेवादार, दर दरवाजा वेख वखाईआ। दस चेत दह दिशा पावे सार, दो जहानां भेव चुकाईआ। दस दो दे आधार, बारां साल आपणी कार कमाईआ। वीह सौ अठ्ठ बिक्रमी पहली चेत हुक्म दित्ता निरँकार, दस चेत लेखा लिखत लेख वडयाईआ। दीपक जोत जगे चिराग, बाकी दीपक गुल कराईआ। बिन नाड़ी पंज तत्त तत्त रक्खी लाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हत्थ रखाईआ।

बारां साल शब्द संदेश, दिवस रैण जणाइंदा। बीस बीसे कर वेस, आपणा खेल वडिआइंदा। तेरे कोल रिहा हमेस, वेला अन्त भगतां हत्थ फड़ाइंदा। नाल रलया गुर दस्मेश, सच्चा इक्को नज़री आइंदा। लाल रंग प्रभ साचे दा साचा वेख, कमर पीला बंधन पाइंदा। गोबिन्द नाल गोबिन्द खेल, हरि ख़ालक ख़लक जणाइंदा। तेरी सुंञी वेख सेज, जन भगतां रुत्त सुहाइंदा। जिन्हां मातलोक रिहा भेज, पिच्छे आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

साल बारवें होए किरपाल, किरपा आप कराईआ। दस चेत वीह सौ वीह बिक्रमी जामा पहन लाल, लालन आपणा रंग वखाईआ। तेरा हल्ल करे सवाल, लहणा झोली पाईआ। तेरे नैण होए बेहाल, रोंदयां नीर वहाईआ। भगत दुआरे हरि भगत लए सुआर, दस चेत मिले वडयाईआ। अन्ध अन्धेरा बेमिसाल, चन्द नूर ना कोई रुशनाईआ सज्जे पासे दीन दयाल, खब्बे पासे सिँघ प्रीतम समझाईआ। अद्धविचकार दया सिँघ लाल, बिशन सिँघ सेव कमाईआ। तूं औणा आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ ।

चरनी लग्गणा पुरख अकाल, अकाल दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दस चेत शब्द लिखत लए वेख, बिन नाम दए वडयाईआ।

श्री भगवान जिस वेले दरवाजा लंघांगी। मैं वेख के कोझे कमले स्त्री पुरुष संगाँगी। तेरे दुआरिउँ ख़ैर किस तरां मंगाँगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, आदि जुगादि जुग जुग तेरे नाल हंढांगी।

दरवाजे अग्गे जिस वक्त आवेंगी। प्रभ चरन ध्यान लगावेंगी। भगत भगवान वेख खुशी मनावेंगी। ग़रीब निमाणयां विच्च आपणा झट्ट लंघावेंगी। मेरा भाणा सह के शुकर मनावेंगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे रंग वखावेंगी।

माणस वेख मेरे नैण शरमौणगे। कमलीए झल्लीए माणस नहीं उह मेरे भगत, जो सोहँ ढोला गौणगे। हुण तेरा नहीं वक्त, आपणी रीत चलौणगे। मैं सभ दी खिची शक्त, शक़ विच्च सारे नीर वहौणगे। इक्क दुआरे दिती बरकत, बरख़िलाफ़ सारे रौला पौणगे। मेरी नज़र ना आई किसे हरकत, हरज़ आपणा सभ करौणगे। जिस बणाई ख़लकत, तिस ख़ालक कोलों मुख शरमौणगे। मैं वेखां सभ दी ख़सलत, मैथों भेव की छुपौणगे। बिन हरि प्रेम ना कोई ऐशो इशर्त, आशक माशूक दोनों नीर वहौणगे। बिन साहिब सतिगुर कोई ना मेटे हसरत, हसत बिन साहिब ना कोई मिटौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिन भगतां भगवन संग ना कोई रखौणगे।

श्री भगवान की एह तेरा संग, जिन्हां देवें माण वडयाईआ। मैं वेख्या एन्हां घर भुक्ख नंग, भुखयां देण दुहाईआ। श्री भगवान कहे एह साचे चन्द, मेरा नूर किरन रुशनाईआ। सदा हस्सण बत्ती दन्द, नेड़े दुःख ना कोई रखाईआ। प्रेम प्यार इक्क अनन्द, रस इक्को इक्क जणाईआ। जिन्हां वेंहदिआं श्री भगवान पै जाए ठंड, ठांडा दरबार इक्क दरसाईआ। तेरे नाल पिच्छे गई हंड, अग्गे भगतां मेल मिलाईआ। बेशक खोल्ह लै आपणी गंढ, लछमी तेरी लोड़ रही ना राईआ। ना सुहागण ना रंड, अद्धविचकार रखाईआ । जे भगतां नाल मिल के गावें सोहँ छन्द, फेर मिले वडयाईआ। आ वेख की कहन्दा गुजरी दा चन्द, सच संदेश सुणाईआ। मैं मंगी इक्को मंग, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। नित नवित्त दा दरवाजा

वेखवां लंघ, आवां जावां वाहो दाहीआ। ना कोई पर्दा ना कोई कंध, उहला कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ।

प्रभ मैं भगत दुआरे आवांगी। लाल भूशन इक्क सुहावांगी। तन भबूती ख़ाक रमावांगी। तेरा ढोला साचा गावांगी। लक्ख लक्ख शुकर मनावांगी। चरन कँवल सीस टिकावांगी। नेत्र नैण शर्म मिटावांगी। जन भगतां वेख आपणा शंका दूर करावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सोभा पावांगी।

की तेरे भगत मेरा सगन मन्नौणगे। दवारे आपणे विच्च बहौणगे। बैठी फेर ना बाहर कढौणगे। आपणी रीती सच सखौणगे। मैनूं आपणी सेव लगौणगे। गीत तेरे सोहले गौणगे। विचोले कौण कौण रखौणगे। जो अंदर बाहर भौणगे। ना जागणगे ना सौणगे। पिछली कीती ढौणगे। अगली बणत बणौणगे। मैनूं तेरे नाल मिलौणगे। मिल आपणी खुशी वखौणगे। सिरोपा की चढ़ौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेस इक्को इक्क अलौणगे।

दस चेत दा पिछला सरोपा, वीह सौ तेरां बिक्रमी याद कराईआ। साधां सन्तां राज राजानां वखाया नरेल गिरी दा खोपा, खोपरी विच्च नज़र किसे ना आईआ। आपणा दस्सया ना किसे मौका, मोतबर बणन कोई ना पाईआ। सभ नाल करया धोखा, धुखदा धूआं अग्ग ना किसे सुलगाईआ। वेख लछमी पहली चेत आया मौका, सत्त चेत धार दिती बणाईआ। दस चेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, तेरा सगन दए वखाईआ।

तेरा सगन भगतां नाल पावांगा। सत्त साल दा रखाया नरेल, खुशीआं नाल खलावांगा। पंज पंज पैसे तेरी झोली करन ढेर, तेरे सुभर सालू गंढ पवावांगा। वक्त हत्थ नहीं औणा फेर, फ़ैसला इक्को वार करावांगा। ना कोई ज़बर रहे ना ज़ेर, ज़ाबर इक्को इक्क दरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन रूप रंग खेल महान, लछमी नज़र ना आए किसे रकान, शब्दी शब्द कर प्रधान, निहकर्मी कर्म कमावांगा। (६ चेत २०२० बि)

लछमी वेखे नैण उठा, नेत्र नैण खुल्ल्हाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों वेला गिआ आ, थित वार ना कोई जणाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर वेंहदे गए राह, निज नेत्र ध्यान गए लगाईआ। जिस शिव ब्रह्मा विष्न सेवा लए लगा, साची सेवा मोहे समझाईआ। सच दुआरे कुददी रही नाल चाअ, घर आपणे खुशी मनाईआ। सच भूशन इक्क रंगा, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। जोबन जवानी इक्क हंढा, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। साची सेजा इक्क सुहा, सुहञ्जणी मात सोभा पाईआ। पीआ प्रीतम इक्क मना, आसा तृष्ना ना कोई उठाईआ। नित नित दर्शन पा, सांतक सति समाईआ। अंगीकार कर बेपरवाह, अञ्जण अञ्जण इक्क वडयाईआ। करे खेल सच्चा शहनशाहीआ। बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तम वेस वटा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जुग चौकड़ी लहणा देणा देवे मिटा, लेखा कोई रहण ना पाईआ। भाणा सहणा दए समझा, सहज सहज सुखदाईआ।

गोबिन्द इशारे नाल दित्ता समझा, शब्द नाद शनवाईआ। बाले नीहां हेठ दबा, धरत धवल दए वडयाईआ। अन्त संदेसा जगत सुणा, सच सच समझाईआ। अन्तम आवे बेपरवाह, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। निहकलंका नाउँ रखा, डंका शब्द वजाईआ। पिछला लेखा देवे मिटा, अग्गे मार्ग इक्क रखाईआ। बीस बीसा होए रुशना, इक्क दो तिन्न चार पंज रंग वखाईआ। छेवें छहबर इक्को ला, अमृत मेघ बरसाईआ। सतवें सति सतिवादी खेल रचा, दस चेत दए वडयाईआ। सति धर्म दी नींह रखा, शब्दी राग सुणाईआ। लिखवत भविख्त आप करा, कलम शाही गंढ पवाईआ। वेला वक्त इक्क सुहा, देवे माण वडयाईआ। धुर दी रीती दए जणा, साची सिख्या सिख समझाईआ। अनडिठड़ा बाला भेट चढ़ा, मात गरभ होए सहाईआ। रकशा करे वड मेहरबान, मेहर नज़र उठाईआ। गुरसिख कुखे जो जन लेटे आ, तिस पिछला लेखा रहे ना राईआ। अन्तर अन्तर लहणा दए चुका, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अगला भेव अभेव जणा, भेव इक्क समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगा, सच सच जणाईआ। लछमी हुलारा दए लगा, तार सतार हिलाईआ। उठ नेत्र लै खुल्ह, ख़ालक रिहा जणाईआ। जिस रचना दिती रचा, अन्त वेखे चाईं चाईंआ। जिस बसतर दित्ता पहना, लाल गुलाला रंग रंगाईआ। जिस मन्दर दित्ता सुहा, छप्पर छन्न सुहाईआ। जिस सगन दित्ता मना, मेहर नज़र उठाईआ। जिस गोदी लिआ बहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ।

साचा खेल दस चेत, बीस बीसा आप वडिआइंदा। जिस दा लेखा नेतन नेत, आपणी कार कमाइंदा। सो साहिब भगतां करे हेत, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। बाल्यां कोलों दस्से भेद, मात गरभ खोज खोजाइंदा। वेखणहारा सदा हमेश, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। कलिजुग अन्तम खेले खेल, बण खलारी फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार कराइंदा। लछमी सुण शब्द संदेसा, अन्तर ध्यान लगाईआ। ख़ाली दिसे बाशक सेजा, शेश ना कोई वडयाईआ। सच संदेसा कवण दुआरे भेजा, नेत्र नैण उठाईआ। ख़ाली वेखे विष्नूं सेजा, कँवल नैण नज़र ना आईआ। कोई ना खोल्ह अगम्मी भेदा, भरम ना कोई तुड़ाईआ। नेत्र रोवण चारे वेदा, शास्त्र सिमरत रहे कुरलाईआ। गीता ज्ञान ना जाणे लेखा, अञ्जील कुरान ना पर्दा लाहीआ। खाणी बाणी कहे रब्ब अछल अछेदा, वल छल आपणी कार कमाईआ। सच संदेसा प्रभ एका भेजा, लिखण पढ़न विच्च ना आईआ। कवण दुआरे प्यार करे बैठा दलीजा, दिलबर सहजे सच्चा माहीआ। किस नाल करे साची रीझा, सच प्यार जणाईआ। कवण प्रेम जिस विच्च पतीजा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। मैं नेत्र वेखां ला ला नीझा, नज़र किते ना आईआ। भेव ना पाए चाचा भतीजा, बाबे गुर जगत सिख भतीजे नज़र किसे ना आईआ। किरपा करे मोहे नज़री आवे जीजा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाईआ। लछमी कहे दस चेत गिआ आ, नव नौं चार रहण ना पाया। मैं बैठी चेता भुला, पिछला लेख भुलाया। अन्त संदेसा गिआ आ, धुर फ़रमाणा आप जणाया। श्री भगवान सच दुआरे डेरा ला, भगत दुआर इक्क सुहाया। जुग जन्म दे विछड़े मेल मिला, दुखड़े दर्द मिटाया। शरअ शरीअत इक्क समझा, चार वरन उठाया। आत्म परमात्म मेल मिला, ब्रह्म पारब्रह्म दृढ़ाया। साची रीती इक्क चला, सतिजुग दर खुल्हाया। दर दरवाजा इक्क बणा, दरबार

दूजा ना कोई रखवाया। दरवेश बणे बेपरवाह, रहे हमेश, ना मरे ना जाया। सच संदेस दित्ता सुणा, हुक्मी हुक्म सुणाया। आ वेख निक्के बाल्यां चढ़या चाअ, जेहड़े नीहां हेठां दित्ते दबाया। पुरख अबिनाशी चढ़या चाअ, सचखण्ड दुआरिउँ लोकमात आया। गल विच्च पल्लू एका पा, दोए जोड़ अरदास कराया। भगत दुआर सोहे थां, थान थनंतर इक्क रुशनाया। मनजीत जगदीश कहे जिंनां चिर ना आवे लछमी मां, साडा सगन ना कोई मनाया। अनडिठड़ा बाला कहे करदे हां, प्रभ तेरा की घट जाया। विष्नूं लछमी फड़ा दे बांह, हत्थ उंगली नाल मिलाया। दोहां दस्स आपणा नां, सोहँ रूप सुहाया। अगला भेव दे खुल्ला, पर्दा जगत उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया।

लछमी सुणी धुर अवाज, करवट बदल लए अंगढ़ाईआ। कवण साजण लिआ साज, सति निशान झुलाईआ। कवण शाहो भूप वड्ड राजन राज, शहनशाह अखवाईआ। कवण सीस रक्ख ताज, ग़रीब निमाणयां दए वडयाईआ। कवण बणाए धर्म समाज, भगवान भगतन रूप जणाईआ । कवण रचे साचा काज, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ।

लोकमात भगतां चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक्क रखवाईआ। नेत्र नैण रहे उठा, जगत ध्यान लगाईआ। कवण दुआरे किस मार्ग आए ला, लछमी मां आपणा रूप वटाईआ। विष्नूं किस बिध पकड़े बांह, देवे माण वडयाईआ। जन भगत सगन लैण मना, मन आपणे खुशी रखवाईआ। पंज पैसे सरवारना कर के झोली देण पा, भुखी नंगी देण रजाईआ। सानूं तेरी नहीं परवाह, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। अतुट अतुट अतोट खज़ाना दए वरता, तोट रहे ना राईआ। सच सुण बिन पुतरां सोहे ना मां, बिन बालां ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

लछमी कहे मैं दस चेत रुत्त सुहावांगी। श्री भगवान इक्क मनावांगी। लाल बसतर वेख खुशी प्रगटावांगी। आपणी रुची ध्यान लगावांगी। सच्ची सुची हो के पावांगी। पिछली गल्ल मुक्की, अग्गे जा के वासता पावांगी। दरस दीदार दी बण भुक्खी, निउँ निउँ सीस झुकावांगी । मेरी कुक्ख नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रही सुक्की, बिन भगतां गोद ना किसे बहावांगी। जुग चौकड़ी रही लुकी, कलिजुग अन्तम मुख दखावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दे दे सच्चा वर, घर खुशीआं नाल जावांगी। भगत दुआर जाण दी करे त्यारी, आपणा आप वेख वखाईआ। अन्तर अन्तर इक्क विचारी, विचार विचार विच्चों प्रगटाईआ। ना व्याही ना कुआरी, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। सेवा कर के विष्नूं हारी, चरन कँवल श्री भगवान ध्यान लगाईआ। मेरी कुक्खों फुट्टी ना कोई फलवाड़ी, पुत्त पोतरा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे इक्क वर, मोहे आपणे दर लए बहाईआ।

लछमी तैनूं दर बुलावांगा। नाम संदेस घलावांगा। नर नरेश अखववावांगा। पिछला लेख मिटावांगा। अगला भेख जणावांगा। तेरे भूशन पहन लाल रंग, जन भगतां रंग चढ़ांवांगा। ढाई गज़ दा इक्क दुपट्टा, तिन्न गुणां दा वट्टा सट्टा, अन्तम आवे साचे हत्था, साढ़े सत्त फुट्टां विच्च वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लछमी तैनूं लए बुलाईआ।

लछमी आपणा वेख शिंगार, श्री भगवान रिहा जणाईआ। पिछले गहिणे बसतर दे उतार, श्री भगवान रिहा जणाईआ। दवानी टिक्का मस्तक बिन्दी नक्क नथ गल दिसे ना कोई हार, कन्नीं झुंबके ना कोई लटकाईआ। हत्थ कंगण ना कोई झंनकार, पैरीं पाज़ेबां ना कोई पाईआ। सीस मैहन्दी ना कोई विहार, मैहन्दी रंगली ना रंग रंगाईआ। नेत्र सुरमा ना कजल धार, दन्द दन्दासा ना कोई वखाईआ। कूड़ी क्रिया ना कोई जोबन बहार, पत डाली कली ना कोई महकाईआ। कमरकसा ना कोई आधार, हत्थ रुमाल ना कोई सुहाईआ। बण निमाणी औणा चरन दुआर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दर दरवाजिउँ खड़ बाहर, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। तेरे कोलों पैहले कराए विहार, तेरा माण गवाईआ। धूड़ मस्तक लौणी छार, पंज जैकार राग अलाईआ। मंग मंगणी बण भिखार, दोए जोड़ वासता पाईआ। किस बिध आवे तेरे दरबार, शाह पातशाह सच्चे पातशाहीआ। तन दिसे ना कोई शिंगार, खुल्ली मींढी नज़री आईआ। श्री भगवान शब्द अगम्मी मारे आवाज़, एका वार देवे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे सुनेहुड़ा इक्क सुणाईआ।

लछमी वेख आपणा गैहणा, सोहणा हार बणाया। खोल्ह आपणे नैणां, नैण नैण ध्यान लगाया। जे मन मन्ने मेरे भगतां कहणा, गल तेरे दए लटकाया। कुफ़ल अजे बन्द कराया। निक्के हो के चरनी ढहणा, माण कम्म किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात साचा गैहणा, तेरे कारन बणाया।

लछमी वेख गई डर, नेत्र नैण शरमाईआ। प्रभ एह की लिआ कर, अग्गा पिछा नज़र कोई ना आईआ। मैं वेख के गई सड़, मेरी रीझ ना पूरी कराईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां अंदर गिआ वड़, मेरा वस ना चले राईआ। एस नाल सारे लवां फड़, कुण्डी किसे गुर पीर अवतार ना खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गैहणा इक्को इक्क वखाईआ।

एह गैहणा जो लवे पा, पारब्रह्म जणाइंदा। दूजा कोई ना देवे फाह, फासी अवर ना कोई लटकाइंदा। इस दा बधा कोई ना सके छुडा, ज़ोर नाल ना कोई तुड़ाइंदा। हरि का गैहणा शब्द रूप प्रगटा, संगल आपणे गल लटकाइंदा। प्रेम प्यार नाता जुड़ा, घुंडी घुंडी विच्च जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे गल दी सोहणी ज़ंजीरी, वेले वक्त दए अख़ीरी, मैंने रहण ना देणी मीरी पीरी, फ़कीरी आपणे घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे तन शिंगार कराइंदा।

एह ज़ंजीरी बड़ी मज़बूत, मुशकल हल्ल कराईआ। प्रभ साचे दा सच सबूत, भेव अभेद खुल्हाईआ। जिस गल्ल पाइआं मिले महिबूब, मुहब्बत इक्क दरसाईआ। इस दा लेखा जाणो खूब, खुदी माण मिटाईआ। शाहां दा असल नाल सूद, एसे कर के ज़ंजीरी थोड़ी मोटी जिही घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन तेरे दए छुहाईआ। एह ज़ंजीरी भगत प्रेम, प्रेमका दए समझाईआ। एस दे अग्गे कोई रहे ना नेम, सुहणप कम्म किसे ना आईआ। इस दा बधा बैठा गोबिन्द हेम, कुण्ट आपणा आसण लाईआ। उठ वेख आपणे नैण, क्यों बैठी नैण शरमाईआ। बिन भगतां तेरा कोई ना रिहा साक सैण, सज्जण नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच रिहा जणाईआ।

लछमी आई अगम्मी डोले, कहार नज़र कोई ना आया। आपणी अक्ख कदे मीटे कदे खोल्हे, नेत्र नैण शरमाया। श्री भगवान भगत दुआरे बोले, बोल आपणा आप बदलाया। मैं लभ्भां सरगुण चोले, निरगुण हो के डेरा लाया। गोबिन्द कहे मैं रक्खया आपणे ओहले, तेरे कोलों आपणा प्रीतम छुपाया। जिंनां चिर आपणी कुण्डी ना खोल्हे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव छुपाया।

गोबिन्द कहे खोल्ह के दस्स, आपणा हाल जणाईआ। क्यों एथे आई नस्स, बण वैरागण फेरा पाईआ। तैथों रक्खया ना गिआ हठ, धीरज धीर बंधाईआ। हुण तां खैहड़ा दे छड्ड, आपणा मुख भुआईआ। मैं मंग के मंग तेरे नालों कीता अड्ड, श्री भगवान आपणे नाल मिलाईआ। प्रेम प्रीती अंदर गिआ बझ, आप आपणा माण गवाईआ। तेरा दुआरा बैठा तज, जन भगतां दुआरा रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वरताईआ।

गोबिन्द ना दे लारा, बण निमाणी रही जणाईआ। मैं तक्क के आई सहारा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मोहे मिले मेरा प्यारा, प्रीतम सच्चा बेपरवाहीआ। मेरीआं उहदे नाल बहारां, खुशी ग़मी ना कोई रखवाईआ। मैं लाह के आई हार शिंगारा, खुल्ह़ड़े केस रही वखवाईआ। मैं वेखां भगत दुआरा, अंदर आवां चाईं चाईंआ। दूर दुराडे करां निमस्कारा, आपणे मन्दर सीस झुकाईआ। चरनीं डिगाँ मूंह दे भारा, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। वासता पावां एका वारा, ओअंकार तेरी सरनाईआ। तेरे भगतां करां प्यारा, आपणा प्यार वधाईआ। तेरा हार सोहणा शिंगारा, गुरमुखां देवां वखवाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दोवें धारां, दोवें सिरयां गंढ वखवाईआ। मैं सेवा करां सेवादारा, सेवा इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, लछमी आपणे चरन रखवाईआ।

लछमी लै आपणा सगन, तेरी झोली पाया। भगतां विच्च हो मग्न, आपणा माण मिटाया। गुरसिख कोई ना रहे नगन, भुखयां भुक्ख गवाया। आ फड़ आपणा हार कंगण, तेरे तन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाया। आ लै आपणी अगली नलेर, साचा सगन मनाईआ। मैं तैनूं दुआरे लिआंदा घेर, सो घुरना लै कढ्ढाईआ। प्रभ बण आप शेर, बलधारी हो के वेख वखवाईआ। भगतां पिच्छे तेरे उत्ते करी मेहर, लोकमात आपणे चरन लगाईआ। हरि संगत विच्च बह बह खेड, आपणी खुशी वखवाईआ। सेवा करीं सिर चुक्क के गारा रेत, भज्जी वाहो दाहीआ। राती सुत्तयां सभ कुछ लैणा वेख, दस चेत प्रभ दए वखवाईआ। निक्के बाले खोल्हण भेत, अगला भेव जणाईआ। जगत कहे जम्मया पंचम जेठ, भगवान कहे छब्बी पोह होई कुड़माईआ। अन्तम रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा सगन आप मनाईआ।

मेरा सगन वेखण सन्त, सन्तां घर वधाईआ। जिउँ मैनूं मिल्या विछड़िआ कन्त, तिउँ भगतां होए सहाईआ। कुण्डा खोल्हे आप बेअन्त, पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए चुकाईआ।

साचे सन्त कर पहचान, भगतन दए वडयाईआ। वीह सौ तेरां बिक्रमी दस चेत कलिजुग

सन्तां लेखा चुक्किआ जहान, दो जहानां पन्ध ना कोई मुकाइंदा। पंज पैसे कर परवान, इक्क नलेर वंड वंडाइंदा। बिन हरि संगत ना होया कोई परवान, परवाना हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। लेखा लिखत लेख महान, घर अजीत सिँघ कराइंदा। नलेर रक्खणी आप संभाल, हुक्म संदेस जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता कीमत पाइंदा।

नलेर कहे वस्तू त्रै, साचा थाल परोसया। बाहरों मैनूं कोई कुछ कहे, अंदर मेरा खेल ख़ामोशया। जल धारा मेरे विच्च वहे, समुंद सागर करन आदेसया। प्रभ मिलण दी इक्को मैनूं लै, दूजा खिआल ना कोई सोच्या। राह तक्कां कवण वेला सच सिँघासण बहे, लेखा जाणे लोक परलोकया। निमाणा हो के चरनीं जावां ढह, गावां एका नाम सलोकया। जिस वेले पुछे सच देवां कह, तेरा भाणा किसे ना रोकया। मैनूं तेरे मिलण दी लै, प्रेम प्यार अंदर होया मदहोशया। जो तेरी सरन चरन बहे, मैं ओनूं दा बणां खाणा तोसया। मेरी कदे ना निकले हाए, लीर लीर लीर होए लोथया । जो तेरे चरनां जावे छह, तिस मिले इक्को कोटया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरा संग ना होए नाल होछयां।

तेरा संग हरि संगत प्यार, साहिब सतिगुर बंधाईआ। पंज पैसे तेरे उतों वार, लछमी झोली पाईआ। लछमी लंघ के आई सच्चे दरबार, मस्तक रगढ़े वाहो दाहीआ। मैं ख़ाली भरां भंडार, प्रभ दर इक्को मंग मंगाईआ। नलेर हरि संगत देणा खवाल, सिँघ शेर तेरी वडयाईआ। रातीं सुत्यां वेखां तेरा हाल, हाल देवां आपणा जणाईआ। मेरा पूरा होया सवाल, दुःख रिहा ना राईआ । जिध्धर वेखां शाह हुंदे दिसण कंगाल, कंगलिआं आपणा नाम वरताईआ। मैनूं भुल्ल गिआ आपणा ताल, हार शिंगार ना कोई वडयाईआ। बिन भगतां प्रभ साचा करे ना किसे नाल प्यार, जुग जुग लारयां नाल लंघाईआ। मैं नेत्र सुरमा पा पा गई हार, मेरी अक्ख कम्म किसे ना आईआ। इट्टां गारा ढौंदिआं करे प्यार, अंदर वड़ वड़ ख़ुशी मनाईआ। मैं चल वेखण आई विहार, विवहारी की की विवहार चलाईआ। हरि संगत अक्खर बोले सोहँ महाराज शेर सिँघ जैकार, दूजा डर ना किसे रखवाईआ। जिनूं मिल्या पुरख अकाल, तिनूं अकल वड्डी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे दया कमाईआ।

एथे सेव कमावांगी। अंदर बाहर साफ़ करावांगी। बण अनाथ भुल्ल बख्शावांगी। जन भगतां निभ जाए साथ, इक्को मंग मंगावांगी । मैं सुण के धुर दी गाथ, गा गा ढोला आपणा आप पर्चावांगी। दस चेत दी साची रात, भागाँ भरी भिन्नड़ी रैण सुहावांगी। सच दुआरिउँ मिले दात, आपणी झोली पावांगी। दरस कर कमलापात, कँवल नैण रीझावांगी। हौली हौली कर कर बात, बातन दुःख सुणावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देवे इक्क वर, भगत दुआरे आपणा पीआ मनावांगी। (१० चेत २०२० बि)

लछमी कहे मेरा चुक्किआ झेड़ा, झगढ़ा रिहा ना राईआ। मेहरवान मेरा बध्धा बेड़ा, मेहर नज़र उठाईआ। धर्म दुआर रखाया खेड़ा, गृह मन्दर कर रुशनाईआ। जन भगतां वखाया खुल्ला वेहड़ा, दिवस रैण वज्जे वधाईआ। ओथे नाता जुड़या मेरा तेरा, सोहँ ढोला गाईआ।

नज़री आया प्रभ नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। करे कराए हक़ नबेड़ा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। निरगुण हो पाया फेरा, निर्मल नूर जोत रुशनाईआ। साचे दर लगाया डेरा, सिँघासण आसण इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लिआ लगाईआ।

मेरा लेखा गिआ लग्ग, सो पुरख निरञ्जण आप लगाया। मेरा छुट्टा विछोड़ा रहणा अड्ड, घर मन्दर इक्क सुहाया। भगत दुआरे लिआ सद्द, दर दरवाजा इक्क जणाया। पन्ध मुकाया भज्ज भज्ज, इक्क ध्यान लगाया। दर्शन वेखां रज्ज रज्ज, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहिआ। सच सिँघासण बैठा सज, तख़त निवासी डेरा लाया। प्रेम प्रीती नाल जावां बझ, बंधन इक्को इक्क रखवाया। साचे हुजरे करां हज्ज, महबूब इक्को नज़री आया। सति सरूप हो के रिहा गज्ज, शब्द आपणी भबक लगाया। मेरा पर्दा लिआ कज, सिर आपणा हत्थ टिकाया। मैं लँघण आई हद्द, जगत दुआरा पार कराया। जिस मन्दर हरि भगत बहण सज, सो मन्दर सोभा पाया। मैं ख़ाली झोली लई अड्ड, दोए जोड़ वासता पाया । पतिपरमेश्वर क्यों पिच्छे आइउँ छड्ड, आपणा संग तजाया। मैनूं बिरहों लग्गी अग्ग, तीर निराला घाउ लगाया। विछोड़े अंदर गई मघ, सांतक सति ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हत्थ रखवाया।

तेरी करनी वड मेहरवान, सदा सदा मोहे भाईआ। बाली बुद्ध मैं अणजाण, बुद्धि सार कोई ना आईआ। शाह पातशाह सच्चे सुल्तान, शहनशाह तेरी वडयाईआ। मैं जाता मेरा जोबन महान, नूर ज़हूर रुशनाईआ। बेपरवाह होइउँ बेपहचान, मेरी सार कोई ना पाईआ। कलिजुग अन्त जन भगतां उत्ते होइउँ मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। आपणी किरपा दित्ता दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। भगत दुआरे हो प्रधान, सच प्रधानगी रिहा कमाईआ। मेरे नैण होए हैरान, हरि जू की की खेल रचाईआ। मेरे बसत्र भूशन लाल, बैठे रंग बदलाईआ। कर किरपा करीं परवान, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। चरन कँवल बख्श ध्यान, मिले सरन सरनाईआ। मेरा तुटा माण, नैण अक्ख शरमाईआ। तूं साहिब श्री भगवान, बेअन्त तेरी वडयाईआ। तेरे भगतां कर परवान, प्रेम प्रीती निभाईआ। रल के गावां सच्चा गान, सोहँ ढोला लाईआ। मेरा तेरा इक्क निशान, निशाना इक्को नज़री आईआ। मैं बाली बुद्ध अज्ञाण, तूं बख्शणहार अखवाईआ। दर आई कर परवान, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, मेहर नज़र उठाईआ।

मेहरवान देवे दात, दानी दया कमाइंदा। भगतां मिलणा सच जमात, मार्ग इक्को इक्क जणाइंदा। सुलक्खणी मिलणा जमात, कुलक्खणी रूप ना कोई वखाइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। दर्शन कर साख्यात, साहिब सतिगुर नज़री आइंदा। अठ्ठे पहर रक्खे प्रभात, दिवस रैण ना वंड वंडाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी शाख़, शौहर इक्को इक्क अखवाइंदा। लेखा लिखया रहे ना कलम दवात, सभ दे लेखे लेखे पाइंदा। आदि अन्त पुच्छे वात, नित नवित्त वेख वखाइंदा। जिस दी दो जहान गौंदा गाथ, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। सो साहिब जन भगतां वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। तूं मैं मिलणा इक्को घाट, सच दुआरा वेख हाट, जन भगतां रंग चढ़ाइंदा । ना कोई ज़ात ना कोई पात, दीन मज़हब ना वंड वंडाइंदा। देवणहारा अगम्मी दात, वस्त अमोलक आप

वरताइंदा। अगली पिछली जाणे गाथ, अभुल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

लछमी वेख भगत दुआर, अल्ला राणी लए अंगढ़ाईआ। हौका भरे मुहम्मद यार, यार यारी वखाईआ। ईसा खोल्ह नैण कवाड़, लेख अलेख लए उलटाईआ। मूसा वेख सच दीदार, ईद दीद चन्द रुशनाईआ। रसना कहे बिन रसना परवरदिगार, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, बेअन्त भेव ना राईआ। जिव लछमी दिती तार, तिव अनाथां होए सहाईआ। चौदां सदीआं गईआं हार, चौदस चन्द शरमाईआ। चौदां तबक हाहाकार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। अल्ला राणी नार मुटिआर, निरगुण हो ना किसे परनाईआ। लभ्भदी फिरे आपणा घर बार, दरवाजा नज़र कोई ना आईआ। सुण संदेसा होई ख़बरदार, आलस निंदरा लाहीआ। लोकमात प्रगट होया परवरदिगार, नूरो नूर नूर इल्लाहीआ। आदि जुगादी सांझा यार, सगला संग रखाईआ। डुबदे पाथर लए तार, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। एथे ओथे बणे मददगार, सदा सुहेला आप अखवाईआ। दर दरवेशा सुणे पुकार, आपणा ध्यान लगाईआ। नर नरेशा हो उजिआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देणा सच्चा वर, तेरी आस इक्क तकाईआ।

अल्ला राणी खोल्ह अक्ख, आपणा ध्यान लगाईआ। जिध्धर वेखे चारों कन्नीआं सख, वस्त हत्थ ना कोई रखाईआ। नेत्र नीर वरोले अथ, हन्झआं धार वहाईआ। पीर पैगम्बरां हो गई बस, बस्ता सारे रहे बंधाईआ। कलमा पढ़ के गौंदे रहे गथ, कायनात शनवाईआ। बण बरदे चरनी रहे ढठ्ठ, परवरदिगार सीस झुकाईआ। हुक्मे अंदर रहे नट्ठ, नित नित सेव कमाईआ। अक्खरी नाम जगत रट, रट्टा दीन मज़हब पाईआ। शरअ शरीअत खोल्ही हट्ट, हटवाणे जगत अखवाईआ। हरि का खेल बाज़ीगर नट, सवांगी आपणा सवांग रचाईआ। मैं सुणया साहिब दा सच्चा जस, अन्तर इक्क ध्यान लगाईआ। प्रेम अव्वलड़ा देवे रस, निरगुण धार वहाईआ। प्रेम प्यार करे हस्स, नाम गलवकड़ी एका पाईआ। मैं जा के चरनां जावां ढठ्ठ, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। मैं पिछला चुक्कया हठ, सदका नज़र कोई ना आईआ। दोए दिखावां ख़ाली हत्थ, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। किरपा कर पुरख समरथ, हत्थ तेरे वडयाईआ । मेरी सुक्की सच्ची रत्त, रत्ती रत्त नज़र ना आईआ। पीर पैगम्बर दस्तगीर दिउ इक्को मत, मता इक्को इक्क पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणे हत्थ रखाईआ।

पीर पैगम्बर देवण मत, आपणा मता पकाया। परवरदिगार हकीकत वेखे हक़, लाशरीक भेव चुकाया। जलवा नूर लए तक्क, तारीक अन्धेर मिटाया। साडे उत्ते पै गिआ शक़, हुण सके ना कोई चुकाया। जा के आपणा हाल दस्स, दर्दी दर्द वंडाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाया।

पीर पैगम्बरो मैं जावांगी। कलमा नबी इक्को वजावांगी। कर सजदा सीस झुकावांगी। बण बरदा सेव कमावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच्चा वर, दर जा के अलक्ख जगावांगी।

दरगाह साची जाऊंगी। नेत्र नैणां नीर वहाऊंगी। चौदां सदीआं दा हाल सुणाऊंगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देवे इक्क वर, घर बह बह शुकर मनाऊंगी।

मैं साचा शुकर मनावांगी। जिस वेले दर्शन पावांगी। अगनी तपश बुझावांगी। आबे हयात पी, तृष्ना भुक्ख मिटावांगी। सच्चे साहिब नूं कह के जी, जीवण मुकत करावांगी। प्रेम प्याला इक्को पी, सबर सबूरी इक्को झोली पावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, घर साचे बह के ढोला गावांगी।

परवरदिगार खेल कराइंदा। धुर दी धार आप चलाइंदा। कलमा नबी आप सुणाइंदा। रसूल इक्को इक्क वडिआइंदा। असूल इक्को इक्क बणाइंदा। कातल मकतूल खेल कराइंदा। ज़ाहरा ज़हूर खेल खलाइंदा। अल्ला राणी हुक्म मनाइंदा। सुघड़ सवाणी आप उठाइंदा। धुर दी बाणी राग अलाइंदा। अमृत रस पाणी जाम प्याइंदा। अगम्म अथाह हाणी, इक्को नज़री आइंदा। शहनशाह हरि शाह पातशाह अखवाइंदा। रहबर बण खुदा, खुदी सभ दी मेट मिटाइंदा। सदा सुहेला कदे ना होवे जुदा, दूजी वंड ना कोई वंडाइंदा। जो चरन कँवल होए फ़िदा, फ़ैसला हक़ हक़ सुणाइंदा। आपणा मार्ग दस्से सिधा, भगत दवारा इक्क सुहाइंदा। प्रभ मिलण दी साची बिधा, पारब्रह्म आप जणाइंदा। आपणा लै लउ आ के हिस्सा, वंड सभ दी झोली पाइंदा। अञ्जील कुरान जिस दा गाया चिठ्ठा, सो धुर संदेस अलाइंदा। करवट बदल बदले पिट्ठा, अंगढ़ाई आपणी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस इक्क जणाइंदा।

सच संदेसा श्री भगवान, भगवन आप जणाईआ। दर औणा होए परवान, जो दर दरवाजे सीस झुकाईआ। लेखा पढ़े महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सजदा सीस झुक करे सलाम, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। दरवेश बरदा बणे गुलाम, गुरबत रहे ना राईआ। नेत्र नैण करे ध्यान, अक्ख पलक ना कोई वडयाईआ। नज़री आए श्री भगवान, बेनज़ीर सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप सुणाईआ।

धुर संदेसा सुण एक, एका इक्क समझाईआ। अल्ला राणी रही वेख, नेत्र नैण उठाईआ। परवरदिगार धरया कवण भेख, अव्वलड़ा रूप वटाईआ। किसे हत्थ ना आया मुलां शेख़, मुसाइक देण दुहाईआ। मुरीद मुशर्द करे साचा हेत, आप आपणा रंग रंगाईआ। काया मन्दर अंदर रिहा खेड, साढ़े तिन्न हत्थ दए वडयाईआ। शब्द संदेसा इक्को भेज, आलस निंदरा दए मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ।

अल्ला राणी कहे मैं दर दरवाजा लंघांगी। वस्त अमोलक इक्क मंगाँगी। दर जा के मूल ना संगाँगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच्चा वर, कर दरस साचे रज्जांगी।

दर इक्को मंग मंगाँवांगी। पिछली आदत सर्ब बदलावांगी। इक्को ढोला गावांगी। सही सलामत वेख शुकर मनावांगी। आपणा आप कर अमानत, सभ कुछ भेट चढ़ावांगी। जे होए बेपहचानत, नेत्र रो रो वासता पावागी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देवे इक्क वर, दर मंगण सच्चा जावांगी।

मुहम्मद उठ दे सलाह, क्यों बैठा नैण शरमाया। ईसा उठ वेख राह, रहबर इक्क खुदाया। मूसा वेख बेपरवाह, मुफ़लसां पार कराया। मुरीदां भार रिहा उठा, मुशर्द सेव कमाया। रहमत

कर आप खुदा, मेहर नज़र करीम टिकाया। उलफ़त देवे दो जहां, हरिजन लेखे लाया। ग़फ़लत सभ दी देवे गवा, गहर गम्भीर खुदाया। उजरत कोई ना लए लगा, मुफ़त आपणा नाम लुटाया। जिस दे कलमे आए गा, रसना जिह्वा मेल मिलाया। सो लेखा जाणे दो जहां, निरगुण सरगुण फेरा पाया । हरिजन साचे रिहा समझा, समझ रमज़ मिलाया। जिस नूं कहन्दे रहे नूरी खुदा, अर्श कुर्श समाया। कलिजुग अन्त होया आप बेवफ़ा, वफ़ादारी सभ दी दए भुलाया। नाले मुलज़म नाले बणो गवाह, सधरां पूर ना कोई कराया। मक्का काअबा दित्ता वड्डिआ, जगत हुजरा हज्ज कराया। शरअ शरीअत विच्च फसा, फ़र्ज़ जुरम इक्क लगाया। वेखो सारे एका राह, उंगलां नाल रिहा जणाया । तुहानूं दस्सदा रिहा खुदा, हिंदूआं राम नज़री आया। जे कोई लभ्भे लभ्भे ना किसे थां, मन्दर मसीतां ख़ाली रिहा वखाया। मैं वेख के आई उह करे सच निआं, तख़त निवासी साचे तख़त सोभा पाया। दोज़ख़ नरक वखाए जिन्नां ख़ादी सूर गाँ, पैगम्बर गुर कोई ना होए सहाया। जे कोई मेले मेल अग्गे हो के पकड़ो बांह, सारे करन नांह, शेर हो के रिहा डराया। चौदां तबक ना लभ्भे थां, चारों कुण्ट चन्द नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणे विच्च छुपाया।

पीर पैगम्बरो पढ़ो तकबीर, तकवा इक्क रखवाईआ। वेखो निरगुण सति तस्वीर, मुसव्वर सके ना कोई बणाईआ। जिस दी रहमत बेनज़ीर, ज़हिमत नेड़ कोई ना आईआ। बणा अहिमक सभ नूं बंधे नाल ज़ंजीर, शरअ नाल कुड़माईआ। आपणे हत्थ रक्खया अख़ीर, अकल आकल ना कोई चतुराईआ। मैं वेख होई दिलगीर, धीरज धीर ना कोई रखवाईआ। जिस घल्ले पैगम्बर पीर, हुक्मी हुक्म मनाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, शहनशाह इक्को इक्क वडयाईआ । ग़रीब निमाणयां कटे भीड़, दुखीआं दुःख वंडाईआ। मैं वेखां इक्को पीर, पीर पीरां सिर अखवाईआ। मेरी बदल देवे तकदीर, मेहर नज़र उठाईआ। लछमी गल पाई जिस ज़ंजीर, गैहणा इक्को इक्क वखाईआ। मेरी लत्तां बांहवां मारे ज़ंजीर, मेरा उज़र ना चले राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे लाईआ। प्रभ लेखा अन्त मुकावेगा। हर घट नज़री आवेगा। जीव जंत सर्ब तरावेगा। गुर अवतारां पार लगावेगा। पीर पैगम्बर नाल मिलावेगा। शरअ ज़ंजीर कट वखावेगा। तदबीर आपणी इक्क जणावेगा। शाह हकीर जोड़ जुड़ावेगा। पिछली लकीर मेट मिटावेगा। साची दे के धीर, दर बहावेगा। भगत जानण आपणे वीर, दूजा साक ना कोई रखावेगा। जिस बख्शे अमृत सीर, ठंडा ठार करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा खेल आप करावेगा।

प्रभ जिस वेले दया कमाएगा। मेहर नज़र उठाएगा। मेरी कीती भुल्ल बख्शाएगा। निरगुण जोत अतीती बेपरतीती परतीत बंधाएगा। जगत मसीत पल्ला छुडाएगा। लाशरीक दरस दिखाएगा। हो नज़दीक नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेले पन्ध मुकाएगा।

कलिजुग अन्तम पन्ध मुक्केगा। हरि का भाणा कदे ना रुकेगा। ग़रीब निमाणयां आपणी गोदी चुकेगा। शाह पातशाह शहनशाह निरगुण हो कदे ना लुकेगा। कलिजुग अन्तम जूठ

झूठ जड़ आपणी हत्थीं पुट्टेगा। शाह सुल्तानां मूधा ठूठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दर घर घर सभ नूं पुछेगा।

की साथों पुच्छण आएंगा। प्रभ कवण हुक्म जणाएंगा। कवण लेखा कढ़ु वखाएंगा। भरम भुलेखा कढ़ु ठीक जणाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आप आपणे रंग रंगाएगा।

मैं उस नूं रंग रंगावांगा। जिस नूं भगतां नाल मिलावांगा। भगत दुआरे सोभा पावांगा। सच सिँघासण इक्क वखावांगा। पुरख अबिनाशण रूप वटावांगा। पृथ्मी अकाशन वेख वखावांगा। मण्डल रासन रास रचावांगा। गोपी काहन बण नचावांगा। महल्ल अट्टल इक्क रुशनावांगा। बिन तेल बाती दीप इक्क जगावांगा। बण साकी जाम प्यावांगा। रूह बुत्त ना पंज तत्त ख़ाकी, साबत सूरत आप वखावांगा। अग्गे रहे ना कोई आकी, अकल सभ दी आप भुलावांगा। लहणा देणा देवां बाकी, पिछला हिसाब चुकावांगा। जे कोई कहे उच्ची जाती, तिस ख़ाकी ख़ाक रलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप वड्डिआवांगा। महारार शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। (११ चेत २०२० बि)

भगतन सदा इक्को मंग, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सच सुहञ्जणी सेज सोहे पलँघ, फूलण बरखा आप लगाईआ। कन्त कन्तूहल दर दरवाजा आए लंघ, घर सज्जण फेरा पाईआ। निज रसीआ देवे निज अनन्द, परमानंद विच्च समाईआ। प्रेम प्यार विच्च वेखे हस्स, सोहँ हँसा राग अलाईआ। अगम्मी भगती देवे दस्स, जगत भगती ना कोई सिखाईआ। सच सुनेहुड़ा आपणा दस्स, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे दोवें वस, इकल्ला कम्म कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी होए इक्ठ, इक्क इक्क लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। (१२ चेत २०२० बि)

गुर नानक कहे मैं होया खुश, गुर गोबिन्द मिली वडयाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल मैनूं लिआ पुच्छ, भेव अभेद जणाईआ। जिनाँ पिच्छे वारया सभ कुछ, माण अभिमान गवाईआ। निरगुण हो जो गए रुस, निरगुण भेव ना राईआ। जिनाँ कोल नहीं कुछ, ख़ाली हत्थ दसाईआ। तिनाँ साहिब वेखे झुक, निझ आपणा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

नानक कहे मेरी आसा पूर, पूरी आस कराईआ। गोबिन्द कहे प्रभ मिल्या ज़रूर, ज़रूरत कोई रहण ना पाईआ। भगत कहे सभ नाता कूड़, बिन हरि संग ना कोई रखवाईआ। कबीर कहे ना जाणो दूर, घट घट रिहा समाईआ। शमस कहे सच्चा नूर, ज़हूर इक्क रुशनाईआ। मुशर्द कहे मुरीद रहे ना कोई मफ़रूर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रचाईआ।

नानक कहे मोहे चढ़या चाअ, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ मिल्या मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। कबीर कहे निथाविआं देवे थां, मेहरवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणी आप धराईआ।

नानक कहे मेरी आसा पुनी, प्रभ पूरी आस कराईआ। गोबिन्द कहे हरि पाया वड गुण गुणी, गहर गम्भीर सच्चा शहनशाहीआ। कबीर कहे भगतां पुकार सुणी, चल आया सच्चा माहीआ। लक्ख चुरासी छाण पुणी, जीव जंत वेख वखाईआ। पीर पैगम्बरां लेखा चुकाया उनी, माण ताण कोई रहण ना पाईआ। सारे कहण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्क इकल्ला बणया खूनी, नाम खण्डा हत्थ चमकाईआ। लहणा देण चुकौंदा जाए जूनी, भेव कोई ना आईआ। जन भगतां रोटी दाल खुआवे अलूणी, प्रेम रस विच्च भराईआ। आत्मा कोई ना रहे ऊणी, जिस आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

नानक कहे मैं दित्ता मौका, उच्ची कूक सुणाया। गोबिन्द कहे मैं दित्ता मौका, इक्को ढय्या वंड वंडाया। कबीर कहे प्रभ मार्ग दस्सया सौखा, साचा राह चलाया। जुग चौकड़ी जो सुत्ता रिहा ला के ढौंका, करवट सके ना कोई बदलाया। जिस दे पिच्छे गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पोच्या चौंका, काया माटी पोच पोचाया। जिस नूं आदि शक्त अल्ला राणी कहे मैं ख़ौंत हंढावां नाल शौंका, ख़ावंद बणे बेपरवाहिआ। मेहरवान हो के मेरे हत्थ नाल छुहाए पौंचा, दस्त बदस्त खेल कराया। नाम नय्या वखाए नौका, समुंद सागर गहर गवर भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहिआ।

नानक कहे मैं खोल्ही अक्ख, नैण इक्क उलटाया। गोबिन्द कहे प्रभ आया प्रतक्ख, पुरख अकाल फेरा पाया। मेरी करनी लई रक्ख, कीता कौल भुल्ल ना जाया। गुरमुख साचे कीते वक्ख, वक्खरा राह चलाया। साची सेवा इक्को दस्स, आपणा संग निभाया। जुग चौकड़ी जो आपणे अंदर रक्खे डक, कलिजुग अन्त माणस जन्म दिवाया। गुर अवतारां किसे ना रहे शक़, शहनशाह पर्दा रिहा उठाया। करे नबेड़ा सदा हक़, हकीकत वेखे थाउँ थाइआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाया।

नानक कहे मेरी होई हद्द, हाज़र हो जणाईआ। गोबिन्द कहे घर लिआ सद्द, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। नाता जोड़या बिन पंज तत्त काया हड्ड, रकत बूंद ना कोई मिलाईआ। गुरसिख सज्जण जो पिच्छे गिआ छड्ड, अन्त ओन्हां मेल मिलाईआ। पार कराई विशकर्मां हद्द, निहकर्मी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

नानक कहे प्रभ वेख्या दाता, अनमंगी वस्त झोली पाइंदा। गोबिन्द कहे सद वसे साथा, विछड़ कदे ना जाइंदा। कबीर कहे होए सहाई अनाथ अनाथां, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सचखण्ड दुआरे पिआ हासा, स्री भगवान खेल वखाइंदा। उठो वेखो सर्ब तमाशा, शाह पातशाह आप कराइंदा। जिस दीआं गुर अवतार पीर पैगम्बर शाख़ां, किरन किरन भगत वखाइंदा। सो साहिब देवणहार सदा भरवासा, धुर संदेश अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

नानक कहे आया वेला, जिस वेले राह तकाईआ। गोबिन्द कहे करे खेल गुरू गुर चेला, गुर रूप वटाईआ। कबीर कहे प्रभ भगतां होए मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। श्री भगवान कहे मैं सज्जण सुहेला, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ।

नानक कहे गोबिन्द वेख, गोबिन्द कहे नानक तेरी वडयाईआ। कबीर कहे प्रभ करे हेत,

आपणा मेल मिलाईआ। इक्क चार सुहञ्जणी चेत, चौदस चौदां दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ।

चौदां चेत वीह सौ वजे, दो हज़ार समझाईआ। दो हज़ार नव खण्ड पृथ्मी विच्चों इक्को वार करे सच्चे, इक्क नाल होर दो दो ज़बर ज़बर दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल कर, सभ दा लेखा आपणे विच्च लुकाईआ।

चौदां चेत प्रभ हो चुकन्नां, चौदां लोक फेरा पाईआ। चौदां तबक फिरे भन्नां, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाईआ। तीर्थ तट्ट करे अंना, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। गुरदर मन्दर शिवदुआले मट्ठ ख़ाली करे छप्पर छन्नां, वस्त किसे घर रहण ना पाईआ। मुड़ के आए लंघ के सारयां बंनां, बंनां देवे सभ दा ढाहीआ। करे खेल श्री भगवना, भगत दुआरा वेख वखाईआ। सेवा करे गुजरी चन्नां, चन्द चन्न नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल इक्को मन्ना, मनसा पूर वखाईआ। बुॅढा होया उठ के आवे नाल जट्ट धन्ना, पिछली कीती याद कराईआ । नामा कहे मैं सुणया कन्नां, भगतां मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

चौदां चेत्र सारे रहो त्यार, त्यारी हरि कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आदि शक्त होए ख़बरदार, चतुरभुज नाल मिलाइंदा। गुर अवतार उठाल, पीर पैगम्बर राह वखाइंदा। भगत भगवन्त वेखे लाल, सन्त साजण आप जगाइंदा। गुरमुखां जणाए आपणा हाल, गुरसिखां आप उठाइंदा। सेवा करे दीन दयाल, दयानिध भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा।

वीह सौ वजे सारे औणगे। भगत दुआरे दर्शन पौणगे। दर दरवाजे बाहर, साढ्ठे तिन्न हत्थ डेरा लौणगे। दोए जोड़ सीस झुकौणगे। चरन लग पर्दा लौहणगे। बुझे अग्ग, दीन मज़हब शरअ मिटौणगे। कलमा इक्को हक़, राम रहीम सुणौणगे। जिस नूं वेंहदिआं गए थक्क, दर ओस दा दर्शन पौणगे। वेख खेल पुरख समरथ, गल पल्लू सारे पौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर साचा इक्क सुहौणगे। दर दरवाजा साढ्ठे तिन्न हत्थ, बाहर वंड वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार होया इक्ठ, भगत भगवान ढोला गौणगे। सारे मंगण इक्को वथ, झोली ख़ाली सर्ब वखौणगे। पिछली कीती दिती छड्ड, झगढ़ा सभ मिटौणगे। जुग जुग रहे तैथों अड्ड, पिछला पन्ध मुकौणगे। इक्क वखाल आपणी हद्द, साची मंग मंगौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर इक्को इक्क दरसौणगे।

श्री भगवान उठेगा। गुर गोबिन्द कोलों पुछेगा। की सिर ते भार चुक्केंगा। शरमशार हो ना लुकेंगा। ग़रीब निमाणयां कोलों पुछेंगा। दीन दयाल हो के तुठेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शेर हो के बुकेंगा।

वीह सौ वेला वक्त सुहाणा, सोहणी रुत्त सुहाईआ। किरपा करे श्री भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। दर दरवाजिउँ बाहर सुणे अगम्मी गाणा, बिन रसना जिह्वा रहे सुणाईआ । अंदर वरते आपणा भाणा, भीतर भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कार साची आपणी दए जणाईआ।

बाहर खलोवे हो त्यार, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ। अंदर हरि जू करे कार, गोबिन्द माण वडयाईआ। तन बसतर पहन शिंगार, पीला रंग चढ़ाईआ। सिर ते चुक्के ख़ाकी मिटी भार, भार सवा सवा अखवाईआ। पंज फेरे मारे वारो वार, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। दर दरवाजा वेख अद्धविचकार, विचला भेव चुकाईआ। ख़ाकी मिटी मूधी देवे मार, भेव कोई ना आईआ। सेवा करे परवरदिगार, मुशर्द मुरीदां दए वखाईआ। चौदां चेत सभ दी सत्तया खिचे विच्चों संसार, सर सरोवर ख़ाली दए कराईआ। भगत दरवाजे विच्च लिआ के दब्बे आप निरँकार, लभ्भयां नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर एसे कर के सद्दे, भुलया कोई रहण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो तुहानूं आपणे नाम दे लिख लिख दित्ते पटे, अन्तम सभ दे उत्ते लकीर फिराईआ। हुण सभ ने लँघणा इक्को रसते, बस्ते सभ दे बन्द कराईआ। चारों कुण्ट हाल होणे ख़सते, ख़बर इक्को वार समझाईआ। दीन मज़हब ना रहणे मसते, मसती सभ दी दए गवाईआ। श्री भगवान आप चढ़या साची गशते, दो जहानां वेख वखाईआ। माड़ी रहे ना कोई ख़सलते, ख़ालस ख़ालस दए बणाईआ। चार जुग जीव जंत रहे फिसलते, साचा पैर ना कोई जमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव खुलाईआ।

पंज वारी चुक्क भार, गेड़ा वारो वार रखाइंदा। सारी संगत टोकरी भरे नाल प्यार, रोड़ी रोड़ा सभ दे कोलों उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बाहर खलोते होण हैरान, हरि जू एह की खेल रचाइंदा। श्री भगवान कहे मेरा सच्चा निशान, जिनां आदि अन्त ना कोई मिटाइंदा। वेखो भगत सारे मेरा ढोला गाण, तुहाढ़ा जस ना कोई सुणाइंदा। एनां दी सेवा कर परवान, सिर आपणे भार उठाइंदा। शान शौकत ना कोई विच्च जहान, राग रंग ना कोई मोहे भाइंदा। प्रेम करन दी साची आण, अणख़ीला आपणा हुक्म सुणाइंदा। दर आए करो पहचान, बेपरवाह समझाइंदा। पंजवें फेरे दरवाज़े विच्च खड़े भगवान, आपणी कल रखाइंदा। सारे चरनी डिगण आण, साढ़े तिन्न हत्थ ओट ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे सर सरोवर इके दवार भगत दरवाज़े विच्च दबाइंदा।

सभ दी करनी देवे दभ, दाबा आपणा नाम लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण सभ, वाहवा तेरी वडयाईआ। नानक कहे धन्न भाग दीनां मज़हबां वड्डयां यब, झगढ़ा दित्ता मुकाईआ। मैं दस्स के आया किछ हब, होका तेरा नाम लगाईआ। गोबिन्द कहे मैं एसे कारन वारया किछ सभ, आपणा आप ना कुछ रखाईआ। पुरख अकाल कहे एसे कारन सारे लए सद्द, लुकिआ कोई रहण ना पाईआ। वेख मेरे ख़ाली हड्ड, हड्डीआं बालण रिहा जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची गाथा आप दृढ़ाईआ। (१३ चेत २०२० बि)

भगत दुआर सच्चा सचखण्ड, लोकमात मिले वडयाईआ। श्री भगवान साहिब बख्शंद, बख्शिश आपणी आप कराईआ। प्रगट हो सूरा सर्बंग, शहनशाह आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मुका के आए आपणा पन्ध, बण पान्धी जगत राहीआ। दूई द्वैती शरअ शराइती ढाह के आए कंध, भाण्डा भरम भन्नाईआ। गौंदे आए इक्को ढोला साचा

छन्द, गीत गोबिन्द अलाईआ। मंगण आए हरि अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च दरसाईआ। लेखा चुक्के सूरज चन्द, तारा चन्न ना कोई चमकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पावण आए ठंड, आपणी तपत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

सचखण्ड दुआरा बणया एक, एकँकार दए वडयाईआ। सो पुरख निरञ्जण धरया भेख, हरि पुरख निरञ्जण सच्चा शहनशाहीआ। निरगुण हो के रिहा वेख, सरगुण नज़र कोई ना आईआ। शब्द अगम्मी इक्क संदेस, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। पतिपरमेश्वर बण नरेश, शाह पातशाह वड्डी वडयाईआ। जुग चौकड़ी आपणा देवणहारा भेत, भेव ना किसे जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेलदा रिहा खेड, खलारी आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रिहा भेज, जुग जुग आपणा हुक्म मनाईआ । निरगुण सरगुण माणदा रिहा सेज, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जोती नूर देंदा रिहा तेज, ज़हूर इक्क दरसाईआ। बोध अगाध लिखदा रिहा लेख, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वडयाईआ।

सचखण्ड दुआरा वेखण आए, कलिजुग अन्त वज्जे वधाईआ। बीस बीसा राह तकाए, भेव कोई ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नैण उठाए, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

गुर अवतार औंदे नट्ठे, आपणा पन्ध मुकाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ दर दरवाजिउँ होए इक्ठे, बैठे ध्यान लगाईआ। इक्क दूजे नूं कहण असीं भाई बणीए सके, पिछला पन्ध मुकाईआ। हो मेहरवान प्रभ साडे वल तक्के, मेहर नज़र उठाईआ । किसे कम्म ना औणे मदीने मक्के, मकबरे माण ना कोई वडयाईआ। मन्दर मट्ठ शिवदुआले कोई ना फसे, फसता सभ दा दिउ वढाईआ। वेखो खेल इक्क अनडिठे, हरि अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा जणाईआ।

इक्ठे हो के करन सलाह, मता आपणे नाल मिलाईआ। इक्क दूजे दी पकड़न बांह, बाज़ू बाज़ू नाल हिलाईआ। जिस दा जपदे रहे नां, नाउँ निरँकार वड वडयाईआ। सो साहिब खेल रिहा करा, करनी आपणे हत्थ रखाईआ। जिस दा वाक भविख्त गए लिखा, सो लेखा रिहा चुकाईआ। जिस दा गोबिन्द बणे गवाह, शहादत होर ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, केरे खेल बेपरवाहीआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साडे वस्त नहीं कुछ कोल, ख़ाली हत्थ वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी वजा के आए ढोल, ढोला तेरा नाम सुणाईआ। बौहड़ी दरोही हुण ना खोल्ह साडा पोल, बेपरवाह तेरी ओट तकाईआ। दीन मज़हब तेरे हुक्मे अंदर करया घोल, घोली घोल ना कोई घुंमाईआ। पंज तत्त काया हंढाया चोल, चोली तेरे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहण, ऊँची कूक सुणाईआ। तेरे दर्शन नूं लोचण नैण, नेत्र ध्यान लगाईआ। नात तुट्टया पिछला साक सैण, सज्जण इक्को सच्चा माहीआ। कर किरपा साडा दे दे देण, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव इक्को रंग रंगाया। नेत्र वेखण निउँ निउँ उप्पर अक्ख ना कोई उठाया। कवण जाणे प्रभ तेरा भेव, अभेद हत्थ किसे ना आया। ठाकर हो के करें सेव, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाया।

गुर अवतार पीर पैगम्बर बाहर बहणा, श्री भगवान आप जणाईआ। चार युग मैं मन्नदा रिहा तुहाढ्ढा कहणा, अन्तम आपणा हुक्म मनाईआ। वेखो खेल नेत्र नैणां, सो पुरख निरञ्जण आप वखाईआ। भगत भगवान इक्क महल्ले बहणा, बह बह खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे नाल रक्खो तीर्थ, जिन्नां दिती जगत वडयाईआ। किसे विच्च ना रहे सीरथ, सीर रूप ना कोई वखाईआ। किसे मन्दर ना रहे कीरत, कीर तन विच्च जणाईआ। अन्तम सभ ते आई भीड़त, भीड़ी गली इक्क वखाईआ। दो जहान दिसे पीड़त, चौदां लोक ना कोई बचाईआ। प्रभ प्रगट होया वड्डा पीरत, पीर पैगम्बरां रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क जणाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर गुरदर मन्दर मस्जिद मठ्ठ शिवदुआले, तुहाढ्ढी कन्नीआं नाल बंधाइंदा। सारे कहो असीं कीते ख़ाले, सच वस्त विच्च ना कोई रखाइंदा। भगत दुआरे आ के कढ्ढे दवाले, अग्गे नज़र कोई ना आइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक्को तेरी रहे सच्ची धर्मसाले, धर्म दुआरा इक्क सुहाइंदा। चारों कुण्ट कुण्ट बेहाले, धीरज धीर ना कोई धराइंदा। तेरी निभ जाए तेरयां नाले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे नाल लिआओ गरंथ, पिछली वारता रिहा जणाईआ। गदा चक्कर लिआओ संख, धनूष बाण बंधन पाईआ । मोहणी रूप लिआओ मोर मुकट हँस, सहँसा रिहा जणाईआ। आ के वेखो हरि का बंस, भगत भगवान दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क जणाईआ।

असीं सभ कुछ लै के आए हां। दर तेरे ध्यान लगाए आं। नीरथ तीर्थ सीरथ चरनां हेठ दबाए हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर्शन नूं तरसाए हां।

गरंथ शास्त्र बंधे बस्ते, दर तेरे अलक्ख जगाईआ। कलिजुग अन्तम सारे होए ससते, कीमत किसे ना पाईआ। फोके उलटौंदे जीव वरके, वितकरा सके ना कोई मिटाईआ। सानूं पढ़ पढ़ दीन मज़हब हरख़े, चिन्ता सोग करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म कोई ना पररखे, कसवटी नाम ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ध्यान लगाईआ।

आ वेख साडे गरंथ पोथ, पुस्तक नाल मिलाईआ। इक्क दूजे दा छड्डया रोस, झगढ़ा अञ्जील कुरान ना कोई लड़ाईआ। साडी सभ दी भुल्ली होश, समझ कोई ना आईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बणया रिहों ख़मोश, ख़ाह मख़ाह साडी सेवा लोकमात लगाईआ। फिर वी अन्तम दित्ता सानूं दोश, बदोशे बंन्न लिआईआ। एसे कारन नानक किहा आवे ना विच्च सोच, सोच सके ना कोई राईआ। दरोही तेरी इक्को ओट, सरन तेरी सरनाईआ। तेरी वेख निर्मल जोत, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। तेरा किला सुहञ्जणा कोट, भगत दुआर

वड्डी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलक्ख जगाईआ।

आपणे आपणे सारे पढ़ो कलाम, कलमा इक्क जणाईआ। आपणा आपणा सारे लउ नाम, अक्खरी नाम वडयाईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो काम, की की खेल कराईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो निज़ाम, की की हुक्म मनाईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो पैग़ांम, की की संदेस जणाईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो निशान, निशाना की रखवाईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो ईमान, ईमान किस उत्ते रखवाईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो ध्यान, ध्यान विच्च किस रखवाईआ। आपणा आपणा सारे दस्सो माण, माण कवण दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार रिहा जणाईआ।

आपणा आपणा दस्सो उपदेश, की की जगत जणाया। आपणा आपणा दस्सो लेख, जुग जुग की लिखाया। आपणा आपणा दस्सो भेख, की की वेस वटाया। आपणा आपणा दस्सो हेत, की की राह चलाया। आपणा आपणा दस्सो खेत, की की फल लगाया। आपणा आपणा दस्सो भेत, की की रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया।

आपणा आपणा दस्सो राह, मार्ग की लगाईआ। आपणा आपणा दस्सो नां, की की मात जपाईआ। आपणा आपणा दस्सो थां, की की डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप जणाईआ।

की दस्सीए की सकीए आख, आख़र नज़र किछ नहीं आइंदा। तेरी भाखिआ दे के आए भाख, संदेशा तेरा नाम वडिआइंदा। लोकमात सभ नूं आए आख, श्री भगवान इक्को नज़री आइंदा। गुर अवतार तेरी शाख़, पत टाहणी आप महकाइंदा। अन्तम साडे कुछ नहीं हाथ, ख़ाली हत्थ वखाइंदा। तूं साहिब पुरख समराथ, तेरा अन्त कोई ना पाइंदा। जुग चौकड़ी तेरी गाई गाथ, गा गा शुकर सर्ब मनाइंदा। बण बरदे तेरे दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। तेरी रक्खदे आए आस, आसा सभ दी पूर वखाइंदा। प्रगट होए साहिब सर्ब गुण तास, कलिजुग अन्तम वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धंदे आपे लाइंदा।

असीं लै के आए आपणी वस्त, वस्तू तेरे अग्गे टिकाईआ। तेरे चरन सरन रहीए मसत, मसती अवर कोई ना भाईआ। ना कीट रहे ना हसत, हसती आपणी दिती गवाईआ । ना माणस रहे ना शख़स, शख्सीअत नज़र कोई ना आईआ। ना अर्श रहे ना फर्श, भगत दुआरे डेरा लाईआ। ना आस रही ना हरस, हवस ना कोई वधाईआ। जे अजे ना करें तरस, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ पिच्छे रहे अटक, मनजीता अग्गे हो के रिहा अटकाईआ । दूरों वेखीए सिधी सड़क, सच दुआरे जाए वाहो दाहीआ। असीं सारे रहे भटक, कवण वेला तेरा दर्शन पाईआ। साडे उत्ते कोई ना कर हरख़, बदोसे देण दुहाईआ। मेहर नज़र मेघ बरख़, अमृत आपणा आप प्याईआ। साडे कोलों पिछला मंग ना कोई धड़त, सेर धड़ी वट्टा हत्थ ना कोई रखवाईआ। तूं करता लईं ना साथों करत, करनी तेरी इक्को भाईआ। साडे विच्च नहीं हुण फ़रक, सारे मिल गए इक्को थाईंआ। तेरे दुआरे आए परत, लोकमात राह

तकाईआ। तेरा हुक्म सुण के सारे आए सरक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हत्थ साहिब वडयाईआ।

देवां वड्डिआई सुणो बात, हरि बातन आप जणाइंदा। सारे कहो असीं इक्क जमात, दूजी वंड ना कोई रखवाइंदा। नानक कहे मैं तेरा दास, गोबिन्द कहे मैं तेरी सेव कमाइंदा। पीर पैगम्बर कहण तेरा डूंघा ख़ात, भेव कोई ना आइंदा। तीर्थ तट्ट कहण साडी मुक्की वाट, पन्ध नज़र कोई ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान कहण साडी चले ना कोई गाथ, तेरा नाम सिफ्त सालाहिंदा। तेरे दर ते आए पुरख समराथ, दूजा दर नज़र कोई ना आइंदा। जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहुड़ा इक्क जणाइंदा।

सच सुनेहुड़ा सुणो मीत, मित्र प्यारा आप जणाईआ। जिस दी दस्सदे आए रीत, सो साहिब फेरा पाईआ। जिस ने माण दवाया मन्दर मसीत, शिवदुआले मद्ध गुर वडयाईआ। सो अन्तम सभ दा भन्ने ठीकरा ठीक, ठेकदार रहण कोई ना पाईआ। आत्म परमात्म चलाए साची रीत, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। निरगुण मेला निरगुण अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। सभ ने गौणा इक्को गीत, सोहँ ढोला रिहा जणाईआ। प्रभ चरन दी इक्क प्रीत, जगत जगदीसा रिहा समझाईआ। नौं दुआरे हस्त कीट, राउ रंक डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाण रिहा दृढ़ाईआ।

धुर फ़रमाणा सुणो प्रभ एक, एकँकार जणाईआ। दूर दुराडे लउ वेख, निरगुण पर्दा दए उठाईआ। कलिजुग अन्तम खेले खेड, खलारी आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

तेरी मेहर नज़र परवान, दोए जोड़ जोड़ सरनाया। कर किरपा श्री भगवान, तेरे अग्गे सीस झुकाया। दर दरवाज़े खलोते आण, दूर दराडा पन्ध मुकाया। एका दे सच फ़रमाण, तेरे चरन ध्यान लगाया। दर्शन करीए अग्गे आण, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाया । भगत दुआर कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर सेदेसा इक्क जणाया।

पीर पैगम्बर गुर अवतार विष्न ब्रह्मा शिव आदि शक्त चतुरभुज अल्ला राणी हो मस्तानी सारे कहो साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हत्थ उप्पर लउ उठाईआ। पिछला बदल लउ आपणा रुख़, पिछलिआं वल ध्यान ना कोई लगाईआ। आपणी करनी चार जुग दी भगत दुआरे विचकार दिउ सुट्ट, सर सरोवर एथे दिउ दबाईआ। चार जुग दा लहणा जाए छुट, छुटे वस्त पराईआ। आ के मिलो पिओ नूं पुत्त, क्यों बैठे दूर दुराडे डेरा लाईआ। जे एस निशानउँ गए उक, मिले फेर ना कोई वडयाईआ। तुहानूं दात निक्की निक्की तुछ, लोकमात गुर अवतार बणाईआ। वेखयो हुण ना करयो चुप, चुप रहण दी जाच ना अजे सिखाईआ। कछु के बाहर अन्धेरउँ घुप, निक्की किरन जोत कीती रुशनाईआ। सारे इके वार बहो उठ, आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा सुणाईआ। श्री भगवान सारे उठांगे। भगत दुआरे सभ कुछ सुट्टांगे। तेरे दर ते आ के तैथों पुच्छांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे कोलों कदे ना छुपांगे।

जिस वेले आपणी करनी सुटाओगे। भगत दरवाज़े रंग चढ़ाओगे। आपणी मंग पूर कराओगे। नाम मरदंग इक्क वजाओगे। अंदर लंघ प्रभ दा दर्शन फेर पाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल वेख वखाओगे।

सारे कहण असीं उठदे आं। आपणी करनी सारे सुटदे आं। चार जुग दी वाड़ी आपणी हत्थीं लुटदे आं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच कहाणी तैथों पुच्छदे आं।

सच कहाणी पुछण आए, दोए जोड़ करी अरजोईआ। हरि जू एह की खेल रचाए, दो जहान मिले ना ढोईआ। नानक कहे उठो वाहो दाहे, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। कबीर कहे पओ सरनाए, चरन ध्यान लगाईआ। मूसा कहे हाए हाए, जलवा नूर ना झल्लया जाईआ। ईसा कहे मेरा खुदाए, परवरदिगार बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे मेरा पन्ध मुकाए, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरा संग निभाए, पुरख अकाल वड्डी वडयाईआ। पिछला कीता कौल निभाए, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। साची करनी आप कमाए, करता पुरख बेपरवाहीआ। भगत भगवान लए जगाए, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सच दुआरा इक्क सुहाए, दस साल सेव कमाईआ। मनजीता फड़ अग्गे लाए, साढ़े तिन्न हत्थ दए वडयाईआ। जगत जगदीशा रंग रंगाए, नौं दुआर चन्द चढ़ाईआ । दोहां विचोला आप रघुराए, रंग रूप नज़र किसे ना आईआ। इक्क दस दी वंड वंडाए, दो नौं मिले वडयाईआ। तिन्न अठ्ठ दा पन्ध मुकाए, चार सत्त इक्क सरनाईआ। पंज छे दा घर बणाए, घर इक्को नज़री आईआ । नामे लहणा झोली पाए, छप्पर छन्न ना कोई जणाईआ। धन्ने नैणां दए वखाए, मूढ़े जट्ट मिले वडयाईआ। गोबिन्द लेखा थाएं पाए, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। कलकी अवतार आप अखवाए, निहकलंका नाउँ धराईआ। नाम डंका इक्क वजाए, दो जहानां शब्द शनवाईआ। चार जुग दे पिछले करिंदे दर बुलाए, गुणी गहिंदे भेव ना राईआ। सभ दे जंदे दए तुड़ाए, शरअ वंड ना कोई रखवाईआ। आपणी बिन्दे इक्क दरसाए, नादी सुत समझाईआ। छिन्दे पुत्त आप वखाए, भगत भगवान लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा इक्क वडयाईआ ।

सुणो संदेसा अन्त अख़ीर, हरि आख़र आप जणाइंदा। जिस दा लेखा बेनज़ीर, नज़र किसे ना आइंदा। जिस दी खिचे ना कोई तस्वीर, तसलीम आपणा आप कराइंदा। कलिजुग अन्तम वड पीरन पीर, आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सभ दी करनी पूर कराइंदा।

सभ दी करनी पूरी करे करतार, हरि करते हत्थ वडयाईआ। तुसीं लिखदे रहे जुग चार, कलिजुग अन्तम आवे बेपरवाहीआ। सभ दा झगढ़ा दए निवार, लेखा कोई रहण ना पाईआ। मार्ग वक्खरा लाए विच्च संसार, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। पिछला लेखा दए निवार, भरम भुलेखा दए मिटाईआ। जन भगतां हिस्सा, वंडे अगम्म अपार, आप आपणी वंड वंडाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बुलाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी करे खेल नयार, निरगुण आपणी कार कमाईआ। भगत दुआर कर त्यार, चारे कुण्टां वेख वखाईआ। दर दरवाजा खोल्

कवाड़, ग़रीब निवाज़ा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

हरि दरवाज़ा भगती रंग, श्री भगवान आप चढ़ाइंदा। चौदां चेत इक्क अनन्द, चौदां लोक नैण शरमाइंदा। करे खेल सूरा सर्बंग, शहनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। सारे गावण इक्को छन्द, ढोला गुर अवतार अलाइंदा। साढ़े तिन्न हत्थ अग्गे बन्द, बंनां इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी करनी रहे सुट्ट, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। कर किरपा हुण सानूं पुच्छ, क्यों बैठा मुख भुआईआ। तेरी भावे ना सानूं चुप, अनबोलत तेरा राग ना कोई सुणाईआ। तेरे दरस दी लग्गी भुक्ख, भुक्खयां भुक्ख ना कोई गवाईआ । मेहरवान हुण सानूं पुच्छ, पसचाताप क्यों रिहा कराईआ। वेख ख़ाली हत्थ सभ कुछ दित्ता सुट, तीर्थ तट्ट किनारा कोई रहण ना पाईआ। साडे कोलों तूं सभ कुछ लिआ लुट्ट, तैनूं तरस ज़रा ना आईआ। आपणे अंदर रक्खें घुट्ट, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ।

सच संदेसा सुणो भगवान, शब्द इशारे नाल जणाइंदा। वेखो सारे कर ध्यान, धुर दरबारी इक्को अक्ख खुल्ह़ाइंदा। भगत सोहण सच निशान, श्री भगवान आप हिलाइंदा। जिन्ह़ां पिच्छे प्रभ नूं मिले माण, सो प्रभू उन्ह़ां वडिआइंदा। जिन्ह़ां दी महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुरान गाण, तिन्ह़ां आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा।

वेखो खोल्ह़ो अक्ख उप्पर, आपणा ध्यान लगाईआ। भगत भगवान दे साचे पुत्तर, पिता पुरख इक्को नज़री आईआ। नानक सच दस्स तूं कह के गिउँ निहकलंक प्रभ आए उतर, जननी कोई ना कुक्ख सुहाईआ। जे दर आ के गिउँ मुक्कर, निरँकार जोत ना कोई अखवाईआ। नानक कहे मेरे सतिगुर तेरा मनाया शुकर, शहनशाह इक्को नज़री आईआ। मैं कह के गिआ असीं भरीआं चिकड़, तुध बिन अंग ना कोई लगाईआ। धन्न भाग तूं साडा कीता फ़िकर, अन्त आपणे दुआर मंगाईआ । मैं तेरा करदा इक्को ज़िकर, दूजी वारता ना कोई अलाईआ। निरगुण हो के आपणे विच्चों गिआ नितर, पर्दा नज़र कोई ना आईआ। गोबिन्द हुण ना मारे बाज़ां नाल तित्तर, तेरी तर्ज़ तेरा ताल उस दे हत्थ आईआ । तूं निरगुण हो के आइउँ परत, उपमां तेरी वड वडयाईआ। मैं एसे करके ला के गिआ साची शर्त, निहकलंक आवे चार वरनां एका रंग वखाईआ। तेरा खेल वेख नधड़क, मेरे नैण नीर वहाईआ । मैं प्रभ दी वेखां चढ़त, दो जहान वज्जे वधाईआ। तेरे दुआरे दी सिधी सड़क, बिन तेरे होर ना किसे वखाईआ। तीर्थ तट्ट सरोवर मन्दर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरू घर एथे मूधे दित्ते परत, बिन तेरी किरपा फेर ना कोई उठाईआ। बेपरवाह तैनूं सोग ना कोई हरख़, चिन्ता विच्च कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

भगत दवारे सभ कुछ रक्खया, गुर अवतार रहे जस गाईआ। श्री भगवान जिस घर वस्सया, तिस मिले माण वडयाईआ। भगत प्रीती अंदर फसया, दूजा संग ना कोई रखवाईआ। सेवक

बण के फिरे नस्सया, सेवा इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोला बणया बेपरवाहीआ।

जो कुछ सुट्टया सो प्रभ दब्बे, सिर आपणे भार उठाईआ। हरि संगत सेवा करदा फबे, शहनशाह वड्डी वडयाईआ। जे कोई लभ्भण जाए किसे ना लभ्भे, हरि मन्दर इक्को राजन नज़री आईआ। कलिजुग अन्त ग़रीब निमाणे सारे सद्दे, गुर अवतार पीर पैगम्बर देण गवाहीआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता सभ दे परदे कज्जे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ।

नानक कहे तूं साचा तोला, तुध बिन नज़र कोई ना आया। मैं रक्ख के गिआ उहला, तूं पर्दा दित्ता खुल्लाया। निरगुण हो के बदलया चोला, चोला गोबिन्द अंग लगाया। तेरा आदि जुगादी इक्को बोला, मैं बोल बोल सुख पाया। तूं ग़रीब निमाणयां करें भार हौला, सिर आपणे भार उठाया। मैं कह के गिआ नानक घर दा गोला, बण के गोला सेव कमाया। पहली टोकरी लाए झकोला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहिआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो करन अरदास, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। भगत दुआर इक्को ख़ास, श्री भगवान सेव कमाईआ। इक्क टोकरी रक्खे साथ, रोड़ा कंकर विच्च टिकाईआ। ग़रीब निमाणयां करे पाठ, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। फिर भी कहे शाहो शाबाश, गुरसिख तेरी वडयाईआ। तुध बिन ख़ाली दिसण हाथ, वस्त नज़र कोई ना आईआ। तुसां लैणी पत्त राख, पतिपरमेश्वर दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे उडीक, नेत्र ध्यान लगाईआ। सिर ते टोकरा रक्खो ठीक, गुरमुख साचे लउ उठाईआ। प्रेम करन दी साची रीत, हरिजन साचे दिउ जणाईआ। साहिब सतिगुर परखण आया नीत, आपणा फेरा पाईआ। काया करो ठंडी सीत, सीतल धार वहाईआ। सदा वसणा चीत, विछड़ कदे ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण असां छड्डे मन्दर मसीत, मसला अवर ना कोई पढ़ाईआ। सोहँ ढोला गाईए गीत, गा गा शुकर मनाईआ। जिउँ जिउँ प्रभ आवे नज़दीक, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

टोकरा कहे मोहे चढ़या चाअ, घर सच मिली वडयाईआ। श्री भगवान भगतां भार लिआ उठा, हौले भार दए कराईआ। गुर अवतार तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण मिले सच्चा शहनशाह, पातशाह आपणा फेरा पाईआ। असीं चरनी डिगीए आ, चरनोदक मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच जणाईआ।

सारे उंगलां करो नेड़े, नेरन नेर जणाइंदा। जिन्नां वड़ना भगतां वेहड़े, तिन्नां भेव समझाइंदा। चार युग बैठे रहे करे के ज़ेरे, अन्तम वेस वटाइंदा। तुहाढ्ढे उत्ते करे मेहरे, मेहर नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तुहाढ्ढी वस्त आपणे दस्त, भगत दुआरे हेठां पाइंदा।

धरत तीर्थ तट्ट गए दब्बे, फेर सके ना कोई उठाईआ। कोटन कोट जुग गए लद्दे, आपणा

पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार हुक्मे बद्धे, पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पैहला फेरा हो दलेरा, इक्को इक्क लगाईआ।

पैहला फेरा आप लगाया, श्री भगवान वड्डी वडयाईआ। शब्द अगम्मी खेल रचाया, भेव कोई ना पाईआ। दूजी धार आप प्रगटाया, परम पुरख सच्चा शहनशाहीआ। सभ दा लहणा रिहा मुकाया, लहणेदार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

शहनशाह हरि खेल अव्वला, इक्को इक्क कराइंदा। भगत दुआर सच महल्ला, सो साहिब आप वसाइंदा। वसणहारा जलां थलां, घट घट वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराइंदा।

टोकरी विच्च पत्थर रोड़े, कूक कूक सुणाईआ। श्री भगवान जोड़ी जोड़े, नाता फेर ना कोई छुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर्शन सारे लोड़े, नेत्र नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लेखा रिहा चुकाईआ।

लेखा वेखो दो जहान, निरगुण सरगुण आप चुकाइंदा। जगत सरोवर ना कोई अशनान, गुरमुखां पन्ध मुकाइंदा। अठसठ तीर्थ दब्बे एथे आण, गंगा गुदावरी जमना सुरसती माण ना कोई वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाइंदा। आपणा खेल करे करतारा, करता आप जणाईआ। दरगाह साची दा सच विहारा, लोकमात दरसाईआ। कल कलकी हरि लै अवतारा, निहकलंक अखवाईआ। लेखा जाण सर्ब संसारा, लहणा झोली सभ दी पाईआ। पीर पैगम्बर वेखणहारा, गुर अवतारां हुक्म मनाईआ । भगतां देवणहार सहारा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। आवे जावे वारो वारा, वारता आपणी आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूजा बंधन पाईआ।

एका दूजा पाया बंधन, तीजी वंड वंडाइंदा। तीजी टोकरी वेखे चन्दन, चन्द चांदना इक्क चमकाइंदा। भगतां तोड़े अगला पिछला फंदन, गुर अवतार आप बंधाइंदा। जुग चौकड़ी आया गंढण, नाम डोरी तन्द बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोक परलोक वेख वखाइंदा।

तीजी टोकरी त्रैगुण माया, त्रैगुण अतीता आप उठाईआ। भगत दुआरिउँ बाहर कढाया, हरिसंगत विच्च रहण ना पाईआ। गुर अवतार ध्यान लगाया, वेख वेख बिगसाईआ। हरि करते की खेल रचाया, समझ ज़रा ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ।

शास्त्र सिमरत वेद पुरान ग्रंथ सारे कहो मुक्के, मुक्की रैण अन्धेरी आ। कलिजुग बूटे कहो सुके, नाता तुटे मेरा तेरी आ। किसे ना पाणी रहे हुक्के, प्रभ करे बेरन बेरी आ। हुण क्यों बैठे चुपे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीजी टोकरी आपे सुट्टे, भार सके ना कोई उठाईआ।

अठसठ तीर्थ पए रो, नीर नीर वहाईआ। सभ कुछ साथों लिआ खोह, चली ना कोई चतुराईआ। बौहड़ी जे ना औंदों मुड़ के छब्बी पोह, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोटन कोट गए हो, साडा माण ना कोई गवाईआ। साध सन्त दुरमत मैल आपणी

धो, साडे विच्च इशनान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे माण वडयाईआ।

तीर्थ तट्ट किनारे सुणो गल्ल, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। भगत दुआरे ना कोई वल छल, सिधा राह इक्क वखाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल साचा दीपक गिआ बल, शमां नज़र कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथा फेरा आपे लाइंदा।

चौथा फेरा आपे लाएगा। श्री भगवान खेल कराएगा। भगत दवारिउँ उठ के जाएगा। सिर टोकरा आप टिकाएगा। साल वीहवें बांका छोहरा नज़री आएगा। आपणा ज़ोरा आप वखाएगा। कोरा जवाब सर्ब सुणाएगा। लोहड़ा घर घर आपे पाएगा। जोड़ी जोड़ा नज़र ना आएगा। होड़ा सस्से उप्पर वखाएगा। हाहा हँ ब्रह्म बणाएगा। गुर अवतार आप जगाएगा। दर दरबार सद बहाएगा। पिछली कार ना कोई कमाएगा। चार यार ना कोई हंढाएगा। शिवदुआला मट्ठ ना कोई वसाएगा। मस्जिद हक़ ना कोई दृढ़ाएगा। राह तक्क जलवा नूर, ज़हूर ज़ाहरा पीर इक्क अखवाएगा। कम्म करे आप बदस्तूर, धोखा किसे नाल ना कमाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो ज़रूर, ज़रूरत सभ दी पूर कराएगा। अग्गे रहण ना देवे कूड़, कूड़ी क्रिया सर्ब खपाएगा। ना कोई खाए गाँ सूर, छुरी हत्थ ना किसे जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाता इक्को इक्क वखाएगा। नाता इक्को इक्क बणावेगा। साची सच जणावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पर्दा लाहवेगा। चौदां चेत रच सवंबर, करता आपणा काज रचावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिछला अडंबर सर्ब मुकावेगा।

चारे टोकरे हो गए ख़ाली, ख़ाली ख़लक खुदाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना करे दलाली, दलाल कोई नज़र ना आईआ । वेखे खेल माज़ी हाली, भेव अभेदा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे कुण्टां वेख वखाईआ।

चारे कुण्टां वेखे आप, दह दिशा फोल फुलाइंदा। किसे नज़र ना आए सच्चा बाप, लक्ख चुरासी पिता सर्ब हंडाइंदा। निरगुण निरगुण जुड़या ना किसे नात, नाता बिधाता ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देण होका, इक्क आवाज़ लगाईआ। वेखीं पंजवीं वार ना देवीं धोखा, अछल छल आपणा छल कराईआ । नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों मिल्या मौका, सारे इके थां इक्ठे कराईआ। माण तुटया चौदां लोकां, चौदां तबक तेरी सरनाईआ। दीन मज़हब दा ख़ाली रह जाए बोका, आबहयात विच्च ना कोई रखाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ भाण्डा रह जाए पोचा, बिन तेरे वस्त नज़र कोई ना आईआ। जिस तरां भगतां मार्ग दस्सया सौखा, आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, पंचम वार आपणे नाल मिलाईआ।

पंजवीं टोकरी करे खिआल, आपणा ध्यान लगाईआ। वेखो जिस ने नींहां हेठां दित्ते लाल, जन भगतो तुहाढ्ढी सेव कमाईआ। की एहनूं शाह कहोगे कि कंगाल, बण कंगाल कंगालां सेवा रिहा कमाईआ। एहदे तरस करो उत्ते हाल, बेहाल रिहा जणाईआ। जिस तुहाढ्ढा

कट्टया काल, आपणा आप काल ना कोई जणाईआ। आपणी नवीं जणाए मिसाल, पिछली मिसल ना कोई गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नवीं रीती रिहा सुणाईआ।

गुर अवतारो पीर पैगम्बरो आपणा वेखो भगवान, श्री भगवान आप जणाइंदा। जिस दे पिच्छे बणदे रहे काहन, मोर मुकट सीस सुहाइंदा। जिस दे पिच्छे बणदे रहे अमाम, लोकमात डंक वजाइंदा। सो बरदा बणया गुलाम, नफ़र आपणा नाम रखवाइंदा। सेवा करे सच्ची निशकाम, आशा होर ना कोई वधाइंदा। जन भगतो तुहाद्धा खा के ना करे हराम, हरामी रूप ना कोई अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा।

वेखो भगतां दा गवाला, गवार इक्को नज़री आईआ। जिस गोबिन्द करी प्रितपाला, सो गोबिन्द हुक्म मनाईआ। मार्ग दस्से इक्क सुखाला, सुख सागर इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाईआ।

जिस दे सिर ते सोहे ताज, दो जहान वडयाईआ। सो मिसत्री बणे आज, बण मज़दूर सेव कमाईआ। जिस नूं कहन्दे गुरू महाराज, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। सो भगतां करे काज, करता पुरख फेरा पाईआ। भगत भगवान दा इक्क समाज, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। हरिसंगत मिल के प्रभ नूं दित्ता दाज, प्रेम प्रीती टोकरा सिर चुकाईआ। औंदयां जांदयां होका दे के मारे वाज़, उठो गुरमुखो हरि जू रिहा जगाईआ। आदि अन्त रक्खे लाज, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार कमाईआ।

गुरसिख कहण साडा प्यार, हरि जू टोकरा आप भराया। रोड़े पत्थर सोहणी धार, रोड़ा अग्गे ना कोई अटकाया। अज्ज तों सारे लक्ख चुरासी विच्चों होए बाहर, जन्म मरन ना कोई रखवाया। वेखो आपणे सिर ते चुक्क आप निरँकार, दोहां भुजां उत्ते रखवाया। अग्गे वेखण गुर अवतार, चरन ध्यान लगाया। कलिजुग एह की करया विहार, बिवहारी आपणी सेव कमाया। भगत दुआर कर त्यार, भावी आपणे हत्थ रखवाया। रावी कंडे जिस ने अरजन तत्तीआं तवीआं उत्ते दित्ता साड़, सो गुरमुखां अगनी तत्त रिहा बुझाया। जिस ने गोबिन्द चेरे दित्ते वार, वारता आपणी रिहा जणाया। कोई ना जाणे हरि दी कार, करता की की खेल रचाया। वीह सौ वीह सारे तक्कण गुर अवतार, कवण वेला मात होए सहाया। इक्ठे करे विछड़े यार, यारी यारां नाल निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाया।

जन भगतां वगारी लिआ फड़, आपणा बल रखवाईआ। जे साडे अग्गे गिउँ अड़, इक्ठे हो के धक्का देईए लगाईआ। जुग जुग सारे तेरा ढोला गए पढ़, तूं साडा ढोला गाईआ। जुग जुग तेरे पिच्छे गए मर, कलिजुग अन्तम तूं आपणा आप मिटाईआ। बण सेवक साडी सेवा कर, साथों भार झल्लया ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सदे रहे तेरा घर, खाणी बाणी कर पढ़ाईआ। हुण नहीं मंगणा कोई दर, दर मंगण दी लोड़ रही ना राईआ। जे तुठां ते आपणे जेहे कर, घर आपणे कीमत पाईआ। निक्के बाले फड़ के सारे टोकरे विच्च धर, आपणी हत्थीं सेव कमाईआ। आपणे मन्दर फेर जावीं चढ़, सानूं उंगलीआं नाल

लगाईआ। तूं भावें जम्म ते भावें मर, सानूं जन्म मरन विच्च कदे ना लिआईआ। असीं हुण बैठे अड़, गल्लां बातां नाल ना सके कोई मनाईआ। जे तैनूं साडा डर, सानूं सच दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच जणाईआ।

भगतो वेखो मैं तुहाथों डरदा, आपणा भय ना कोई रखाईआ। हो निमाणा सेवा करदा, सेवक रूप वटाईआ। तुहाढ्ढा टोकरा सीस उत्ते धरदा, धरनी धवल ना कोई छुहाईआ। तुहाढ्ढा भाणा आपे जरदा, आपणा भाणा गुर अवतारां मनाईआ। शहनशाह हो के बणया बरदा, माण रक्खे ना कोई वडयाईआ। जिस वेले जन भगतां दिसे पासा हरदा, तिस वेले होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डरदा डरदा सेव कमाईआ। जन भगतो मैनूं ना मारो, श्री भगवान आप जणाइंदा। मैनूं आपणा दिउ आधारो, आधार इक्को इक्क रखाइंदा। सच प्रीती नाल शिंगारो, जगत वेस ना कोई हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराइंदा।

गुर अवतारो पीर पैगम्बरो वेखो आप, आपणी कार कमाईआ। जिस दा जपदे गए जाप, सो भगतां दए वडयाईआ। तुसां वी रहणा एनां साथ, इक्को संग बणाईआ। परम पुरख दी गौणी गाथ, दूजी होर ना कोई पढ़ाईआ। साहिब सच्चे दे विकणा हाट, करता कीमत आपे पाईआ। नाता छड्डो ज़ात पात, दीन मज़हब ना कोई रखाईआ। अन्तम मिटे अन्धेरी रात, लोकमात रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वडयाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर लावण पंजे, पंजवां टोकरा नज़री आया । असीं आ गए विच्च शकंजे, सानूं सके ना कोई बचाया। मन्दरां मसजदां विच्च ख़ाली रह जाण मंजे, सिँघासण सच ना कोई सुहाया । सभ दे सीस हो जाण गंजे, श्री भगवान सिर आपणे भार उठाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाया।

आ नानक फड़ा हत्थ, हत्थ हत्थ नाल मिलाईआ। गोबिन्द मार्ग रिहा दस्स, मिले माण वडयाईआ। कबीर तूं क्यों रिहों हस्स, हँस मुख सालाहीआ। कबीर कहे प्रभ तूं किथे गिउँ फस, किधर गई तेरी वडयाईआ। जुग जुग खेल करदा रिहों समरथ, अछल छल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह की कार कमाईआ।

आ कबीर वेख यार, हरि यारी आप कमाइंदा। आ नानक वेख प्यार, परम पुरख आप समझाइंदा। पीर पैगम्बर लै नाल, गुर अवतार गंढ पुआइंदा। साढ्ढे तिन्न हत्थ करो पार, पार किनारा आप जणाइंदा। दर दरवाजा अद्धविचकार, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजवां भार हौली हौली सभ दे उत्ते पाइंदा।

पंजवां टोकरा पिआ हस्स, भगतां रिहा जणाईआ। वाह भगतो तुसां प्रभ नूं कीता वस, तुहाढ्ढी वड वडयाईआ। तुहाढ्ढे कोलों जाए ना नठ्ठ, भज्जयां राह नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सज्जा चरन लउ चुक्क, हरि सच सच जणाइंदा। सारे नेड़े जाओ ढुक, आपणे नाल मिलाइंदा। दोए जोड़ सरन सरनाई जाओ झुक, निवण सो रहणा इक्क वखाइंदा। सारे बणो श्री भगवान दे पुत्त, दूजा पिता नज़र कोई ना आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या आप समझाइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर झुकया सीस, दोए जोड़ सरनाईआ। प्रभ दी चरनी लग्गो ठीक, साढ्ठे तिन्न हत्थ बाहर हो जाईआ। चरन कँवल दी करो प्रीत, प्रीती इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढ्ठे तिन्न हत्थ पन्ध मुकाईआ।

साढ्ठे तिन्न हत्थ मुकिआ पन्ध, सो साहिब आप जणाइंदा। सोहँ ढोला गाओ छन्द, इक्को राग अलाइंदा। अग्गे नेड़े आवे पन्ध, आपणा राह समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ पिच्छे, हरि अगला हाल जणाईआ ।

साहिब सतिगुर दे साचे हिस्से, साची वंड वंडाईआ। बिन भगतां किसे ना दिसे, सुत्ती सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी उंगली रिहा लगाईआ।

गुर अवतारो पीर पैगम्बरो टोकरा होया मूधा, प्रभ आपणे सीस टिकाईआ। अगला भेव दस्से गूझा, पर्दा आप चुकाईआ। ना कोई रहे होर दूजा, इक्को इक्क सरनाईआ। गोबिन्द प्रीती हरि जी झूजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणे नाल मिलाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर वड़ गए वेहड़े, इक्क ध्यान लगाया । पिछले सारे छड्डे झेड़े, झगढ़ा कोई रहे ना राया। सारे कहण असीं हो गए तेरे, तुध बिन नज़र कोई ना आया। चौथे युग मारे फेरे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया।

आओ वेखो भगतन वेहड़ा, श्री भगवान आप वखाईआ। चारों कुण्ट दिउ गेड़ा, चार युग दा लेख मुकाईआ। जिध्धर वेखो नेरन नेरा, नर हरि इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख के चौथी छत, शंका सर्ब मिटाया । भगत भगवान किथे लए रक्ख, आप आपणी गोद बहाया। लक्ख चुरासी खाली हत्थ, वस्त झोली ना कोई भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच रिहा जणाया।

तुहानूं भगत दुआर वखावांगा। नाल लै के अंदर जावांगा। शाह पातशाह आप अखवावांगा। साचा राह इक्क चलावांगा। बण मलाह बेड़ा उठावांगा। वखा थां भेव चुकावांगा। जपा इक्को नाम, शरअ मिटावांगा। प्या जाम, तृसन बुझावांगा। नज़री आए इक्को राम, राम मनावांगा। खेल करा के साचा शाम, रास रचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उंगल सभ नूं आप फड़ावांगा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर उंगली फड़, आपणा आप बंधाया। तूं मेरा मेरा सारे रहे पढ़, इक्को राग अलाया। साहिब सच्चे दा वेख्या घर, जिस घर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहिआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर अंदर आए, हरि सतिगुर नाल लिआईआ । शब्दी शब्द रिहा जणाए, साची सिख्या करे पढ़ाईआ । रल मिल सारे बैठो थाएं, थाउँ भगतां विच्च रखवाईआ। करे खेल बेपरवाहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर बहंदे जांदे, बह बह शुकर मनाईआ । साचा ढोला इक्को गाँदे, गा गा रहे अलाईआ। श्री भगवान दा दर्शन पांदे, पा पा शुकर मनाईआ। चार जुग

दे थक्के मांदे, घर साचे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वेख्या सच्चा घर, जिस घर साचा आसण लाईआ।

पारब्रह्म कहे मेरा सच आसण, इक्को इक्क रखाया। जिस दा बण के दासी दासण, सेवा साची सच कमाया। सो टोकरा मेरा साथण, जिस सीस आपणा आप टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क वडिआया।

नाम कहे मेरा तुटा माण, मनसा रही ना राईआ। मैं जाता तूं बाढी तरखाण, छप्परी छन्न छुहाईआ। तेरा वेख खेल महान, मेरी भुल्ली सर्ब चतुराईआ। शाह पातशाह बण सुल्तान, शहनशाह अखवाईआ। जन भगत दवारे दर दरवेश बण दरबान, आपणी सेव कमाईआ। सिर टोकरा रक्ख भगवान, तैनूं लज्जया ज़रा ना आईआ। मैं जाणया तैनूं सारे सीस झुकाण, झुक झुक तेरी सेव कमाईआ। कलिजुग अन्तम वेख होया हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, मेरी समझ देणी बदलाईआ। मैं जाता मेरी छुहाएं छन्न, छप्पर दएं वडिआया। कलिजुग अन्तम वेख्या तूं ग़रीब निमाणयां नाल गिआ मन्न, मनसा आपणी नाल मिलाया। कर किरपा चाढ़े साचे चन्न, चन्द आपणा नूर रुशनाया । मेहरवान हो के बेड़ा दित्ता बंनू, सिर आपणे भार उठाया। जिस दा संदेस सुणदा रिहा नाल कन्न, तिस दा खेल अक्खीं वेख वखाया । तूं आपणा ठीकरा दित्ता भन्न, जन भगतां ठीक राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा मात कमाया।

धन्ना कहे वेख तेरा हाल, मेरी भुल्ली चतुराईआ। मैं जाणयां तूं मेरा चारें माल, दूजे मिले ना किसे वडयाईआ। कलिजुग अन्तम वेख्या आण, बेपरवाह वड्डा बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणे लए पहचान, भगवन भगतां होए सहाईआ। अणमंगया देवे दान, अनमुली वस्त झोली पाईआ। प्रगट हो विच्च जहान, पारब्रह्म प्रभ खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ।

धन्ना कहे मेरा तुटा माण, अभिमाण रिहा ना राईआ। मैं वट्टे विच्चों पाया भगवान, कलिजुग अन्त बिन वॅटिउँ गुरमुखां नज़री आईआ। की तैनूं प्रेमी कहां कि शैतान, शरअ सभ दी दिती तुड़ाईआ। तेरा वेख खेल महान, सभ दी अक्ख शरमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना तेरे अग्गे रिहा बलवान, बल सभ दा खीण कराईआ। सारे कहण तेरी मन्नी आण, बैठे सीस झुकाईआ। भगत कहण जिंनां चिर तूं ना मिलें आण, तेरी परवाह ना कोई रखाईआ। एसे कारन प्रभ भगतां देवे दान, दाता आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

कबीर कहे क्यों साडे नाल कीता धोखा, धुख धुख जीवण जगत बिताईआ। कलिजुग अन्तम मार्ग लाया सौखा, इक्को नाम समझाईआ। जो सोहँ भरे तेरे नाम दा हौका, तिस जम नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिती माण वडयाईआ। सुण कबीर भगत जोलाह, जलवा हरि जू आप जणाइंदा। ओस वेले तुसां गुरूआं कोलों लम्भया मेरा नां, रामा नंद पल्लू जगत फड़ाइंदा। एस वेले मैं सिधा मिलां आ, राह विच्च ना कोई अटकाइंदा। जिस वेले चाहां फड़ां बांह, रातीं सुत्यां गले लगाइंदा। गुरसिख कोई ना करे ना, मुखड़ा मुख ना कोई भवाइंदा। किसे नूं कहां पिता किसे नूं कहां

मां, किसे नूं बिन कुखों गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाइंदा।

कबीर कहे एह नहीं चंगा, चंगी तरां समझाईआ । की कदे भगवान बणे बन्दा, बिन बन्दगी खेल कराईआ। गौणा वजौणा सुणौणा तेरा धन्दा, धुनकी आपणे हत्थ रखवाईआ। कोई सुजाखा कोई अन्धा, किसे अक्ख खुल्हाईआ। कोई विआहा कोई कवारा कोई रंडा, कन्त सुहाग कोई हंढाईआ। किसे वखाया अद्धविचकार डण्डा, किसे उप्पर चाढ़ मूंह दे भार सुटाईआ। प्रभू तेरे विच्च बड़ा घमंडा, तूं आकड़ख़ान अखवाईआ। जिंनां चिर कोई तेरा ना गावे छन्दा, तैनूं खुशी कदे ना आईआ। तूं पा के आपणा फंदा, प्रेमी सारे लएं फसाईआ। तेरा खेल विच्च नवखण्डा, सत्त दीप तेरी वडयाईआ । तेरा प्रकाश विच्च ब्रह्मण्डा, पुरी लोअ तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, बेअन्त बेअन्त बेअन्त अखवाईआ।

कबीर मेरा खेल अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। कोटन कोटन ला कम्म, करनी करता आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी बेड़ा बंन्ह, साचा खेल खलाइंदा। कलिजुग अन्त खेल भगवन, आपणी कल धराइंदा। मेहर नज़र नाल बेड़ा बंन्ह, बिन भगतीउँ पार कराइंदा । जिन्हां मेरा नाम लिआ मन्न, तिन्हां अक्खर ना कोई समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को वार सभ नूं दित्ता दान, भगत दुआरे कर परवान, वड्डुयां छोटयां बुढुयां बालां अन्त तेरे नाल मिलाइंदा।

पैहला टोकरा हस्सदा, प्रभ साची सेव कमाईआ। दूजा टोकरा नस्सदा, भज्जे वाहो दाहीआ। तीजा टोकरा दस्सदा, अबिनाशी करता भार उठाईआ । चौथा टोकरा कहे मैं सीस उत्ते वसदा, जगदीश रिहा सुहाईआ। पंजवां टोकरा कहे मैं खेल कीता इक्ठ दा, इक्ठे इक्को घर बणाईआ। लहणा दबाया तीर्थ अठसठ दा, भगत दरवाज़े दिती वडयाईआ। जो सीस दहलीज़ उत्ते रक्खदा, तिस मिले सच्ची सरनाईआ। एथे मेला तीजी अक्ख दा, दोए नैण शर्म रखवाईआ। साहमणे शहनशाह सच्चा वसदा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। बोले बोल इक्क अलक्ख दा, अलक्ख निरञ्जण जणाईआ। ग़रीब निमाणयां दी पत्त रक्खदा, दर आयां दए सरनाईआ। करे खेल तरखाण जट्ट दा, वड दाता बेपरवाहीआ। सौदा वखाए साचे हट्ट दा, इक्को नाम विकाईआ। मिल्या मेल भगवान भगत दा, अग्गे पिच्छे ना होए जुदाईआ। नाता तुट्टया बूंद रकत दा, दस दस मास ना अगन तपाईआ। खैहड़ा छुट्टया झूठे जगत दा, सतिगुर सच करी कुड़माईआ। वेला गिआ सोग हरख दा, चिन्ता ग़म ना कोई सताईआ। कर किरपा प्रभ आपणे आपे परख दा, पारखू इक्को फेरा पाईआ। मेहर नज़र मेघ बरसदा, सांतक सति कराईआ। भगत अद्धविचकार ना कोई अटकदा, फड़ बाहों पार कराईआ। चार जुग जो गुर अवतार पीर पैगम्बर रिहा भटकदा, तिस आपणा घर वखाईआ। एहो लेखा सिधी सड़क दा, बिन साहिब दूजा नज़र कोई ना आईआ। श्री भगवान जन भगतां दे दरस नूं तरसदा, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंजवां टोकरा रिहा जणाईआ।

टोकरा कहे मेरी वेखो ताकत, ताकतवर अज़माईआ। सीस धरया बिन लयाकत, दिती माण

वडयाईआ। मैं सभ नाल करां शरारत, सिर ग़रीबां भार टिकाईआ। अग्गे ग़रीब तरने प्रभ दी मारफ़त, हरि जू आपणी दया कमाईआ। कोई भेव ना पाए आरफ़, पर्दा सके ना कोई खुल्ल़ाईआ। अज तों मेरी मुक्की शरारत, ग़रीबां होया आप सहाईआ। लेखा चुकाया लिख के इबारत, अव्वल आपणा नाम जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फड़ बाहों मैनूं बंन्ह लिआईआ।

मैं दर ते आया बद्धा, पिछली बदली दिआं करवाईआ। ग़रीब निमाणयां देवां सद्दा, सुणो सज्जण मेरे भाईआ। हुण मैं तुहाद्धा खैहड़ा छड्डा, राज राजानां करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुखीआं दुःख दित्ता वंडाईआ।

टोकरा कहे प्रभ दित्ता सबूत, दीदा दानिस्ता वखाईआ। सिर चुक्क आप महबूब, ग़रीब निमाणयां नाल मुहब्बत पाईआ। वेखो असल नाल मुकदा सूद, शरअ फ़ी सदी आपणे हुक्म लगाईआ। आप विरोले पाणी दूध, नाम मधाणा विच्च रखाईआ। मैं आपणा कट वजूद, वजा आपणी लई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणे लिआ उठाईआ। जिस वेले मैं सिर ते चढ़या, चाउ घनेरा रखाईआ। वेख वड्डिआई फेर डरया, भय भउ नज़री आईआ। की पता जिस उप्पर खड़या, फेर चरनां हेठ दए दबाईआ। जिस दा ढोला इक्को पढ़या, सोहँ रिहा समझाईआ। अंदर बाहर इक्को खड़्या, उहो नज़री आईआ । गुर अवतार जिस ने फड़या, पैगम्बर आपणी उंगली लाईआ। फड़ बहाए साचे दरया, दर दरबार सुहाईआ। मैं वी आ के चरनी पढ़या, इक्को मंग मंगाईआ। किस कारन मोहे सीस धरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्ल़ाईआ।

टोकरे तेरा नहीं कोई माण, टुक्क टुक्क तेरी धार बंधाईआ। तेरी मिसाल दिती भगवान, भगवान भगतां सिर उठाईआ। जिउँ तलवार विच्च मिआन, पर्दा उप्पर पाईआ। तिउँ टोकरे तेरे विच्च गुरमुख रक्खे बाल अज्ञाण, सिर आपणे भार उठाईआ। वेखीं करीं ना कोई अभिमान, अभिमानीआं प्रभ देवे धक्का लाईआ। तिन्ह़ां करे परवान, जो आपणा आप गए मिटाईआ। सखीआं मिले सच्चा काहन, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। रातीं सुत्तिआां मिले आण, फड़ बाहों गले लगाईआ। जे जगत करे पछाण, नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत दरवाज़ा भगवान राजा रय्यत गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब बणाईआ।

पंज शब्द दा इक्को रस, जन भगतां दए खवाईआ। बिन खेड़िउँ सारे गए वस, श्री भगवान मन्दर इक्क सुहाईआ। जन्म कर्म दा मेटिआ फट, पट्टी आपणे नाम बंधाईआ। पंज जैकारे जो जन लए रट, भगत दरवाज़े सीस झुकाईआ। तिन्ह़ां साहिब मिले समरथ, आपणी गोद बहाईआ । सिर ते रक्खे दोवें हत्थ, मेहर नज़र टिकाईआ। लोकमात विच्चों बूटा पट्ट, सचखण्ड दुआरे दए लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा होए सहाईआ।

पंज वार दा पंचम भोग, श्री भगवान आप लगाइंदा। गुरमुखो तुहाद्धा कटे आप जोग, जुगत तुहाद्धी आपणे विच्च छुपाइंदा। तुहाद्धा जन्म जन्म दा कटया रोग, रोगी गुरसिख नज़र कोई ना आइंदा । तुहाद्धे नाल करया संजोग, नाता आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। अग्गे कदे ना होए विजोग, सद आपणे रंग रंगाइंदा। देवे दरस आप अमोघ, अनमुलड़ी दात वरताइंदा।

मैं तुहाढ्ढी रक्खी ओट, तुहानूं आपणी ओट जणाइंदा । भगत दुआरा साचा कोट, जिस मन्दर डेरा लाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों खोज, गुरमुख आपणा मेल मिलाइंदा। गोबिन्द किहा अमतोज, कहजै कहणा कोई ना पाइंदा । तुहाढ्ढा प्रभ दर्शन करे रोज़, तुहानूं कदी कदी दरस वखाइंदा। एह वी साहिब दे चोज, जिउँ भावे तिउँ कार कमाइंदा। एसे कर के तुहाढ्ढा चुकया बोझ, भार प्रेम नाल वंडाइंदा। हुण कर लउ होश, सच सच समझाइंदा। तुहाढ्ढा काया चंमड़ा बदलया पोश, पिछला लेखा मुकाइंदा। प्रेम विच्च होवो मदहोश, मधुर धुंन सुणाइंदा । बेशक सारे सौं जाओ हो खामोश, फड़ बाहों पार कराइंदा। भगतां उत्ते कोई ना लाए दोश, निरदोशे आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम इक्को घर वखाइंदा।

कुझ दे विच्च रक्खया कुझ, कुझ कुझ विच्चों कढ्ढाईआ। जेहड़ा तुहाढ्ढी रमज़ रिहा बुज्झ, सो तुहानूं रिहा समझाईआ। जो रक्खया आपणे कोल कुझ, सो कुझ तुहाढ्ढी झोली पाईआ। तुसीं मेरे नाल गए रुझ, मैं रुची तुहाढ्ढे विच्च टिकाईआ। जे सच्ची लउ पुच्छ, बिन पुच्छिआं बदो बदी रिश्ता रिहा बंधाईआ। तुहाढ्ढा प्रेम वेख होया खुश, खुशी तुहाढ्ढी झोली पाईआ। धन्न भाग जे तुसीं समझे कुझ, कोझापन गवाईआ। सृष्ट सबाई मूल ना सकी बुज्झ, प्रभ की की खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुझ कुछ नाल मिलाईआ। (१४ चेत २०२० बि)

दरवाज़ा कहे मेरी आसा पूरी, प्रभ पूरन आस कराईआ। सेवा करां दर हज़ूरी, हाज़री आपणी लेखे लाईआ। दर्शन करां जोत नूरी, नूर नुराना इक्को नज़री आईआ। जिस दे पिच्छे नानक मोढे चुक्की भूरी, लोकमात फेरा पाईआ। सो साहिब जन भगत दुआर करे मज़दूरी, आप आपणा माण गवाईआ। मैं वेखी खलकत कूड़ी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। बिन हरि चरन मिले ना सच्ची धूढ़ी, टिक्का नाम ना कोई लगाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों इक्को कम्म ज़रूरी, हरिजन ज़रूरत पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ।

मेरी पुंनी आसा आस, आस रही ना राईआ। मेरी बुझी पिछली प्यास, प्यास ना कोई जणाईआ। प्रभ मिल्या शाहो शाबाश, शहनशाह इक्को नज़री आईआ। कर किरपा दित्ता साथ, मेरा संग निभाईआ। लहणा चुक्कया त्रिलोकी नाथ, अनाथ अनाथां दए वडयाईआ। खेले खेल पुरख समराथ, समरथ दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर वखाईआ।

आसा पूरी होई मात, मिल्या हरि भगवाना, धुरदरगाही दिती दात, बणाया धर्म निशाना, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण मार झात, अंदर वसे नौजवाना। सद बैठा रहे इकांत, मेहरवान मर्द मरदाना। चरन कँवल बंने नात, भगत भगवान कर परवाना। साहिब सज्जण बणया साक, सगला संग रखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप वाली दो जहाना। आसा पूरी होई, प्रभ दया आप कमाईआ। बिन भगत ना जाणे कोई, सुती सर्ब लोकाईआ। बिन भगत ना मिले ढोई, लक्ख चुरासी नैणां नीर वहाईआ।

बिन भगत सुरत ना जागे सोई, भेव अभेद ना कोई खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

आसा पूरी करी आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। मेरे उत्ते लिखे जाप, आपणा नाम वडयाईआ। हरि संगत सच्चा देवे साथ, सगला संग निभाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, निरगुण नूर चन्द रुशनाईआ। चार वरन इक्क जमात, जो मेरे अंदर चरन टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्को लाईआ।

मेरी सेवा गई लग्ग, श्री भगवान आप लगाइंदा। धुर फ़रमाणा दस्से सूरा सर्बग्ग, शाह सुल्तान दया कमाइंदा। पीर पैगम्बरां जिस कराया हज्ज, गुर अवतारां मन्दर इक्क वखाइंदा। पिछला नाता गए तज, अगला रंग रंगाइंदा। हरि भगत दुआरे बहे सज, सच सिँघासण आसण लाइंदा। ग़रीब निमाणयां परदे लए कज, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा।

दरवाज़ा कहे मेरा मिटिआ दर्द, दुःख रिहा ना राईआ। प्रगट होया प्रभ मरदाना मरद, वड मरदानगी आप कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जिस पिछली फोली फ़रद, लेखा मंगया थाउँ थाईंआ। अन्तम सभ दी भगत दुआरे आ के पुगी नरद, घर इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ।

आसा पुनी चाउ घनेरा, पाया हरि अबिनाशा। नाता जुड़या तेरा मेरा, सेवक बणया दासी दासा। नव नौं चार वेख्या गेड़ा, भेव अभेद पृथ्मी अकाशा। निरगुण निरवैर आया नेड़ा, शाहो भूप शाहो शाबाशा । भगत दुआर वसाए खेड़ा, सति सतिवादी देवे साथा। सतिगुर हो के बंने बेड़ा, मण्डल पावे इक्को रासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरी पूरी करे आसा।

पूरी आस होई दर, दर वज्जी वधाईआ। पिछला सभ दा लथ्था डर, भय अग्गे ना कोई रखाईआ। श्री भगवान किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिआंदे फड़, शब्दी डोर रखाईआ। धुर संदेसा दित्ता वर, वर इक्को इक्क समझाईआ । दरबान हो दरवाज़े खड़, खड़ग हत्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वडयाईआ।

दरवाज़ा कहे मोहे मिल्या माण, अभिमाण ना कोई रखाया। किरपा कर श्री भगवान, मेरा लेखा पूर कराया। नौं दस दा इक्क निशान, सोलां सोलां वंड वंडाया। इक्की नौं कर परवान, परवाना गुरमुखां हत्थ फड़ाया। उप्पर लेख लिखे महान, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार कराया। हरि संगत साचा देवे दान, दाता दानी इक्को आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाया।

दरवाज़ा कहे प्रभ करनी करता, करनहार अखवाईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, जीवण मरन खेल वखाईआ। निरभौ हो कदे ना डरदा, भय सर्ब वखाईआ। भगत भगवान नित नवित्त फड़दा, फड़ बाहों गले लगाईआ। आत्म सेजा साची चढ़दा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। करे खेल नरायण नर हरि दा, हरी हरि आपणी कल धराईआ। दर दरवेश बणे बरदा, फ़रमाबरदार अखवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी

घाड़न घड़दा, घड़ घड़ आपे वेख वखाईआ।

वेखो मेरा घाड़न घड़िआ, दर दरवाज़ा रिहा जणाईआ। बद्धक लेखा अग्गे धरया, लहणा मूल चुकाईआ। करे खेल अगम्म अपरया, अपरम्पर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्क लगाईआ।

मैं सेवा सच कमावांगा। दर दरबान इक्क अखवावांगा। श्री भगवान दा हुक्म बजावांगा। जन भगतां राह तकावांगा। दूरों वेख खुशी मनावांगा। नेड़े औंदिआं अक्ख खुल्ह़ावांगा। हो प्रतक्ख अग्गों जणावांगा। बोल अलक्ख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ढोला गावांगा। साचा मार्ग इक्क दस्स, चार वरनां पन्ध मुकावांगा । प्रेम प्यार करां हस्स, सोहँ हँसा रूप धरावांगा। अमृत आत्म दे रस, रस इक्को मुख चवावांगा। सति सन्तोख धीरज दे सति, धर्म रीती इक्क दृढ़ावांगा। आत्म परमात्म दे मत, साची सिख्या इक्क रखवावांगा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत्त लेखे लावांगा । प्रेम डोरी पा नथ, बंधन इक्को इक्क जणावांगा। सुनेहुड़ा देवां जोड़ो दोवें हत्थ, बन्दना करनी इक्क दरसावांगा। अद्धविचकार टेको मथ्थ, मस्तक धूड़ लगावांगा। प्रभ चरन ध्यान लाओ अक्ख, अक्ख होर ना किसे मिलावांगा। मेल मिलावां पुरख समरथ, सेवा साची आपणी आप रखावांगा। दर दुआरिउँ अग्गे नट्ठ, सिधी सड़के आपे पावांगा। जन भगतो ना जाणयो गवार जट्ट, नर नरायण इक्को इक्क वखावांगा। अग्गे वेखो खुल्ह़ा हट्ट, नाम वस्त इक्क वखावांगा । लेखा चुक्के सीआं साढ्ठे तिन्न हत्थ, साढ्ठे तिन्न हत्थ सिँघासण आसण इक्क जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दित्ता सच वर, जन भगतां सेव कमावांगा।

जन भगतां अंदर लंघावांगा। पैहलों सभ दा सीस झुकावांगा। नीवीं नज़र फेर रखवांगा। आपणा फ़र्ज़ तोड़ निभावांगा। जुग चौकड़ी कज़ झोली पावांगा। जिन्ह़ां कूड़ कुड़िआरी भैड़ी मरज़, तिन्ह़ां मुफ़तो मुफ़ती हटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दित्ता सच्चा वर, हरिजन साचे अंदर लयावांगा।

हरिजन साचे अंदर लंघाऊंगा। सोहँ ढोला सर्ब सुणाऊंगा। श्री भगवान नाल मिलाऊंगा। सच सिँघासण कोल बहाऊँगा। शब्द इशारे नाल जणाऊंगा। जो रहे मात कवारे, वेले अन्त कन्त मिलाऊंगा । भगत भगवान वसण इक्क चुबारे, मंज़ल साची पन्ध मुकाऊंगा। साचे मन्दर करन दीदारे, जलवा नूर नूर वखाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, दर बह के सेव कमाऊंगा।

जन भगत अंदर लँघणगे। प्रभ दरस इक्को मंगणगे। दर आ मूल ना संगणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दित्ता साचा वर, दर आए फेर ना भज्जणगे। जिन्ह़ां अंदर आपणे वाड़ांगा। तिन्ह़ां सच महल्ले चाढ़ांगा। लेखा चुके डूंघी ग़ारां दा। नाता तुटे झूठिआं यारां दा। मेला होए नार कन्त भतारां दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे आर पारां दा।

जिस वेले हरि संगत बण के औणगे। जिस वेले सीस दरवाज़े विच्च झुकौणगे। साहिब सतिगुर दा ढोला गौणगे। अमरापद पौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को दर सुहौणगे।

चवर कहे मैं रिहा भुल्लदा, तेरी सार प्रभू ना पाईआ। गुर अवतारां सिर ते रिहा झुलदा,

आपणा माण वधाईआ। खुशी अंदर फलदा रिहा फुल्लदा, लोकमात मिली वडयाईआ। कलिजुग अन्तम वेख्या बूटा हुलदा, मेरी रमज़ मैनूं समझाईआ। तूं हैं कौण केहड़ी कुल दा, की तेरी चतुराईआ। लोकमात अजे वी भुल्लदा, भुल्ले समझ ना आईआ। सच दुआरा साहिब दा खुल्लदा, खुल्ला हट्ट चलाईआ । बिन चरन प्रीती कोई ना मुल दा, करता कीमत कोई ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ । चवर वेख होया हैरान, नेत्र नैण नीर वहाईआ। जिस सिँघासण उप्पर बहे भगवान, तख़त निवासी सोभा पाईआ । मैं मूर्ख बण अणजाण, क्यों मुगध कार कमाईआ। जिस मेरी बणत बणाई विच्च जहान, शाह पातशाह वड्डी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा छुपाईआ।

चवर रो विरोले नीर, नैणां छहबर लाईआ। वेख खेल होया दिलगीर, धीरज धीर ना कोई धराईआ। जिस दर दे बरदे बणे पीर, पैगम्बर ढेरीआं ढाहीआ। जिस दी चोटी वेखी ना किसे अख़ीर, मंज़ल हद्द ना किसे मुकाईआ। जिस दी सच समझी तस्वीर, नूर ज़हूर इक्क रुशनाईआ। सो साहिब गुणी गहीर, साचे तख़त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच्च रखवाईआ।

चवर हो दिलगीर, इक्क ध्यान लगाईआ। बेअन्त बेनज़ीर, तेरी मेहर मेहरवान इक्को मंग मंगाईआ। वड दाते गुणी गहीर, गहर गवर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, ढह पिआ सरनाईआ।

चवर कहे मेरा मिटया भुलेखा, भुल्ल रही ना राईआ। जिस वेले तेरा दर्शन देखा, नेत्र नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन आदेसा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहण नरेसा, नर नरायण सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वेख्या सच्चा घर जिस दर सारे तेरा चरन ध्यान लगाईआ। सारे तेरे चरन करन ध्यान, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। मेरे नैण नैण शरमाण, तेरी सेव ना कोई कमाईआ। झुलदा रिहा विच्च असमान, आपणा माण वधाईआ। तूं साहिब सभनां दा भगवान, तेरे उत्ते हत्थ ना कोई रखवाईआ। मैं भुल्लया रिहा अणजाण , तेरी सार कोई ना आईआ। कर किरपा दे दान, वस्त अमोलक झौली पाईआ। तेरी चरनीं डिगा आण, तक्की इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, प्रभ तेरी आस रखवाईआ।

श्री भगवान दस्से एक, एकँकार जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सभ मेरी रक्खे टेक, दूजी ओट ना कोई रखवाईआ। उठ चवर नेत्र पेख, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। जिन्नां नाल माण वड्डिआई कर के रक्खदा रिहों हेत, आपणा संग निभाईआ। सो सारे हरि भगतां विच्च रल के बैठे चौदां चेत, सिर चवर ना कोई झुलाईआ। अग्गे दस्से आपणा भेत, पारब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वडयाईआ।

सुण चवर ला ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाइंदा। श्री भगवान दा सच ज्ञान, बिन अक्खरां आप पढ़ाइंदा। साचे दर भुल्ल ना जावीं बण अणजाण, बाली बुद्ध आप वडिआइंदा। धुर

संदेसा देवे कान, अनरागी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा।

साचे चवर सिर उत्ते ना औणा, प्रभ सीस हत्थ ना किसे फड़ाईआ। साढ्ढे तिन्न हत्थ पिच्छे दर्शन पौणा, दूरों दूरों सीस झुकाईआ। कली कली कलमा ढोला गौणा, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। तेरा मुख चरनां विच्च रखौणा उप्पर अक्ख ना कोई उठाईआ। सच दुआरे माण दवौणा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अगला हुक्म आप मनौणा, हुक्म हाकम इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी सेवा सच्ची इक्क दरसाईआ।

तेरी सेवा सच लगाएगा। धुर फ़रमाणा हुक्म जणाएगा। फड़ बाहों राहे पाएगा। उप्पर झुल्लदे नूं, चरन दवार वखाएगा। कलिजुग जीवां दे हत्थां विच्च रुलदे नूं, भगतां हत्थ फड़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क जणाएगा। साची सेवा तेरी चौर, चवर आप लगाईआ। प्रभ वेखणहारा करे ग़ौर, गहर गम्भीर वड्डी वडयाईआ। करे बिध अवर की और, आपणी धार चलाईआ। भगत भगवान दे साचे कौर, देवणहार आप वडयाईआ। एनां नाल मिल के तेरा कारज जाए सौर, बिन भगतां तेरी सार कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सेवा इक्क दरसाईआ। तेरी सेवा साची लाएगा। श्री भगवान दया कमाएगा। धुर फ़रमाणा इक्क जणाएगा। तेरा नेत्र नैण खुल्ह़ाएगा। साचा खेतर इक्क वखाएगा। पंदरां चेत्र बणत बणाएगा। बण हेतड़ हित वधाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी ख़ाहश ना कोई रखाएगा।

चवर झुलौण दी ख़ाहश ना लोड़, सीस उप्पर फेरा कोई ना पाईआ । शब्द इशारे नाल रिहा होड़, इक्को वार जणाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकया दौड़, आपणा फेरा पाईआ। साहिब सतिगुर अन्त गिआ बौहड़, दे मत समझाईआ। जे सेवा करन दा शौंक, शहनशाह होए सहाईआ। भगत दुआरे गिउँ पहुंच, तेरा लेखा लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वडयाईआ।

चवर, जद भगतां नूं सवावांगा। तेरी सेवा सच्ची लावागा। गुरमुखां उत्ते तैनूं फिरावांगा। सोहणयां लालां दे मुख वखावांगा। दुखीआं दे दुःख मिटावांगा। आपणी गोदी चुक्क, आपणे गले लगावांगा। फेर तैनूं लवां पुछ, चरनां हेठ दबावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा बल आप जणावांगा।

सिर उत्ते चवर दी ना कोई रीत, श्री भगवान चवर ना कदे झुलाइंदा। तेरी तेरे प्यारयां नाल प्रीत, प्रीतीवान आप अखवाइंदा। जन भगतां वेख होणा ठंडा सीत, सीतल धार वहाइंदा । जिंनां चिर, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ना गावें गीत, तेरा तन्द तन्द तेरा बन्द बन्द कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा।

तेरे चरनां हेठां लुकांगा। प्रभ तेरे भगतां कोलों पुछांगा। एनां नाल कदी ना रुस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरनां उप्पर झुकांगा। तेरे चरनां सीस झुकाऊंगा। पिछला माण मिटांऊंगा। दोए जोड़ वासता पाऊंगा। तेरे

भगतां दी लोड़, इक्को मंग मंगाऊंगा। एनूं नाल देवीं तोर, पिच्छा वेखण कदी ना आऊँगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाऊंगा।

दर तेरे अलख जगावांगा। ख़ाली झोली अग्गे डाहवांगा। नेत्र नैणां नीर वहावांगा। पल्लू पा गल पिछली भुल्ल बख्शावांगा। सच दुआरा तेरा मल्ल, चरन धूढ़ी टिक्का मस्तक लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्क वर, तेरे भगतां सेव कमावांगा। साचे भगतां सेव कमाऊंगा। चारों कुण्ट उठ उठ जाऊँगा। लक्ख चुरासी विच्चों लुक लुक, दर्शन पाऊंगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बह के सीस झुकाऊंगा।

तिन्न लोक दा बणया दाता, गुर अवतारां दए वडयाईआ। कलिजुग अन्तम वेखे खेल तमाशा, आपणा बल वधाईआ। उनी साल प्रभ करदा रिहा हासा, भेव ना किसे जणाईआ। बीस बीसे सभ दा बदले पासा, उलटी कार कमाईआ। सति धर्म दी चले शाख़ा, शहनशाह चलाईआ। जन भगतां भगत दुआरे बणे राखा, रक्खया करे थाउँ थाईंआ। सिर ते झुल्लण वाला चरन कँवल बणया दासा, होए निमाणा मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। भगत दुआरे ला दरवाज़ा, श्री भगवान दया कमाईआ। लहणा दे ग़रीब निवाज़ा, ग़रीबां होए सहाईआ। लंमा पै पै मारे वाजां, जन भगतो औणा चाईं चाईंआ। तुहाढ़े पिच्छे रच्या काजा, लोकमात खेल कराईआ। भूपत भूप राजन राजा, शहनशाह वेस वटाईआ। गोबिन्द बेदाअवा पाढ़या माझा, अन्तम लेखा पुरख अकाल मुकाईआ। वेखणहारा दो दोआबा, दोहरी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेव कमाईआ।

दरवाज़ा बण लथ्था भार, पिछला कज़ चुकाया। भगवान कहे भगत प्यार, प्रेम प्रीती राह चलाया। गृह मन्दर मंगलाचार, सखीआं ढोला गाया। शौह मिल्या कन्त भतार, सेज सुहञ्जणी आप हंढाया। नाम शब्द बोल जैकार, अगम्मी नाद सुणाया। गुरमुख सज्जण लए तार, फड़ बाहों पार कराया। जिनूं सेवा कीती विच्च दरबार, दर लेखे लए लगाया। पंदरां दिवस सति विहार, इक्क पंज जोड़ जुड़ाया। इक्क इकल्ला एकँकार, पंचम रूप फेरा पाया। इक्क पंज दा सत्त आधार, धर्म जड़ लगाया। चोटी चढ़ आप निरँकार, हरिजन वेख वखाया। सीस धड़ दे आधार, प्रेम प्रीती भार चुकाया । हरिजन गुरमुख गुरसिख सन्त भगत इक्को रंग रंगे पुरख नार, बिरध बाल आपणी गोद सुहाया। पूरब लहणा आप विचार, देणा सभ दा हत्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा झोली पाया।

सेवा कराई सर्ब गुणतास, गुणवन्ता दए वडयाईआ। पिछले जन्म जो रहे उदास, लेखा जन्म आपणे लेखे पाईआ। अग्गे कीती बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना दित्ता तुड़ाईआ। पंदरां दिन प्रभ अंदर वड़या रिहा तुहाढ़े साथ, सिर आपणे भार उठाईआ। अठ्ठे पहर करदा रिहा तुहाढ़ी याद, प्रेम प्रीती ढोला गाईआ। फिर वी तुहाढ़े अग्गे करे फ़रयाद, मेरे पिच्छे दुःख ना कोई उठाईआ। एह सिखो तुहाढ़ी दात, तुहाढ़ी झोली पाईआ। पिच्छों सारे कहण प्रभ दी करामात, जो अचरज लेखा गिआ लिखाईआ। फिर लभ्भयां किसे ना आवे हाथ, ख़ाली

हत्थ फिरे लोकाईआ। दाता हो के बणया दास, बण सेवक सेवा सच कमाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी पुंनी आस, प्रभ पूरन मिल्या बेपरवाहीआ। सोलां चेत्र तुहाढ्ढे अग्गे करे अरदास, साढ्ढे पंज वजे आपणा फेरा पाईआ। पिछला वक्त कराए याद, जिस वेले पुठ्ठा हो के लिखत लिखाईआ। अग्गे तुहाढ्ढा वज्जे नाद, राग इक्को इक्क शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दा लहणा रिहा चुकाईआ। (१५ चेत २०२० बि)

दरवाज़ा कहे मैं बड़ा बलवान, बिन मेरे अंदर लंघ कोई ना जाईआ। जिस दा पहरेदार बणया श्री भगवान, आपणी सेव कमाईआ। अंदर बाहर वेखे मार ध्यान, सज्जे ख़ब्बे नैण उठाईआ । अंदर वड़े ना कोई शैतान, गुरमुख साचे रिहा लंघाईआ। पैहलों आ के बोले सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज जैकारे दए लगाईआ। फिर रक्खे चरन ध्यान, अग्गे जावे वाहो दाहीआ। नज़री आए नौजवान, शाह पातशाह आसण लाईआ। जिस दा लेखा बेमिसाल, मिसल सके ना कोई बणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अंदर लए बिठाल, साहिब वेखे चाईं चाईंआ। आओ हरि का करो जलाल, जलवा नूर रिहा रुशनाईआ। कितों लभ्भे ना गुज़री लाल, लालन आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ ।

चोबदार बण खलोता, ख़ालक ख़लक सेव कमाइंदा। हत्थ विच्च फड़ के नाम सोटा, आप आपणा बल धराइंदा। गोबिन्द तेरा पिछला मेटे रोसा, आ वेख रुस्सयां सर्ब मनाइंदा। हुण नहीं अग्गे देंदा धोखा, धूएं धुखदे आपणे विच्च छुपाइंदा। जिन गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणे मिलण दा दित्ता मौका, लोकमात सर्ब बुलाइंदा । उह गुरमुखां राह ना दस्से औखा, फड़ उंगली नाल चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक आपणी दया कमाइंदा।

सेवक फिरे चोबदार, दर दरवाज़े फेरा पाईआ। ख़बरदार होवे सर्ब संसार, सोया कोई रहण ना पाईआ । होका देवे वारो वार, चारों कुण्ट रिहा सुणाईआ। आओ जिस ने लँघणा पार, बिन बेड़ीउँ पार कराईआ । वीह सौ वीह बिक्रमी जगत वसाखी रोवे धाहां मार, गोबिन्द वसाखी गुरमुखां रंग चढ़ाईआ। खेल करे आप निरँकार, दो जहानां दए वडयाईआ। साकी बण के सांझा यार, अमृत जाम रिहा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दरवाज़ा कहे चौकीदार सोहणा, आलस निंदरा विच्च ना आइंदा। जे मैं वेखां मैनूं लग्गे मोहणा, मेरे नाल मुहब्बत पाइंदा। मैनूं भुल्ल जाए जागणा सौणा, आलस निंदरा ना कोई रखाइंदा। मैं वी ओस दा ढोला गौणा, जो मेरी सेव कमाइंदा। अन्तम एसे जोगा होणा, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। जन भगतां पाप कलेवर धोणा, एसे कर के बाहरों पंज जैकार लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा।

जो भगत आण एथे झुकेगा। अगला पिछला पैंडा मुक्केगा। साहिब सतिगुर आप पुछेगा। निरगुण लुकाइआं कदे ना लुकेगा। लुटाइआं कदे ना लुटेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे बह के पुच्छेगा।

वेखो फिरदा चोबदार, होका दे दे जगाईआ। सारे हो जाओ ख़बरदार, बेख़बर आप जणाईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कंदर डेरा लाईआ। जिस दे पिच्छे मन्दर मस्जिद शिवदुआले मथ्थे रगढ़दा रिहा संसार, सार किसे ना आईआ। जिस दे पिच्छे पत्थरां मूरतीआं उत्ते पौंदे रहे हार, काग़ज़ कलम शाही लिखवया लेख पढ़ पढ़ जगत सुणाईआ। जिस दे पिच्छेगुरू मन्नदे रहे जगत अवतार, दर दर सीस झुकाईआ। तिस साहिब दा करो दीदार, दर आए मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।

होका देवे मारे कूक, उठो मेरे भाईआ। कलिजुग अन्त ना सौणा घूक, सुत्यां हत्थ कुछ ना आईआ। गोबिन्द कहे हुण ना बणिओ कपूत, पुत्त पिता गोद सुहाईआ। नेत्र खोल्हे वेखो इक्को तागा इक्को सूत, इक्को शब्दी तन्द बंधाईआ। जिस दा लेखा चार कूट, दह दिशा नाम वडयाईआ। क्यों उस दे कोलों गए रूठ, रुठिआं फेर ना कोई मनाईआ। काया चोला फेर नहीं लभ्भणा पंज भूत, माणस जन्म हत्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।

दरवाज़ा कहे दरबान बड़ा चुस्त, चुकन्ना हो के फिरे वाहो दाहीआ। मेरी नंगी होण ना देवे पुशत, चारों कुण्टां वेख वखाईआ। उस दा अंग अंग रिहा फड़क, बल आपणा रिहा समझाईआ। एह लेख चुकाए तुरत, जो चल आए सरनाईआ। उस साहिब नूं मिल के किसे होर दी रहे ना हुटक, नेत्र ध्यान ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेव कमाईआ। (१ वसाख २०२० बि)

दरवाज़ा कहे पुरख अबिनाशन, मेरा संग रखाईआ। मेरे विच्च लग्गा सिँघासण, संगी सेव कमाईआ। ना संध्धया ना कोई आथण, रात अन्धेरी ना कोई जणाईआ। ना कोई प्रभाती दिसे साथण, सरगी वेला ना कोई वडयाईआ। ना कोई निमाज़ ना निमाज़न, हाजी हज्ज ना कोई कराईआ। ना कोई पाठी ना कोई पाठण, पाठशाला ना कोई वखाईआ। ना कोई तट्ट ना कोई ताटन, सरोवर नज़र कोई ना आईआ। ना कोई किनारा ना कोई घाटन, घाट मिले ना कोई वडयाईआ। प्रभ इक्को आया साचे पातण, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। लक्ख चुरासी विच्चों रक्खण, रक्खया करे हर घट थाईंआ। सतिजुग दा साचा मार्ग दस्सण, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर दरवेश इक्क अखवाईआ।

दर दरवेश बण दरबान, सेवा कर श्री भगवान, खण्डा खिचे विच्चों मिआन, लेखा जाणे दो जहान, जोधा सूरबीर बलवान, बण के मर्द मर्द मरदान, भगतां देवे नाम परवाना, पारब्रह्म परम पुरख परमेश्वर इक्को करे पढ़ाईआ। सिँघासण कहे मैं गिआ डह, दर दुआरे डेरा लाईआ। मैं इक्को भगवान दी होण देणी जै, दूजा नाम ना कोई ध्याईआ। पिच्छे नाम इक्क दूजे नाल मरदे रहे खह खह, दीनां मज़हबां करी लड़ाईआ। हरि का नाम इक्को घर बहे, मन्दर मस्जिद शिवदुआले मद्ध वंड ना कोई वंडाईआ। जो जन रसना जिह्वा कहे, तिस आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

शब्द सिँघासण कहे मैं गिआ डॅठ, आपणे चारे पैर जमाईआ। मेरे कोलों कोई भगत बाहर ना जाए नट्ठ, फड़ के बाहों अंदरे रखाईआ। एसे कर के वीह सौ वीह बिक्रमी कीता कट्ठ, इक्ठे इक्को घर वसाईआ। ना कोई शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश ज़ात पात ऊँच नीच ना कोई दस्सां मित, जो चल आया सरनाईआ। तिन्नां रंगाए आपणी प्रेम रत्त, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। छोटयां वड्डयां सारयां देवां साची मत, वितकरा विच्च ना कोई रखाईआ। मिलो मेल पुरख समरथ, जिस मिलयां दुःख रहे ना राईआ। जे नेत्र वेखो ते खण्डा दिसे हत्थ, जे अंदर वेखो ते जोत नूर रुशनाईआ। जे बाहरों कहो ते कुछ कहण पूरन जट्ट, जे अंदर वड़ के वेखो पुरख समरथ आपणी कार कमाईआ। जे बाहरों वेखो दिसे बाज़ीगर नट, जे अंदर वेखो तां पत साचा रिहा मिलाईआ। जे बाहरों वेखो तां वेखदिआं सारी मारी जाए मत, जे अंदर वेखो ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के सारे जाओ नट्ठ, जे अंदर वेखो महिमा अकथ्थ करे पढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के उबले रत्त, जे अंदर वेखो सच सीतगुर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वज्जे वधाईआ । (१ वसाख २०२० बि)

दुःख रोग सन्ताप : दारू : इस तों परे नहीं कोई धाम। हाज़र हां मैं विष्नूं भगवान। अनन्त जुग में मैं हां रहंदा। वाह वाह कहंदयां सभ दुःख लहिंदा। सोहँ नाम मेरा सतिजुग जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। (११ भादरों २००६ बि)

तीन ताप मारां मैं आप। मेरे सिख दा वड प्रताप। ऐसी प्रीत प्रीतम लाई। इस दी पाहनी ताप सिर लाई। महाराज शेर सिँघ हुक्म एह घल्लया। काला बीर मुहम्मद चल्लया। जिस नूं मारे मेरी आण। तिन को पई संगत की कान। ऐसा एह मंत्र बणाया। तीन ताप का नास कराया। आप उच्चारे प्रीतम सिख प्यारा। दुःख कलेश लाह दे सारा। (११ भादरों २००६ बि)

कोट ब्रह्मण्ड दा दाता आप। आपणा आप कराए जाप । सभ तों वड्डा मेरा प्रताप। जो ना समझे मेरा मुख वाक। तिन को मारे आप तीन ताप। काल विआपे होए दुःख घने। जो ना हुक्म मेरा मन्ने। (१७ मध्घर २००६ बि)

सिख सरन जो मेरी परे। किलविख पाप तिन के हरे। दुबदा मैल मन में धरे। हो निन्दक मेरी निन्दया करे। कुंभी नरक सदा ही जले। धर्म राए दा सदा दुःख भरे। (१८ मध्घर २००६ बि)

सोहँ शब्द सभ गुण होवे। गुणवन्त प्रभ आप, भगत जन रिदे परोवे। सोहँ दित्ता जाप, दुबधा मैल है धोवे। सच्चा शब्द ज्ञान, दुःख दलिद्दर धोवे। नाम मेरे दी बाण, थनीं रोग ना होवे। सोहँ जप के नाम, दुःखी थन है धोवे। सतिगुर होए दयाल, दुःख नष्ट है होवे। फुलबैहरी एह देह नूं बाण। डाहढा रोग सर्ब पछाण। कोई ना इस दी रक्खे खाण। सोहँ शब्द गुर मारया बाण। कीता नास वांग मसाण। पवण पाणी अगनी है जाण। महाराज शेर सिँघ दुःख भञ्जण जाण। (५ वसाख २००७ बि)

गुरचरन सेव जन्म जन्म दे पाप गवाईए। गुरचरन सेव दुःख देह प्रभ गवाईए। (१४ जेठ २००७ बि)

नाड़ी बहत्तर प्रभ रोग गवाए। तप सप पलीत विच्च देह मिटाए। अमका काज़ी कोई नेड़ ना आए। जो आवे, सोहँ शब्द गुर चोट चलावे। तीन ताप ना थिर रहावे। खान पकान ना जीव सतावे। सोहँ शब्द जो रसना गावे। देह अनरोग तुरत हो जावे। ज्ञान बान गुर दर्द चलाया, रोग सोग विच्च देह मिटाए। सोहँ शब्द नाम सच मंत्र दृढ़ाए। काल रूप हो रोग खपाए। ऐसी देवे शब्द वड्डिआई, सिमरत सिमरे सिमर सुख पाए। गुर दा सच दवार देखया जीव कोई ना बिललाए। सभ ते ऊँच अगम्म अपारा, जोत सरूप विच्च सिख समाए। जोत सरूप जगत कल काती जीऊड़ा निर्मल देह नाम कराए। होवे आधार रसन विचार, सोहँ शब्द गुर नाम दिवाए। दुःख निवार आत्म आधार, भगत भंडार महाराज शेर सिँघ सच बचन लिखाए। (३ अस्सू २००७ बि)

संगत करे बेनतीआं, सुण किरपा धर। देही दुःख निवार दे, चल आए दर। चरन हेत प्यार दे, नाम साचा वर। देह रोग गवाईए, कलिजुग लाधा साचा घर। सच घर आईए, सर्ब सुख पाईए, कलिजुग प्रगटे अवतार नर। सोहँ शब्द सुणाईए, दुःख रोग मिटाए महाराज शेर सिँघ आसा वर। आत्म आस बेनती करे। दुःख दलिद्दर निवारे हरे। उधरे सिख सरन जो परे। काया मन्दर दीपक जोत प्रभ धरे। जगे जोत आत्म उजिआरा, गुरसिख मेरा जगत ना मरे। अन्तकाल मिले सच दवारा, महाराज शेर सिँघ सरन जो परे।

सरन परे सभ रोग मिटाए। महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ टिकाए। खण्ड सच सच धाम बिठाए। महाराज शेर सिँघ गुरसिख विच्च जोत मिलाए।

जोत जगत मेरा है चानण। आत्म जोत जन भगत पछानण। सोहँ शब्द प्रभ देवे ज्ञानण। मेरा नाउँ सति निरञ्जण मानण। भगतन भाउ रसना नाउँ बखानण। दुःख मिटाओ गुरचरन ध्यानण। गुरसंगत जगत देवे गुर मानण। गुरसिख कलिजुग उतरे पार, महाराज शेर सिँघ जिन रिदे ध्यानण।

रिदे ध्यान मिले जग दाता। गुरसिख ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म सरूप पछाता। सर्ब गुआए माण मिले आप रघुराता। महाराज शेर सिँघ परउपकारी, गुरसिख सोवे बाहों पकड़ प्रभ आप जगाता।

आत्म जागे प्रभ मिले वडभाग। दुःख नेड़ ना लागे, सोए कर्म जीव के जागे। सोहँ शब्द अनदिन धुन वाजे। भगत जन तन हरि मन्दर वाजे। महाराज शेर सिँघ होए मेहरवाना, ऐसी बणत सिख दी साजे।

दुःख दुःख दुःख गुर दर ते गुआया। दुःख दुःख दुःख गुर झोली पाया। दुःख दुःख दुःख गुर दुःख मिटाया। सुख सुख सुख गुरसिख सागर विच्च तराया। सुख सुख सुख गुरसिखां प्रभ झोली पाया। बेमुखां काले मुख मुख, जिन्नां प्रभ दरस ना पाया। महाराज शेर सिँघ घर सुख सुख सुख, गुरसिखां घर माहि पाया ।

घर माहि मिल्या आप बनवाला। गुरसिखां प्रभ कल रखवाला। बेमुखां होए जगत धुंदाला। गुरसिखां सोहँ मिले नाम सुखाला। भय भयानक महाराज शेर सिँघ होए रखवाला। करे

रछया आप किरपाला। दुःख भंजन आप दीन दयाला। भगत जनां हरि तोड़ जंजाला। देवे तार सिर बाली बाला । साध संगत महाराज शेर सिँघ रखवाला । (२६ अस्सू २००७ बि)

दुखी दर बिललाए दए दुहाईआ। जन्म बिरथा जाए, दर दर ठोकरां खाईआ। दुखीआं दुःख निवार दे, तेरे हत्थ वडयाईआ। करी दर पुकार बिंग कसाईआ। ढठ्ठे हरि दवार, गुण अवगुण ना विचार, ढठ्ठे दर घर घर दर मिलण वधाईआ। कल कलेश कर्म विचार, नाम दान पले पाईआ। दुःखी हो जगत बिललाए, बिन पुत्तरां मावां सदा सवाईआ। दे दिलासा तेरे चरन भरवासा, दे दात दात गुर डाहढे सभ भुक्खयां भुक्ख गवाईआ। दरस तेरा सदा मन उपजे, रक्खणहारे लाज रक्ख वखाईआ । महाराज शेर सिँघ ढह पइओ दवारे, चरन लाग साध संगत रल जाईआ । (२ कत्तक २००७ बि)

निमाणयां प्रभ हो रखवाला। तोड़ जोड़ प्रभ कंठ माला। दुःखी होए जीव बेहाला। आत्म चैन ना मिले गोपाला। हो सहाई महाराज शेर सिँघ दुःख दर्द मिटावण वाला।

दुःख देह तन कर दूर। दान बख्शे जीव चरन धूड़। हड्ड मास नाड़ी पिंजर टुट्ट होया चूर। दुःखां वरखा जिउँ निंमी भूर। महाराज शेर सिँघ किरपा कर, देह दुःख कर जाह दूर। दुःख काया जीव बिललाए। दिवस रैण चैन ना आए। भुल्ला ईशर जप करे हाए हाए। कढ्ढ हड्ड मास नाड़ी तप, सोहँ साचा अमृत पिलाए। महाराज शेर सिँघ सभ किछ तेरे हत्थ, दुःख भंजन देह दुःखड़े लाहे। (५ वसाख २००८ बि)

साचा हुक्म आप लिखाए। ना कोई तोड़े ना कोई मोड़े ना कोई मोड़ मुड़ाए। चरन प्रीती जो जन जोड़े, दुःख रोग कोई नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लए अन्त छुडाए। (१ माघ २००६ बि)

दुःख दर्द तन खाए। मूंह से निकले हाए हाए। अंग अंग बधा ना कोई छुडाए। औखध दारू सच लध्धा, सोहँ नाम रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। दुःख रोग लग्गा तन। सीतल होया ना कदे मन। दिवस रैण ना निकले जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे धीरज बंन्ह।

सिर पैरां विच्च लग्गे अग्ग। सीने खून रिहा वग। काया सारी रही दग। भार ना झल्लण तन पग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर बुझी जोत जाए जग।

आत्म दुःख आपे कढ्ढ। अन्धेरी डूंघी खड्ड। दिवस रैण बैठा रहे मूंह अड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुखड़ा हर दूर कर दर आई निमाणी डड।

दर आए कर परवान। दुःखां पीड़िआ तन जिउँ कोहलू घाण। बधा रहे सदा मन पवण सरूपी विच्च शब्द धर निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सर्ब पछाण। आपे करे सर्ब पछाणा। पवण सरूपी कढ्ढे मसाणा। जिस ने कीआ विच्च टिकाणा। ना कोई दीसे अंन्ना काणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हड्ड हड्ड आप छुडाणा।

पवण सरूप विच समाए। जे कोई वेखे दिस ना आए। दिवस रैण रिहा दुःख वधाए।

दुःखीआं जीव रिहा बिललाए। प्रभ दर बधा छुट्ट ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भंडारा निखुट ना जाए।
मसाण जाए बाण जाए भूत जाए भविख्त जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द स्वास चलाए।
नाड़ी नाड़ी विस स्वास। आप आपणा करे वास। दुःखां रोगाँ करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कर बन्द ख़लास ।
बन्द खलासी आपे कर। चरन दासी आपे कर। दुनियां हासी दूर कर। घनकपुर वासी दुःख दर्द निवार कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तृष्ना भुक्ख निवार कर।
सेवा करे चरन दवारे। तन मन दुखड़े लथ्थे भारे। दर आया हरि काज सवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा जाओ बलिहारे। बलिहारी गुर साचे सूरे। काया रोग कीते दूरे। कटे संगल विच्च हज़ूरे। बधा तन तपे वांग तन्दूरे। हरया करे मन तन, सोहँ शब्द आत्म भरपूरे। प्रभ सुणाए कन्न, उतरे सगल वसूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद रक्खे विच्च हज़ूरे। (१ माघ २००६ बि)

दुःख दुःख दुःख प्रभ दुःख मिटाणा। दुःख दुःख दुःख प्रभ दुःख गवाणा। दुःख दुःख दुःख प्रभ दर रहण ना पाणा। सुख सुख सुख प्रभ सुख उपजाणा। मुख मुख मुख प्रभ साचा सद ही गाणा। जिउँ चन्दन परभास गुरमुख साचे प्रभ साचे आप उपजाणा। आप आपणा करे दास, जोत सरूपी दीप जगाणा। काम क्रोध हो जाए विनास, प्रभ साचा करे सच टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूखम दुःख सर्ब मिटाणा।
निरधन होए प्रभ दर आ। दुखीआ जीव साची दर दरगाह। साचे दर मारे धाह। माया ममता दुःख रोग मिटाए, कोई जाणे नांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए आप मिटाए आप बणाए ढाहे जीव जंत सर्ब बणत रिहा बणा।
एका दुःख आत्म घेर। झिरना झिर हेर फेर। नेत्रां अग्गे होए अन्धेर। ना कोई दिसे संञ सवेर। आया आप भुलाए ना जाणे तेर मेर। कुशटी कुशट उठाए दुःख लग्गा अपेर। प्रभ साचा दृष्ट कराए ना लगाए देर। सुणे पुकार आप दातार, जन आए दर दरबार। साची करे प्रभ आपे कार। काया दुःख दे निवार। ऊपजे सुख दीपक उजिआर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे तार।
जीव आया दर। सरनी गिआ पर। बचन ना जाए हर। काया सीतल प्रभ जाए कर। निहकलंक नरायण नर अवतार। प्रभ साचा सिर रक्खे हत्थ। सर्ब कला सद ही समरथ। आत्म मंगी देवे साची वथ। जुगो जुग प्रभ साचे दी महिंमा अकथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस कराए, दासन दास दास होए जन सीस झुकाए, आप रखाए गुरमुख साचे सिर तेरे हत्थ।
गुरसिखां देवे प्रभ पूरा भरवासा। अप तेज वाए आप बणाए पृथ्मी आकाशा। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत कल प्रभ रक्खे वासा। एका आप जाणे प्रभ अबिनाशा। जीव जंत ना कोई दुखाए, लिखाए गुर गोबिन्द होए लिखासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हाए सर्ब लिखाए कलिजुग जीव जो करन हासा।

तीन लोक आप बणाए। सुरत चित मन लगाए। नाम निरबाण प्रभ बाण लगाए। जेतीआं मुशकलां तेतीआं असान कराए। साचा नाउँ प्रधान रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए।

मसाण मसाण पवण रूप। आप बंनाए प्रभ साचा भूप। जम का बेटा कालका माता आप परोए एका सूत। प्रभ माण गवाए वड वड अवधूत। एका शब्द आप उठाए, सोहँ सिर लगाए जूत। उहनी माता पतला बीर हँसता बीर बटका बीर। बटका बीर विनोदीआ बीर। सौ सन्तर विनोदिआ बीर। कालीआ बीर दुनियां बीर भौर। पताल बीर भैरों बीर। नरसिँघ बीर नाहर सिँघ बीर। हनवन्त बीर दयावन्त बीर। अहिमद बीर। मुहम्मद बीर। सलसला बीर सलाबीर। निरंदी नेसरी केसरी इजीआ बिज़ीआं बसोधरी कारवमी कमरवमी ललमी पलमी जगगनी जुगती भुगती इतनीआं भैणां जोर ना मिले मुकती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दर फिराए साचे दर दुरकाए जिस जन दया कमाए। नाम जपाए प्रभ मिलण दी साची जुगती।

आप धारे आप सवारे पार उतारे। पसू प्रेत जिस सगले बन्द पाए। लोहे का संगल पायो गले लटकाए। सार की मुगली सिर लगाए। सोहँ शब्द माण रखाए। सच सच सच रिहा लिखाए। कीआ जोत अकार आप निरँकार। बचन ते बाहर, खाए सिर मार। प्रभ साचा करे खुआर। सन्त का दोखी दुष्ट दुराचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग करे खुआर।

शब्द साचा जीओ पिण्ड काचा सो साचा काचा, जिस हिरदे वाचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच सच कल सच पछाता ।

हाकनी डाकनी छाकनी छार खुरी निरँकार बंधाए भण्डारी दृष्ट करे। मुशट करे, छल करे, छिदर करे, टूणा करे, जादू करे, काल के बाल करे, सोहँ साचा शब्द प्रभ सिर धरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द मात चलए किरपा आप करे। राजा का तेज चोर का घोर रड़ा डूगर प्रभ साचा रछया आप करे। दीन दुनी दे पातशाह दर ते आए सीस झुकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काज आप करे। (१५ सावण २००६ बि)

हरिचरन सुख साचा जाण। हरिचरन उजल मुख विच्च जहान। हरिचरन आत्म दुःख सर्ब मिट जाण। हरिचरन तृष्ना भुक्ख किल विख पाप सन्ताप सर्ब मिट जाण। हरिचरन साची सरन नाम साची भिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दान।

चरन धूड़ मस्तक लाओ। आत्म जूड़ गुरचरन कटाओ। मूर्ख मुगध चतर सुजान, हरि दर बण जाओ। गुरचरन सच ध्यान, आत्म सर तीर्थ नहाओ। आप खुल्ह़ाए दसवां दर जिथ्थे वसे अगम्म अथाहो। गुरचरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना दीसे थाउँ।

गुरचरन जोध बल सूर। गुरचरन सर्ब कला भरपूर। गुरचरन अठ्ठ सठ एका देवे शब्द सरूर। गुरचरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया नाद वजाए सोहँ साची तूर। काया नाद शब्द फुंकारया। ना करना जीव मात हंकारया। प्रभ साचे दी खेल अपारया। तीन लोक जीव जंत विच्च एका जोत टिका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे

भाणे विच्च आपे आप समा रिहा। गुरचरन शब्द धुन बाण। गुरचरन साचा देवे शब्द बबाण। गुरचरन आत्म अन्धेर चार चुफेर सर्ब मिट जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सर्ब जीआं दा जाणी जाण। (११ मध्घर २०१० बि)

साचा तीर्थ साचा तट्ट। प्रभ अबिनाशी वसे घट घट। दुःख रोग सारे देवे कट। जो जन आए सर सरोवर रसना लए भुमिका चट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप निवारे पेट अफारे, जिनूं वधाए पेट मट। मात जोत प्रगटाए, साचे गुरमुख साचा लाहा लैण खट्ट। (८ जेठ २०१० बि)

नाड़ी पिंजर हड्ड मास। अड्डो अड्डी दिसे कंगर, तापां रोगाँ होया दास। काया सुक्की होई ढिंगर, सदा रहे मन उदास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आए दर, दुःखां रोगाँ करे बन्द ख़लास।
हड्ड नाड़ी रहे पीड़ा। दुखी दिसे सदा जीअड़ा। काया खाए मास अहारी कीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आए दर काया रोग कट भीड़ा। (१२ भादरों २०११ बि)

बिन दवाईउँ करे इलाज, गुर सतिगुर हत्थ वडयाईआ। दुखीआं दर्दीआं पूरा करे काज, कर किरपा दया कमाईआ। जिस तन पंज तत्त लिआ साज, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश रजो तमो सतो बंधन पाईआ। जो अंदर वड़ चलाए जहाज़, बण बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिन्ता दुःख आपणे हत्थ रखाईआ।
चिन्ता दुख रोग पूरब कर्म, कर्म कर्मां नाल बंधाइंदा । लेखा जाणे मानस जन्म, जन्म जन्म फोल फुलाइंदा। जिस जन बख्शे आपणी सरन, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। तिस नाता तोड़े जन्म मरन, मरन जन्म पन्ध मुकाइंदा। किरपा करे करनी करन, करता पुरख वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। साची दवा हरि का नाउँ, हरि हरि आप प्याईआ। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाउँ, तत्ती वा ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया वेख वखाईआ।
पंज तत्त काया वेखे अगनी अग्ग, हड्ड मास नाड़ी तन जलाया । दिवस रैण जीवत जीअ दुखीआ जग, जीवण मुकत ना कोई कराया । नाड़ी नाड़ी गए बझ, बहत्तर तन्दी तन्द रखाया। तिन्न सौ सट्ठ हाडी विच्चों कोई ना सके कढ्ढ, धनंतर बैठा मुख छुपाया। जिस जन किरपा करे पुरख समरथ, दुःख दर्द रहे ना राया। साचा मार्ग देवे दस्स, एका अक्खर जाप पढ़ाया। सो पुरख निरञ्जण होए वस, हँ मेला सहज सुभाया। जगत दलिद्दर जाए नस्स, सुख सहजे सहज घर आया। हिरदे अंदर सतिगुर पूरा जाए वस, दिवस रैण रैण दिवस बिन नेत्र नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुख दारू इक्क समझाया।
दुख दारू वेखे दर्द, वेखणहारा आप हो आईआ। कदे तत्ती काया कदे सरद, भेव कोई ना पाईआ। नेत्र नैण होण ज़रद, दुःख दुःख विच्च छुपाईआ। ना रोग नारी ना कोई

मरद, मर्द नारी दिस किसे ना आईआ। पारब्रह्म सतिगुर पूरा शब्द सरूपी इक्को फेरे करद, नाड़ी नाड़ी साफ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दवा दया कमाईआ।

बिन दवा आया तबीब, वेखे वेखणहारा। वेखणहारा हो करीब, नेत्र नैण नैण उघाड़ा। पिछला अगला अगला पिछला बख्शे आप नसीब, निसबत निसबत आपणे हत्थ रखे करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा। (१४ फग्गण २०१८ बि)

दुःख रोग दर्द मिटे ताप, पंज तत्त वडयाईआ। जन्म जन्म दा उतरे पाप, पतित पुनीत कराईआ। जो जन सोहँ जपे जाप, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। दुःख दलिद्र देवे काट, छल छिदर कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग दए गवाईआ।

पंज तत्त जग काया रोग, जीव जंत कुरलाइंदा। जिस जन सतिगुर देवे नाम चोग, हिरस हवस मिटाइंदा। साचा दस्से इक्क जोग, हरि प्रीती सच दृढ़ांइंदा। कर किरपा देवे दरस अमोघ, दुखीआं दुःख गवाइंदा। आत्म परमात्म होए संजोग, घर मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत दुःख आप मिटाइंदा।

पंज तत्त काया तन ख़ाकी मूल, अंग अंग वंड वंडाईआ। साचा दस्से इक्क असूल, असलीअत दए जणाईआ। हरि का नाउँ ना जाणा भूल, भुलयां मिले सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आयां दुःख दर्द दए गवाईआ। (२७ फग्गण २०१८ बि)

सतिगुर पूरा करे किरपा, किरपानिधान दया कमाइन्दा। जन्म कर्म दी मिटे बिप्पता, दुःख दर्द गवाइन्दा। माणस जन्म ना जाए बिरथा, तन माटी लेखे पाइन्दा। चार कुण्ट जो रिहा फिरदा, दह दिशां डेरा ढाहिंदा। सतिगुर वणज कराए इक्को सिर दा, हट्ट साचे आप वकाइन्दा। आदि जुगादी खेल अगम्मी पिर दा, पिता पूत वेख वखाइन्दा। लेखा जन्म पूरब जन्म चिर दा, निरगुण सरगुण वंड वंडाइन्दा । भेव वखाए घर थिर दा, थिर घर आपणा घर जणाइन्दा । कूड़ी क्रिया गेड़ा गिढ़दा , साचा मार्ग इक्क समझाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , जिस जन आपणे घर वसाइन्दा।

जन्म कर्म दा कटे रोग, हरि सतिगुर दया कमाईआ। नाम भंडारा देवे चोग, रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप खवाईआ। आत्म परमात्म होए संजोग, धुर मिलणी मेल मिलाईआ। वज्जे वधाई चौंदां लोक, परलोक रहे जस गाईआ। दर निमाणी फिरे मोख, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जिन्हां पुरख अकाल मिली ओट, तिन्हां वेले अन्त दुःख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्डिआईआ।

दुःख रोग उतरे सन्ताप, पत्तत्त पापी पार कराइन्दा। बालक वेखे साचा बाप, पिता पूत गोद उठाइन्दा। प्रेम प्रीती साचा जाप, निरगुण सरगुण आप समझाइन्दा। घर ठाकर मिले

सज्जण साक, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भव सागर पार कराइन्दा।

जगत रोग मेटे दुःख, दुखीआं दर्द वंडाईआ। घर उपजाए इक्को सुख, हरि वज्जे नाम वधाईआ। उजल करे मात मुख, जो श्री भगवान रहे जस गाईआ। वेख वखाणे अपराधी सुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउं थाईंआ।

लेखा जाणे अंदर बाहर, पड़दा सके कोई ना पाईआ। करनहारा गुप्त ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर खेल वखाईआ। डुबदे पाथर जाए तार, जिस गृह आपणा चरन छुहाईआ। साचा बख्शे इक्क प्यार, प्रेम प्रीती तन्द बंधाईआ। भूत परेत जिन ख़बीस कोई ना करे खवार, इक्क लक्ख अस्सी हज़ार नेड़ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम डंका इक्क वजाईआ।

नाम डंका वज्जे घर, घर साचे खुशी वखाइन्दा। पिछला चुक्के भउ डर, अग्गे इक्को राह जणाइन्दा। सतिगुर सुआमी पल्लू फड़, जग मार्ग आपे लाइन्दा। डूंघी भवरी काया वड़, बन्द ताकी आप खुल्ह़ाइन्दा। सच सुहेला देवे वर, गुर चेला वेख वखाइन्दा। लेखा जाणे नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच घर सच इक्को इक्क वखाइन्दा।

सच घर हरि शब्द सुआमी, गुर मंत्र नाम वड्डिआईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। अमृत बख्शे आत्म बाणी, अंमिउं रस जाम प्याईआ। आवण जावण चुक्के जम की काणी, राए धर्म ना दए सजाईआ। साचा बख्शे पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को इक्क वखाईआ। तख़त निवासी शाह सुल्तानी, शहनशाह आपणी मेहर नज़र उठाईआ। तिखी मारे तीर कानी, दो जहानी पार लंघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए उठाईआ।

दुःख रोग मिटे झेड़ा, झंजट कोई रहण ना पाईआ। आप वसाए साचा खेड़ा, घर वज्जे नाम वधाईआ। एथे ओथे बंन्ह़े बेड़ा, खेवट खेटा बेपरवाहीआ। अन्तम करे हक़ नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सोहँ मंत्र इक्क पढ़ाईआ। (१३ भादरों २०२० बि)

सुख दुख दोवें आए, घर बैठे डेरा लाईआ। गुरमुख सुख विच्च समाए, मन सीतल सति कराईआ। मनमुख करन हाए हाए, दुखी दर्द ना कोई वंडाईआ। माणस मानुख भेव ना आए, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पंज तत्त जो खेल रचाए, काया माटी हट्ट चलाईआ। जन्म मरन आपणे हत्थ रखाए, लक्ख चुरासी गेड़ भवाईआ। देवणहारा इक्क रघराए, दो जहान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी इक्क कमाईआ।

सुख कहे मैं तेरा सागर, दर तेरे ओट तकाईआ। जन भगतां वसां काया गागर, घर साचे सोभा पाईआ। सच दुआरे मिले आदर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग जुग मेरा इक्को

वणज सौदागर, धुर दा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग इक्क वखाईआ।

दुःख कहे मैं दुखिआर, दुखीआं नाल सोभा पाइन्दा। मन हँकारी मेरा यार, सद मेरा संग निभाइन्दा। अंदर रोवे धाहां मार, बाहरों नज़र किसे ना आइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइन्दा।

दुख सुख दोवें कहण, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। इक्क दूजे दा चुक्के देण लहण, देणा कोई रहण ना पाईआ। साक नहीं ना कोई सैण, सगला संग ना कोई बणाईआ। झूठा नाता माता पिता भाई भैण, कूड़ी क्रिया बंधन पाईआ। बिन हरि विछोड़े सभ दे वहण, वैंहदी धार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्क रघुराईआ।

दुःख कहे मैं तेरा बरदा, दर घर साचे सेव कमाईआ। तेरे कोलों साहिब जो डरदा, दूर दुराडा धक्का देवां लाईआ। मेरा खेल जिस अंदर वड़दा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, मेरी इछया पूर कराईआ।

सुख कहे प्रभ पाया मीत, घर सतिगुर नज़री आईआ। गुरमुख सुणन साचा गीत, अन्तर इक्क ध्यान लगाईआ। मनमुख रसना होई पलीत, कूड़ी क्रिया नाल परनाईआ। करे खेल इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां मिलावा इक्को घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण, जानणहार जगत जुगत जीवण नाल मिलाईआ।

(२३ भादरों २०२० बि)

सतिगुर किरपा मिटे दुःख, दीनां नाथां दया कमाइंदा। पंज तत्त काया माटी आत्म देवे सुख, सुख सागर रूप वखाइंदा। हउमे हंगता जग तृसना मेटे भुक्ख, ममता माया मोह मिटाइंदा। शब्द सुहागी गोदी आपणी चुक्क, हरिजन बालक साचे दर बहाइंदा। आवण जावण लक्ख चुरासी पैंडा जाए मुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

जन्म कर्म दा मेटे रोग, गुर सतिगुर हत्थ वडयाईआ । नाम निधाना दे के चोग, सोहँ अक्खर इक्क समझाईआ। आत्म परमात्म ना होए विजोग, पारब्रह्म ब्रह्म ना कोई जुदाईआ। चिन्ता ग़म ना रहे सोग, दुख दर्द नज़र कोई ना आईआ। दिवस रैण देवे दरस अमोघ, निज नेत्र नूर चमकाईआ। सच प्रीती बख्शे योग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद देवणहार वडयाईआ।

सतिगुर किरपा उतरे पार, लक्ख चुरासी गेड़ कटाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, सज्जण वेखे हरि रघुराईआ। जिस दा महल्ल अट्टल उच्च मनार, सच घट बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत जगे अगम्म अपार, दीआ बाती नज़र कोई ना आईआ। जिस दी आशा रक्खदे गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ । सो साहिब शाह पातशाह श्री भगवान, नाउँ निरँकारा इक्क प्रगटाईआ। जन भगतां वेखे मार ध्यान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फेरा

पाईआ। सन्त सुहेले करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। साचा अमृत आत्म बख्शे पीण खाण, कँवल नाभी मुख भवाईआ। अनादी शब्द सच्ची धुनकान, अनहद राग सुणाईआ। गुरमुख कर चतर सुजान, मूर्ख मूढ़े धंदे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना रोग मिटाईआ।

जन्म कर्म दा मिटे सन्ताप, संसा रहण कोई ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निज घर करे वास, घर घर विच्च आसण लाईआ। नाम जपावे पवण स्वास, साह साह समाईआ। साचे मन्दर वखाए रास, साढ्ठे तिन्न हत्थ अंदर गोपी काहन नचाईआ। निरगुण हो के वसे पास, सरगुण देवे माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन्म कर्म दा मिटे रोग, जगत दुःख दर्द रहण कोई ना पाईआ। मिले वड्डिआई हरिजन भगत, भगवन भगती इक्को इक्क समझाईआ। आत्म परामतम मेल मिलाए आपणी शक्त, शक्ती दर दर दए वखाईआ। अमृत मेघ ठांडी धार बरस, रस इक्को इक्क चखाईआ। प्रभ दर्शन जो जन रहे तरस, तिन्नां स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया कमाईआ।

दीन दयाल हरि ठाकर स्वामी, श्री भगवान दया कमाइंदा। जिस दी महिंमा अकथ्थ कहाणी, शास्त्र सिमरत वेद अन्त कोई ना पाइंदा। जुग चौकड़ी रच के चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज वेख वखाइंदा। लेखा जाणे चारे बाणी, शब्द अनादी राग सुणाइंदा। वरोलणहारा अठसठ तीर्थ पाणी, तट्ट किनारा खोज खुजाइंदा। जन भगतां बख्शणहारा सच निशानी, नाउँ निरँकारा इक्क वखाइंदा। दवार वखाए पद निरबानी, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। दीपक जोत जगे नुरानी, नूरो नूर डगमगाइंदा। सारी मुशकल कहे आसानी, एहसान सिर ना कोई रखाइंदा। कोई समझ ना सके जगत विदवानी, ज्ञानी ज्ञान ना कोई दृढ़ांइंदा। हरिजन विरला जाणे चतर सुजानी, जिस जन आपणा पड़दा लाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला आप मिलाइंदा।

मेल मिलाए पुरख समरथ, हरि वड्डा वड्ड वडयाईआ। जन भगतां खोल्ह आपणी अक्ख, निज नेत्र पड़दा लाहीआ। सच्चा मार्ग देवे दस्स, राह इक्को इक्क वखाईआ। कूड़ी क्रिया करे भट्ठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हलकाईआ। वस्त अमोलक हकीकत विच्चों देवे हक़, प्रेम प्रीती विच्च वरताईआ। जुग चौकड़ी दूर दुराडा निरगुण निरवैर आवे नस्स, बण पाधी पन्ध मुकाईआ। जन भगतां हिरदे जाए वस, हरी हरि का रूप समाईआ। साचा मन्दर वखाए शिवदवाला मट्ठ, गुरूदवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वडयाईआ।

हरिजन तेरा मन्दर अपार, साढ्ठे तिन्न हत्थ नज़री आईआ। घर विच्च घर कीता त्यार, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। दीवा बाती कर उजिआर, जोत निरञ्जण डगमगाईआ। सच सिँघासण हरि निरँकार, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। आत्म करे परमात्म प्यार, प्रेम प्रीती इक्क वधाईआ। खुशीआं अंदर गावे वार, अनहद नादी नाद सुणाईआ। मेहर अंदर बख्शे अमृत ठांडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। हुक्मे अंदर कर के आर पार, नौ दवार पन्ध चुकाईआ। वेखणहार सच्ची सरकार, शाह सुल्ताना अक्ख खुल्ह़ाईआ। कूड़ कुड़िआर करे खुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर दए वडयाईआ।

साचा मन्दर काया बंक, समरथ पुरख आप बणाइंदा। इक्को लेखा राओ रंक, राज राजान ना कोई वडिआइंदा। जोती शब्दी लाए तनक, बिन तन्दी तन्द सतार हिलाइंदा। वेस अनेका वटाए विच्च जीव जंत, जागरत जोत डगमगाइंदा। हरि का भेव कोई ना जाणे पांधा पंडत, रासीआं विच्च बन्द ना कोई कराइंदा। सच दवारे विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार बैठे मंगत, ख़ाली झोली सर्ब जणाइंदा। कलिजुग अन्तम सभ तों उत्तम श्रेष्ट उह पुरख अकाल दी संगत, जिन्हां कर किरपा आपणा रंग चढ़ाइंदा। दूजे दर ना जावण मंगत, अनमंगी वस्त आप वरताइंदा। माणस जन्म बणे बणत, घड़न भन्नणहार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरभौ चुकाए भय डर, हरिजन साचे बाहों फड़, शब्द अगम्मी लाए लड़, पल्लू परमात्म आत्म आपणे नाल बंधाइंदा। (२४ जेठ २०२१ बि)

जन भगत काया माटी कदे ना मंगे सुख, सुख आत्म नज़री आईआ। जन्म जन्म दा मेटे दुःख, कर्म कर्म दा रोग गवाईआ। प्रभ मिलण दी रक्खे भुक्ख, तृष्ना रोग ना कोई वधाईआ। लेखे लावे जामा मानस मनुख, मानव दर घर सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी साहिब स्वामी आपणी गोदी लवे चुक्क, चार कुण्ट दा झगड़ा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दस्स के इक्क तुक, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा रहण ना देवे उहला लुक, गुरमुख पड़दिआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। (१४ जेठ श सं २)

जगत दुःख दूर कर प्रभ सागर, जन भगतां दया कमाईआ। निर्मल कर काया गागर, साढ्ढे तिन्न हत्थ रंग रंगाईआ। निर्मल कर्म होए उजागर, दुरमत मैल देणी धवाईआ। दर आयां देणा आदर, अदल इन्साफ आपणा इक्क कमाईआ। तूं मालक करीम करता कादर, करता इक्क अखवाईआ। जोधे सूरबीर बहादर, सतिगुर शब्द तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।
दुःख दलिद्दर होवे दूर, तन वजूद माटी ख़ाक रहण ना पाईआ। किरपा कर साहिब हाज़र हज़ूर, हज़रत मालक नूर इल्लाहीआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सति सच नाल मिलाईआ। त्रैगुण माया रहे ना जूड़, जोड़ी आत्म परमात्म लै बणाईआ। धर्म प्रीती बख्श धूड़, चरनी ख़ाक रमाईआ। मानस जन्म लेखे लाउणा ज़रूर, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वडयाईआ।
जगत दुःख तन जाए लथ्थ, वसूरा रहे ना राईआ। किरपा करे पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वडयाईआ। जगत विकारा पावे नथ, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। शब्द जणाए अकथ्थना अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। झगड़ा मेटे तत्त अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मत बुध भेव खुल्हाईआ। काया मन्दर अंदर खोल्ह के हट्ट, सच दवार इक्क समझाईआ। मनुआ लेखा रहे ना बाज़ीगर नट, सवांगी आपणा सवांग वरताईआ। बहत्तर नाड़ी ना उबले रत्त, तिन्न सौ सट्ठ हाडी रही कुरलाईआ। दीन दयाला जाणे मित गत, पर्दा परदिआं विच्चों उठाईआ। दुख दलिद्दर जाण नस्स, जो सतिगुर सरन रहे सरनाईआ। अमृत बरसे निझर रस, झिरना कँवल नाभ झिराईआ। जगत तृष्ना होवे वस, मनुआ उठ ना दह दिश धाईआ।

शब्द तीर अणयाला मारे कस, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से जस, आत्म परमात्म ढोला सहज सुभाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए रक्ख, एह सतिगुर हत्थ वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता इक्क अखवाईआ।

दुख दलिद्दर ना रहे तन, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। सतिगुर बेड़ा देवे बंन्ह, शौह दरया ना कोई रुड़ाईआ। धुर दा राग सुणावे कन्न, नाद अनादी आप जणाईआ। कर प्रकाश चाढ़ के चन्न, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। हरख़ सोग़ मेट के ग़म, चिन्ता चिखा विच्च ना कोई रखाईआ। लेखे लावे पवण स्वासी दम, दामनगीर आप हो जाईआ। वेख वखाउणे काया माटी चंम, चंमदृष्टी फोल फुलाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन सतिगुर घर पए जम्म, तिस तन दुःख ना लागे राईआ। सतिगुर भेव खोल्हे ब्रह्म, पारब्रह्म दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

रोग सोग जाण नठ्ठ, तत्तव तत्त रहण ना पाईआ। जो एका नाम लए रट, रट्टा दीन दुनी चुकाईआ। सगल वसूरे जाण लथ्थ, ग़म सन्ताप ना कोई सताईआ। लहणा देणा हत्थो हत्थ, परम पुरख प्रभ झोली पाईआ। सच सरोवर चरन धूढ़ी अठ्ठ सठ्ठ, मज़न इक्को वार वखाईआ। जगत जहान लेखा होवे भठ्ठ, अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। दुःख रोग सतिगुर सरन, निरुगण सरगुण दया कमाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। हरिजन मंज़ल साची चढ़न, जिथ्थे कबीर जुलाहा आसण लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। सच दवारे साचे घर खड़न, जिथ्थे मिले मेल धुरदरगाहीआ। झगढ़ा मेटे चोटी चढ़न, चेतन्न आपणे रंग समाईआ। आपे होए हार भन्नण घड़न, घड़न भन्नणहार आप अखवाईआ। गुरमुख दुःख हंगता विच्च कदे ना सड़न, अगनी तत्त ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

गुरमुख दुःख रोग ना कोई विआपे, सहिसा नज़र कोई ना आईआ । जिन्हां खुल्हे बन्द किवाड़ी ताके, बजर कपाटी डेरा ढाहीआ। शब्द सुणाए धुर दा नादे, नादी धुन शनवाईआ। उन्हां दा तन वजूद साधे, माटी ख़ाक सोभा पाईआ । निरगुण नूर जोत करे प्रकाशे, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। मातलोक विच्चों करे बन्द खलासे, खलासा आपणा इक्क दृढ़ाईआ। अठ्ठे पहर रक्खे भरवासे, दिवस रैण वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नाते, साक सज्जण सैण इक्क अखवाईआ। एथे ओथे दो जहानां सदा बख्शे साथे, आपणी गोद आप बिठाईआ। आत्म ब्रह्म लाडले काके, तन खुशीआं रंग रंगाईआ। जगत वासना रोग ना कोई सन्तापे, चिन्ता नज़र कोई ना आईआ। सतिगुर पूरा किलविख पाप जन्म जन्म दे काटे, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण गुरमुखां सद रक्खे दे कर हाथे, मेहरवान महिबूब मेहर नज़र आपणी अगम्म उठाईआ। (१३ माघ शहनशाही सम्मत ७)

हस्स के कहे दुख रोग सन्ताप, बिन रसना जिह्वा ढोले ढोल रिहा सुणाईआ। सतिगुर शब्द तूं आदि जुगादी साडा माई बाप, तुध बिन दूजा गोद ना कोई टिकाईआ। मेहरवान हो के सानूं हुक्म दित्ता आप, आप आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे दर प्यार रूप कलिजुग दी धारा ताप, अगनी तत्त तत्त तपाईआ। मेरे दीन दयाल जे असीं ना होईए तेरा कोई ना जपे जाप, तेरी लोड़ ना कोई रखाईआ। जगत अन्धेरा हो जाए रात, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। मेहरवाना असीं सभ दे सांझे साडी वंड नहीं किसे नाल ज़ात, दीनां मज़हबां विच्च आपणी खुशी बणाईआ। निगाहबान हो के साडे वल मारी झात, झाकी आपणी इक्क वखाईआ। साडा खेल वेख बहु भांत, भज्जीए नठ्ठीए वाहो दाहीआ। साडे हिस्से आया साढ़े तिन्न हत्थ सरीर दा इक्क परांत, बहुती मंग ना कोई मंगाईआ । असीं तेरे हुक्म विच्च सृष्टी दे अंदर वड़ के बहंदे इकांत, ध्यान तेरे चरन टिकाईआ। सानूं बड़ी आउँदी शांत, जिस वेले भगतां अन्तर तेरा रंग वेख वखाईआ। तेरा नाम मिलदा अमृत बूंद सवांत, अगनी तत्त तत्त जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ।

सन्ताप कहे मेरे साथी जगत दुःख रोग, सोहणा संग बणाईआ। एह मेरा जगिआसूआं वाला जोग, जुगती तेरे हत्थ फड़ाईआ। असीं हर घट अंदर वड़ के भोगीए भोग, रस आपणा आप परगाईआ। साडा मेला हुंदा धर्म संजोग, विजोग विच्च तेरी खुशी मनाईआ। पर असीं किसे दे घर जांदे नहीं रोज, कदी कदी आपणा फेरा आईआ। हे प्रभू साडे मिल के नाल जगिआसूआं मिलदी नहीं मौज, खुशी रंग ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

दुख रोग कहण प्रभू रूप वेख दलिद्दर, जगत जहान वक्खरा नज़री आईआ। जरा निगाह मार उधर इधर, एथे बैठे तेरी ओट तकाईआ। पता नहीं असीं फिरदे किधर किधर, भज्जीए वाहो दाहीआ । वेखीए बिटर बिटर, बिन नैणां नैण उठाईआ। साडे अन्तर सदा रहिदी सध्धर, सध्धरां तेरे चरन टिकाईआ। सानूं याद आउँदा साडे नाल प्यार कीता सी बिदर, सुदामा खुशीआं वाली गलवकड़ी पाईआ। काया मन्दर दा खोल् के जिंदर, ताकी सानूं दिती वखाईआ। तुसीं फिरदे किधर, दर मेरे आउँणा चाईं चाईंआ। तांकि मेरी आलस मिटे निंदर, गफ़लत रहण कोई ना पाईआ। बेशक मेरा दुखी होवे पिंजर, तन वजूद हड्ड मास नाड़ी कुरलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ।

रोग सोग कहण प्रभू साडा नाउँ चिन्ता दुःख, सांतक सति सति ना कोई कराईआ। सानूं वेख के सभ दे कुमला जांदे मुख, खुशी विच्च कोई ना आईआ। साडे अंदर वड़दिआं इन्सानां दी मिट जांदी भुक्ख, रसना जिह्वा रस ना कोई चखाईआ । सानूं कोई नहीं कहन्दा प्यार विच्च मनुख, प्रेम नाल साडे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

दुःख रोग कहण प्रभू असीं सदा घत्तदे रहीए वहीर, भज्जीए वाहो दाहीआ। ना साडा बसतर ना कोई चीर, ओढण सीस ना कोई टिकाईआ । असीं कदे नहीं हुंदे दिलगीर, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। पींदे नहीं कोई सीर, अमृत रस मुख ना कोई छुहाईआ।

पर जिस दे वल जाईए उहदे नेत्रां वगे नीर, रो रो दए सुणाईआ। असीं फिरदे वांग कीर, कीरने तेरे नाम दे पाईआ। इक्क गल्ल याद जिस वेले बद्धक ने कृष्न नूं मारया तीर, निशाना आपणा दित्ता लगाईआ। उस दुःख विच्च कृष्न ने बद्धक नूं किहा आ मेरे वीर, गलवकड़ी लई पाईआ। नाले मस्तक ते हत्थ रक्ख के बदल दिती तकदीर, तारीका आपणे विच्च छुपाईआ। दुःख कहे सानूं उस वेले आई धीर, धर्म नाल धर्म दईए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ।

दुःख रोग कहण प्रभू की खेल दस्सीए कलिजुग कल दा, आप आपणा भेव खुल्ह़ाईआ। साडा लहणा देणा पूरब पिछला राजे बल दा, बावन आपणा संदेश गिआ दृढ़ाईआ। साडा प्यार जिस अंदर वड़दा उस नूं सलदा, तीर अणयाला इक्क वखाईआ। साडा प्यार कोई झल्ल नहीं सकदा पल दा, दुखी हो के सारे देण दुहाईआ। साडा सवाद नहीं कोई हल्ल दा, अंकड़ा समझ कोई ना आईआ। तूं मेहरवाना सदा सदा सभ नूं छलदा, अछल अछल्ल इक्क अखवाईआ। झट सतिगुर शब्द किहा दुख रोग बिना अवतारां पैगम्बरां गुरूआं तों तुहानूं नहीं कोई झल्लदा, झलयो तुहाढ्ढी झलक विच्च आपणी खुशी ना कोई बणाईआ। ते बिना तुहाढ्ढे प्यार तों जगत भगत कोई नहीं फलदा, सतिगुर ओट ना कोई तकाईआ। क्यों तुहानूं हुक्म अंदर आप घल्लदा, वेखणहारा बणे आप गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

दुःख रोग कहण प्रभू सानूं कदे किसे कीता नहीं प्यार, मुहब्बत नाल घर ना कोई बुलाईआ। जिध्धर जाईए उह रोवण धाई मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साडे नाल करन तकरार, झगढ़ा दिसे थाउँ थाईंआ। असीं इक्क वार धनंतर अग्गे कीती पुकार, अन्तश्करन आशा उस दे अग्गे टिकाईआ। क्यों साडा नाता जोड़या नाल संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तिन्नां दे समझाईआ। ओस हस्स के किहा तुहाढ्ढा फल रहे सदा जुग चार, लोकमात वज्जदी रहे वधाईआ। मैं तुहाढ्ढे प्यार नाल औशध करां त्यार, लेखा दीन दुनी बणाईआ। पर इक्क गल्ल याद रखयो सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तुहाढ्ढा दुःखां दा भरया रहे भंडार, अतोट अतुट्ट अतुट्ट वरताईआ। सृष्टी विच्च हुंदी रहे हाहाकार, हाए उफ कर कुरलाईआ। तुहाढ्ढी गिणती वधणी चुरासी लक्ख नाल चुरासी होर वार, चुरासी नाल चुरासी फेर अंकड़े होर लउ वधाईआ। उस वेले सृष्टी नूं पता नहीं कितनी गिणती तुहाढ्ढी वधे बारमबार, अरबां खरबां नाल गणत ना कोई गिणाईआ। पर याद रखयो तुहाढ्ढा लहणा देणा पूरा करे आप निरँकार, निराकार हो के वेख वखाईआ। तुहाढ्ढा नाता जोड़े भगतां नाल विच्च संसार, संसारी हो के आपणा खेल खिलाईआ। जिस वेले कलिजुग अन्त कीता सतिजुग विच्च सति दा होया प्रचार, तुहाढ्ढयां पिछलिआं परचिआं दा लेखा रहे ना राईआ। सभ तों उत्तम श्रेष्ट जन भगत दिसणगे तन वजूद करन शिंगार, सोहणा रूप बणाईआ। तुहाढ्ढा वक्त बहुता नहीं थोड़ा नहीं पंज छे साल ते महीने नाल चार, दुख रोग तुहाढ्ढा वक्त अगला नज़र कोई ना आईआ। फेर भगतां दी भगवान नाल सदा रहेगी बहार, खुशीआं दे ढोले गाईआ। पर इक्क बख्शिश ज़रूर करांगा तुहानूं सद्दिआ करांगा भगतां दे घर बाहर, इक्क सौ इक्क कदम तों पिच्छे सीस निवा के जाणा चाईं चाईंआ। सतिजुग विच्च सतिगुर दा भगत कदे

ना होवेगा बीमार, तन वजूद कंचन वरगा सोभा पाईआ । झट्ट दुःखां रोगाँ खुशीआं नाल कीती निमस्कार, निउँ निउँ के सीस झुकाईआ। प्रभू जे असीं बद्धक दे अंदर ना वड़दे साडा किस तरां हुंदा उदार, सतिजुग विच्च सानूं मिलदी की वडयाईआ। जिस दे हिरदे विच्च वसिउं तूं आप निरँकार, निरवैर हो के आसण आपणा आप लगाईआ। उहदी बुद्धि दी नहीं सी पुकार, आत्मा तेरे ढोले गाईआ। ना कोई दुनियां वाला बुखार, सिरफ विछोड़ा सी सतिगुर सी यार, यार दे यराने यारी कम्म किसे ना आईआ । जिस दे प्यार विच्च पिछले जुग बीते ते लंघ गए , आपणा पन्ध मुकाई भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लहणा झोली पाईआ।

दुःख रोग कहण प्रभू सानूं पंज छे साल चारों कुण्ट लैण दे भज्ज, भजन बन्दगी वाले फड़ीए थाउँ थाईंआ। नाले वेखीए उह केहड़े साहिब दा करदे हज़, हुज़रे विच्च केहड़ा मालक बैठा टिकाईआ। असीं बेनन्ती करदे अज्ज, आज़ज़ हो के सीस निवाईआ। तूं मालक सृष्ट सबाई जग, जागरत जोत नूर अलाहीआ। पर इक्क बेनन्ती प्रभू तूं जदों वसणा ते वसीं भगतां दे उप्पर शाह रग, हेठला हिस्सा साडी झोली देणा पाईआ। असीं खुशी होईए गद गद, गद्दीनशीनां वेखीए थाउँ थाईंआ। अग्गे साडी भगतां नालों पूरी होवे हद्द, हदूद लँघण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा मेरा होया तेरे नाल सबब, साडी चले ना कोई चतुराईआ। (२८ विसाख शहनशाही सम्मत ११)

नारद कहे प्रभू साडीआं सिद्धीआं करदे मत्तां, मत मतांतर डेरा ढाहीआ। जन भगतां मूल दुखण ना लत्तां, गोडे गिटे रोग ना लागे राईआ। तूं किरपा करनी रता, रतन अमोलक हीरे लैणे बणाईआ। आपणे नाम दी बख्श दे सता, सति सतिवादी विच्च टिकाईआ। असीं चौहन्दे दुःख रोग दी आपणे हुक्म नाल करदे हत्ता, हथिआर नाम वाला उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं सर्ब गुणा समरथा, समरथ अकथ्थ तेरी वड वडयाईआ।

(३० जेठ श सं ११)

दातण : तुहाढ्ढा प्रेम बुरश दी दातण, दर दवार दए खुल्ह़ाईआ। जिथ्थे नूर नूर दा साथण, आत्म परमात्म परमात्म आत्म नज़री आईआ। उपजे अगम्मी नादन, तुरीआ तों परे सच शनवाईआ। खेल वेखे ब्रह्म ब्रह्मादन, ब्रह्मांड फोल फुलाईआ। भेव खुल्ह़ाए बोध अगाधण, बुद्धि तों परे समझाईआ। लेखा जाण आदि जुगादण, जुग जुग पर्दा लाहीआ। वेखे खेल अन्धेरी रातन, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। पड़दा लाहुंदे बातन, जलवागर नूर खुदाईआ। जिस तरा दन्द साफ़ करे दातन, आपणी सेव कमाईआ। एसे तरा सन्त मन नूं अंदरों मांजण, मज़न धूढ़ी इशनान कराईआ। ब्रह्म दा ब्रह्म होवे काजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह वेखे चाईं चाईंआ।

दातण कहे मेरी सेवा अपार, अपरम्पर स्वामी दित्ती लगाईआ। मैं आ गिआ विच्च संसार,

संसारी भण्डारी सँघारी खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट तक्कां नैण उघाड़, बिन अक्खां अक्ख तकाईआ। किस दे अन्तर निरंतर हक़ प्यार, मुहब्बत विच्च महबूब मिल के खुशी मनाईआ। आत्मा दा आत्मा परमात्मा रूप यार, ब्रह्म परम आत्मा परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। दोहां दा मन्दर इक्क दवार, काया बंक सोभा पाईआ। दीआ बाती जगे अगम्म अपार, अगम्म अथाह करे रुशनाईआ। एह दातण कहे मैं ओस दी सखी सहेली प्यारी नार, जो नर नरायण नर हरि हरी गिरी हरि दा रूप वटाईआ। जिस दी जगत मंज़ल दुष्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गृह मन्दर वेख वखाईआ। दातण कहे जिस वेले अंदर वड़दी, आपणा जोर लगाईआ। तूं ही तूं ही राग पढ़दी, दूजी अलख ना कोई जगाईआ। सच दवारे चढ़दी, आपणा पन्ध मुकाईआ। खेल वेखां नाड़ नाड़ दी, हड्ड मास खोज खुजाईआ। निरगुण जोत अगम्मी बलदी, घर मन्दर होए रुशनाईआ। भूमिका सोहे निहचल धाम अट्टल दी, सति सतिवादी आप समझाईआ। जेहड़ी धार शब्द अगम्मी आवाज़ काया मन्दर अंदर घलदी, बिन राज़ रमज़ दए जणाईआ। जे मेरी लेखे लग्ग जावे सेवा घड़ी पल दी, क्यों हरी गिरी स्वामी जी चाअ प्याली विच्च दित्ता भराईआ। दातन कहे मैं भरी विच्च प्याली, प्याला काया वेख वखाईआ। जिस दे नूर जोत अगम्मी लाली, जलवागर करे रुशनाईआ। साढ्ठे तिन्न हत्थ दी धर्मसाली, मन्दर इक्को वज्जे वधाईआ। त्रैगुण माया तुट्टे जंजाली, जागरत जोत होवे रुशनाईआ । मन मनसा रहे ना काली, कालख टिक्का दए धवाईआ। दातन कहे मैं कोई सेवा कीती नहीं बहाली, थोड़े समें विच्च सन्तां नाल मिल के आपणी खुशी बणाईआ। दातण कहे जिस वेले हरी गिरी लाई हथेली, हत्थ उंगलां विच्च दबाईआ। मैं अंदरे अंदर पई हस्स, हसती वेखी बेपरवाहीआ। इन्हां दे बुल्लां नालों आया जयादा मैनूं रस, क्यों मैनूं अंदरों रस्ता दित्ता समझाईआ। मैं ओथे गई वस, जिथ्थे आत्मा दा आत्मा बेली नज़री आईआ। सुणी उह कथा अकथ्थ, जिस नूं रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोई सुणाईआ। मेरा नाता छुट्ट गिआ तत्त अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तों परे बैठी डेरा लाईआ। मैं खुशी नाल दस्सां सच, दातन उठ के लए अंगढ़ाईआ। मेरे लूं लूं अंदर स्वामी दा प्यार गिआ रच, क्यों एन मैनूं रचना प्रभ दी दित्ती वखाईआ। मैं मेज ओते पई नच्च, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं नहीं कोई वक्ख, वक्खरा घर ना कोई बणाईआ। बेशक मेरी वेखण वाली नहीं अक्ख, शाख टैहणी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तर अन्तर निरंतर निरंतर लहणा सभ दा दए चुकाईआ। (४ कत्तक श सं ४)

शब्द गुरू कहे तुहाढ्ठी आत्मा जिस दा परमात्मा दोहां दा सच्चा साथण, साथी इक्क अखवाईआ। जन भगतो तुसां पिछली कीती आपणे अंदरों कढ्ठुणी अमृत वेले सारयां ने कर लैणी दातण, पिछला लेखा रहे ना राईआ। (१ चेत श सं ५)

दान : गुर संगत नूं देवे दान। सोहँ शब्द है मेरा नाम। रिदे धिआओ सर्ब सुख पाओ। विच्च चुरासी फेर ना आओ। (१७ मध्घर २००६ बि)
चरन कँवल विच्च रखो ध्यान। दर्शन पाओ नेत्री आण। आप पछाणो जाणी जाण। जिस

दा दित्ता पहनण खाण। जीउ पिण्ड एह देह दा दान। (१७ मध्घर २००६ बि)

सिखन को प्रभ बणावे दानी। दान देवे उत्तम मेरा नाउँ। जो पूछे मेरा ठाउँ। सोहँ शब्द मेरा नाम सुणाओ। प्रभ अबिनाशी निज में पाओ। (१८ मध्घर २००६ बि)

गुर पूरा एह साची खाण। गुरसिखां नूं देवे दरस प्रभ दान। सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। (८ फग्गण २००६ बि)

पूरे गुर का दरस जो लोड़े। सोहँ शब्द मन में जोड़े। एह दिता सिखां नूं दान। सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम शब्द दा दित्ता ज्ञान। (८ फग्गण २००६ बि)

साध संगत गुर दर ते आवे दुःख दलिद्र सारा गवावे दुध पुत्त घर सिख समावे सच दान गुर कलम लिखा रिहा। (५ वसाख २००७ बि)

पतित पावण भय भंजन। हँकार निवारन है भव खण्डन। जोत सरूप त्रैलोकी नंदन। गुरसिख दान दरस गुर मंगण । गुर पूरा सभ तोड़े बंधन। मेरा सिख कल विच्च प्रभास जिउँ चन्दन। मैं हां कृष्न मुरार मनोहर मुकन्दन। मैं हां सद किरपाल भगत भय भंजन। सोहँ शब्द दे के ज्ञान, गुरसिखां मन चाढ़ी रंगण। प्रगटी जोत आप भगवान, महाराज शेर सिँघ सद रंग बिरंगन। (२१ वसाख २००७ बि)

धन्न गुर धन्न गुर धन्न गुर धन्न सतिगुर पूरा, गुरसिखां देवे दान, काया रंग मजीठ चढ़ाया। (१६ जेठ २००७ बि)

कलिजुग माण गुरसिखां दीआ। जप सोहँ नाम होए निर्मल जीआ । भुल्ल ना जाणा प्रभ का दर, देवे दान पुत्तर धीआं। डुल ना जाओ पाओ आपणा कीआ। कलिजुग उतरे पार, महाराज शेर सिँघ नाम जिस रसना लीआ। (३ चेत २००८ बि)

सर्ब थाएं प्रभ इक्को रंगो। नाम दान प्रभ आत्म ज्ञान, गुर दर ते मंगो। विच्च जहान जीव टुट्ट जाण, जिउँ काची वंगो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सवाली दरस दान मंगो। (६ चेत २००८ बि)

भगतन संग प्रभ वसणेहारा। भगतन रंग देवे नाम दवारा। अमृत गंग विच्च कँवल फुहारा। गुरसिख दान साचा मंग, महाराज शेर सिँघ सच दवारा। (२५ चेत २००८ बि)

मंगो दान सोहँ सर्ब जीव जंत। उत्तम दान जीव मन मंग। सोहँ शब्द मन चाढ़े रंग।

मानस जन्म ना होवे कल भंग। साचा प्रभ गुर दरबार ना संग। कलिजुग साचा जीव प्रभ मिलने का ढंग। महाराज शेर सिँघ गुरसिखां सद चाढ़े नाम दा रंग। (२७ चेत २००८ बि)

चरन प्रीती दान दे, ढह पइआ दवारे। दर आपणे साचा माण दे, होए दरस अपारे। प्रभ पूरन ब्रह्म ज्ञान दे, आत्म दीप होए उजिआरे। गुरचरन प्रभ साचा ध्यान दे, सीस झुके तेरे दरबारे। सोहँ शब्द धुन विच्च कान दे, अनहद वज्जे विच्च देह अंधिआरे। सोहँ नाम सच पहनण खाण दे, एक टेक होए प्रभ चरन दवारे। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कर किरपा गुरसिख तार दे। (१२ वसाख २००८ बि)

गुरसिख तेरी उत्तम जाति। अमृत देवे प्रभ दान बूंद स्वांती। गुरसिख साचे दरस दिखाए प्रभ सुत्तयां राती। साचा प्रभ आत्म जोत जगाए, सोहँ शब्द लगाए बाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवे दान प्रभ वड दाती। साचा प्रभ देवे साचा दाना। सोहँ शब्द जगत महाना। रसना जप जीव आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। साचा नाम अमृत रस पीव, साचा रस प्रभ विच्च देह उपजाना। कलिजुग उत्तम होए जीव, जन बख्शे प्रभ चरन ध्याना। प्रभ आत्म जोत जगाए दीप, होए प्रकाश कोट भाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा समां सुहाना। (१ माघ २००८ बि)

गुरसिख मंग दरस दान। देवे दरस विष्नूं भगवान। सोहँ नाम देवे बबाण। रसना जप जप जीव आत्म जोत जगे महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाण। (८ चेत २००९ बि)

दानी दान आप वड दाना। साचा प्रभ वड भरे ख़ज़ाना। गुरमुख साचे प्रभ दर साचे देवे माणा। अनहद साची धुन प्रभ साचा सदा उपजाणा। कोई विरला पावे रिख मुन, राखे प्रभ चरन ध्याना। खोलु वखावे प्रभ आत्म सुन्न, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना । दिवस रैण रैण दिवस रहे रुण झुण, साचा शब्द प्रभ आप सुणाणा । कौण जाणे निहकलंक तेरे गुण, जोत सरूपी पहरया बाणा। (६ वसाख २००९ बि)

साचा दान गुर दरबारे। साचा प्रभ भरे भंडारे। जो जन आए गुरचरन दवारे। सरधा पूर प्रभ आत्म दुःख निवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पैज सवारे। (१७ वसाख २००९ बि)

दोराहा : दोराहा कहे जन भगतो जगत धार विच्च ना रहणा दो, दूआ एका एका रूप समाईआ। धुर संदेशा नर नरेशा सुणो अगम्मा सो, सो पुरख निरञ्जण आप दृढ़ाईआ। आत्म धार निरगुण सारे जाओ हो, हाहा टिप्पी आपणा रंग वखाईआ। बिना पुरख अकाल दूसर इष्ट दिसे ना कोअ, सीस बिन जगदीस ना कोई निवाईआ । पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाओ सच

मुहब्बत मोह, विकार हँकार जगत ना कोई जणाईआ। अमृत रस बूंद सवांती निझर झिरना कँवल नाभी लैणा चोअ, जगत तृष्ना कूड़ रहे ना राईआ। पंच विकारा विच्च संसारा मेटणा गरोह, गृह मन्दर अंदर तन वज़ूद वज्जे वधाईआ। बिन नेत्र लोचन नैण घर वेखो अगम्मी लोअ, लोइण आपणा आप खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

दुराहा कहे जन भगतो जगत धार छड्डणी दो धड़, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। एका अक्खर निरअक्खर धार जाणा पढ़, रसना जिह्वा होए ना कोई हलकाईआ। इक्क दवार जाणा खड़, सच महल्ल अट्टल सोभा पाईआ। इक्को मंज़ल जाणा चढ़, जिथ्थे मिले धुर दा माहीआ। सचखण्ड दवार बिन कदमां जाणा वड़, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दुराहा कहे मेरा दोहरा इक्क संदेश, संध्धया सरघी बाहर जणाईआ । सभ दा मालक इक्क नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। जो आदि जुगादी रहे हमेश, हम साजण धुरदरगाहीआ। जिस दा लहणा देणा कलिजुग अन्तम नाल दस दसमेस, दह दिशा वेख वखाईआ। उह मेटणहारा कलिजुग क्रिया कूड़ मलेश, ममता मोह विकार गवाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के हर घट अन्तर करे परवेश, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार ना कोई दृढ़ाईआ। उह वसणहारा एकँकारा सम्बल देस, साढ़े तिन्न हत्थ आपणा रंग रंगाईआ। जिस दे अग्गे अवतार पैगम्बर गुरू होए पेश, पेशीनगोईआं आपणे हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म वरताईआ।

दुराहा कहे जन भगतो दीन दुनी दी तक्क लउ दोहरी धार, धर्म विच्च ना कोई समाईआ। जो संदेशा दे के गए पैगम्बर गुर अवतार, अवतरी हो के मात दृढ़ाईआ। जो कातब बण के बणे लिखार, लेखा लिखया चाईं चाईंआ। जो हुक्म संदेशा दित्ता आप करतार, कुदरत कादर गिआ दृढ़ाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप रिहा विचार, विचरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस नूं सभ ने कहणा कल कलकी अवतार, निहकलंका डंक वजाईआ। अमाम अमामा हो सिकदार, हुक्म संदेशा देवे धुरदरगाहीआ। जो लहणा देणा पूरब सर्ब लए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसांईआ।

दुराहा कहे जन भगतो दीन दुनी दी वेखो मंडी, मण्डल मंडपां विच्च ध्यान लगाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया होई परवण्डी, नव सत भज्जे वाहो दाहीआ। बिना प्रभू तों आत्मा सभ दी होई रंडी, कन्त सुहाग ना कोई हंडाईआ। दीन दुनी ओझड़ पै गई डण्डी, डण्डावत बन्दना सारे गए भुलाईआ। मेरा मेहरवान श्री भगवान करनहार खण्ड खण्डी, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। नव सत दी धार जाए वंडी, वंडणहारा इक्क अखवाईआ। जिस दे हुक्म विच्च चलणी चंडी, चंड परचंड रूप बदलाईआ। उह जन भगतां सदा पवण देवे ठंडी, कलिजुग अगनी अग्ग बुझाईआ। पिछली टुट्टी जाए गंढी, गंढणहार गोपाल स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ। दुराहा कहे जन भगतो जगत दे दोवें राह देणे छड्ड, क्रिया कूड़ ना कोई परनाईआ। माया

ममता नालों होणा अड्ड, हउमे हंगता संग ना कोई रखवाईआ। कूड़ निशाना जगत जहान देणा वढ, तन्दी तन्द नज़र कोई ना आईआ। इक्क नाम निधाना तन वज़ूद अंदर देणा गड्ड, जिस दी जड़ ना कोई उखड़ाईआ। लेखे लाउँणे आपणे मास नाड़ी हड्ड, तन वज़ूद वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

दुराहा कहे मेरे उत्ते सपतस रिखीआं लाया डेरा, पूरब दिआं जणाईआ। बालमीक तिन्न दिन कर के गिआ वसेरा, राम तीर्थ दए गवाहीआ । राम ने नेत्र नाल तक्कया विच्च अन्धेरा, लोचन नैण उठाईआ। बल दा फिर के गिआ वछेरा, असवमेध यज्ञ दुहाईआ । निगाह मार के तक्कदा रिहा सतिगुर शब्द धरनी उत्ते केहड़ा चेरा, चेला गुर कवण अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

दुराहा कहे मेरे उत्ते त्रेता जुग बीता, बीती कहाणी दिआं सुणाईआ । मैं आदि जुगादि सभ दी वेखदा नीता, नीतीवान इक्क हो आईआ । मेरे धाम उत्ते राम विछोड़े विच्च रह दे गई सीता, सत्त दिन आपणी सेज हंढाईआ। एह खेल जगत दीआं अक्खीआं बाहर अनडीठा, नेत्र लोचन नैण वेखण कोई ना पाईआ। जन भगतो इथों इक्क दी धार मिले ते जगत दी दूजी छड्डणी रीता, मन्दर मसीतां रंग ना कोई रंगाईआ। घर स्वामी मिले तैंगुण अतीता, त्रैभवन धनी दए वडयाईआ। जिस दे विच्च हक तौफ़ीका, तोहफे देवे नाम खुदाईआ। तुहाढ्ढीआं आसा मनसा पूरीआं करे उम्मीदा, जो आमद विच्च आए चल के राहीआ। तुहाढ्ढी आसा कामना वेखे पुशीदा, परदिआं विच्चों परदे आप फुलाईआ। तुहानूं दर्शन देवे सनमुख ते सिधा रक्खे दीदा, दीदा दानिस्ता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसांईआ।

दुराहा कहे मेरा आदि आदि दा पुराणा भविख्त, चार जुग दे साशत्र अक्खरां नाल जणाईआ। पुराण गरड़ विच्च वेद व्यास ने लिखी लिखत, कांड अठारवां नाल मिलाईआ। किस बिध पुरख अकाले दीन दयाले ब्रह्मण गौड़ दी धार दीन दुनी दी खोल्हणी दृष्ट, पर्दा परदिआं विच्चों चुकाईआ। फेर संदेशा दे के गिआ राम नूं गुरू वशिष्ट, विशिआं बाहर समझाईआ। पैगम्बरां बिन छाही तों लिखी लिस्ट, अलफ़ ये वंड ना कोई वंडाईआ। नानक निरगुण धार सतिनाम दी दिती किशत, सोहणा आपणा खेल खिलाईआ। गोबिन्द पुरी अनन्द विच्च पैहले दिन इक्क प्यार दी बंन्ही शिशत, निशाना ज़िमी असमान बणाईआ। दुराहा कहे ना मेरा लेखा स्वर्ग ना नाल बहश्त, दोज़कां वंड ना कोई वंडाईआ। मैनूं आदि दा प्यार मेरा प्रभू दे नाल इशक, मशूक आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दखाए इक्क अगम्मा दरिश, दिशा जगत वंड ना कोई वंडाईआ। (२४ अस्सू शहनशाही सम्मत ११)

दीवाली : जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख हरिभगत हरिसंगत साचा थां, गुरसिख आत्मक दीपक जोत जगे दीवाली। (१० कत्तक २०१४ बि)

धन्ना कहे सैण चल वेखीए जोत अकाली, निरगुण आपणी धार जणाइंदा। सैण कहे धन्ने अज्ज दीवाली, हरि साचा ख़ुशी मनाइंदा । धन्ना कहे कलिजुग रैण अन्धेरी काली, दीपक कोई नज़र ना आइंदा। सैण कहे हरिभगत प्रभ अग्गे सवाली, सभ दी आसा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। सैण कहे दीवाली रात, रातीं सुत्यां बीत ना जाईआ। धन्ना कहे नार कमज़ात, ठग्गाँ चोरां नाल रलाईआ। गुरमुख कहण मिल्या पुरख अबिनाश, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ।
धन्ना कहे जगत विहारा, घर घर लछमी राह तकाया। सैण कहे सभ होण ख़वारा, बिन हरि जू दया ना कोई कमाया। भगत कहण मिल्या हरि नाम भंडारा, निखुट कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंधन पाया। (२२ तत्तक २०१८ बि)

सन्त रोवण करन पुकार, उच्ची कूक देण दुहाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अंधिआर, चन्द चांदना ना कोई रुशनाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी होए विभचार, सृष्ट सबाई हरि जू कन्त ना कोई हंढाईआ। साचे मन्दर अंदर निरगुण सरगुण करे ना कोई प्यार, साख्यात रूप ना कोई वखाईआ। काग़ज़ कलम गए हार, लिख लिख थक्की शाहीआ। सत्त समुंदर रोवण ज़ारो ज़ार, बनास्पत उच्ची कूक दए दुहाईआ। किसे मिल्या ना सांझा यार, सगला संग ना कोई निभाईआ। भरमे भुल्ला जीव गवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। बजर कपाटी ना खुला किवाड़, आत्म ताकी कुण्डा ना कोई लाहीआ। तेल बाती दीवे लए बाल, घर घर दीवाली रहे जगाईआ । नाता तोड़े ना कोई शाह कंगाल, शहनशाह ना कोई मिलाईआ। ना कोई सुणाए मुरीदां हाल, मुशर्द मिल्या ना सच्चा माहीआ। फल दिसे ना किसे डाल, लक्ख चुरासी सिमल बूटा नज़री आईआ। तुध बिन कवण करे प्रितपाल, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तेरी घालण रहे घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। इक्को मन्न सति सवाल, बण सवाली रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मिले सरनाईआ। (१६ अस्सू २०१६ बि)

जगत अवल्लड़ी चाल निराली, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तम जोत अकाली, निरवैर पुरख वेस वटाइंदा। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी काली, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। धुरदरगाही इक्को माली, साहिब सुल्तान फेरा पाइंदा। भगत भगवान बुद्ध वेखे बाली, बालक आपणी गोद वसाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाली, जागरत जोत इक्क रुशनाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे हत्थां ख़ाली, नाम भंडार घर नज़र किसे ना आइंदा। साध सन्त जीव जंत बाहर वेखण जगत दीवाली, दीपक अंदर ना कोई जगाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम वेख वखाइंदा। (२० चेत २०२० बि)

भगत दीवाली दीपक बिलोए, बाल बाल रुशनाईआ। सच समग्री इक्को होए, सति सति इक्को वडयाईआ। सच प्रकाश सदा त्रैलोए, लोक अलोक सहाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर मोहे, मुहब्बत बेपरवाहीआ। दोए एक रूप तन अन्तर होए, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जन

भगत दीवाली जाणे कोई, जुग चौकड़ी सार कोई ना आईआ। राम राम नूं देवे ढोए, प्रनाम विच्च सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीवाली इक्क वखाईआ।

भगत दीवाली कहे मेरा जगदा दीप, दीपक करे रुशनाईआ। मेरी ओस दे नाल प्रीत, जो प्रीतम पतिपरमेश्वर रिहा वखाईआ। मैं वेख्या लंघ के सच दहलीज, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी रखी रीझ, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। सो मिल्या साहिब हबीब, तबीब नूर खुदाईआ। जलवा तक्क अजीब, हैरानी विच्च तकाईआ। जिस दा लेखा शाह ग़रीब, ग़ैरां करे जुदाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीवाली इक्क वखाईआ।

दीवाली कहे मैं भगतां जोगी, जुग जुग राह तकाईआ। जिन्हां नूं साहिब सचे दी आ गई सोझी, गृह मन्दर होई रुशनाईआ। उन्हां दी पूजा करन लोकी, परलोक वजी वधाईआ। खेल वेख के ठाकर मौजी, मजलस इक्को घर सुहाईआ। जिस दीवाली नूं वेख के गए वेदी सोढी, नानक गोबिन्द अक्ख खुल्हाईआ। सो दीपक लो प्रकाश देवे उहदी, जिस दी जोत ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीवाली दए दृढ़ाईआ । भगत दीवाली कहे मैं सदा रहां दिन रात, दिवसां वाली ना वंड वंडाईआ। अठ्ठे पहर रखां प्रकाश, प्रेम नूर रुशनाईआ। दीपक विच्चों दीपक दी देवां लाट, ललाट करां रुशनाईआ । जन भगतां दी मेटां वाट, अद्धवाटा पन्ध मुकाईआ। मंज़ल वखा के घाट, घाटे पूर कराईआ। आत्म दी दस्स के ज़ात, परमात्म दिआं मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

दीवाली कहे मैं आई विच्च संसार, दीवे बत्ती सभ दे गुल कराईआ। मेरे शहनशाह दा शहनशाही विवहार, साची शमअ ना कोई जगाईआ। खेड़े उजड़े विच्च संसार, बेड़े कूड़े दिआं डुबाईआ । भगतां करां प्यार, प्रेमीआं लिआं उठाईआ। जिन्हां "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान" बोलया जैकार, उन्हां देवां माण वडयाईआ। दीआ बाती कमलापाती बाल के अगम्म अपार, तेल बत्ती बिना दित्ता टिकाईआ। सो जगदा रहे सद भगतां वाली प्रभात, नूर इक्को इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सच करे रुशनाईआ।

भगत दीवाली कहे मैनूं लोड़ नहीं दीआ बत्ती, तेल वाली ना आस रखाईआ। मैं भगतां नूं मिलाउणा धुर दा कमलापती, जिस नूं मिलयां जोत ना कोई बुझाईआ। एहो खेल लगे हच्छी, अच्छी तर्हां दृढ़ाईआ। जन भगतां करां पक्की, हुक्म दस्सां बेपरवाहीआ । जन भगतो सच दीवाली वेखो आपणी उस अक्खीं, जो अक्खीआं दे पिच्छे अक्खी दिती लगाईआ। जिथ्थे अन्धेर रहे ना रती, दिवस रैण होए रुशनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दे के इक्क मती, मतलब गुरमुखां हल कराईआ।

दीवाली जगत कहे मैं चुक्क के वेख्या पर्दा, नैण अक्ख नाल बदलाईआ। लेखा जाणयां घर घर दा, वेखी सर्ब लोकाईआ। दीपक तेल बाती नाल तकया बलदा, थोड़े समें लई रुशनाईआ। जगत जहान दीपक जलदा, रैण सबाई तक्की हाल दुहाईआ। जिन्हां उत्ते भाणा वरतना कलिजुग कल दा, कालख टिक्के ना कोई मिटाईआ। लेखा मिलणा कूड़े

फल दा, कर्मां दी होए सज़ाईआ । शेर बुकणा दो जहान वडी झल्ल दा, झलक आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दीवाली दए बुझाईआ। जगत दीवाली कहे बहुते दीवे होए गुल, रोशन ना कोई कराईआ । माटी दा पिआ ना कोई मुल्ल, क़ीमत ना कोई चुकाईआ। सच ना तुलया तुल, लहणा हत्थ ना कोई फड़ाईआ। मन वासना गए भुल, भरम भरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दीवाली घर घर दए दुहाईआ।

जगत दीवाली कहे साचा वेखो जगदा इक्को दीआ, जो दीवानख़ान्यां करे रुशनाईआ। उस दे वेखण दा कर लउ हीआ, हिंमत नाल आपणा आप उठाईआ। साची दीपक जगाउण वाली बण जाओ तीआ, तीमत आपणा रूप बदलाईआ। मिल के प्रेमी सचे प्रीआ, दीपक जोत करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों अन्तम हीआ, हरि जू हरि हरि दए समझाईआ। अगे भोगणा सभ ने आपणा कीआ, क़ीमत सके ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत दीवाली रिहा समझाईआ।

जगत दीवाली कहे मैनूं आउँदा रिहा डर, डर डर रिहा सुणाईआ । ख़ुशी होई नहीं घर घर, थोड़यां विच्चों बहुते रहे पछताईआ। मंज़ल वेख्या ना किसे चढ़, सति दीपक ना कोई चमकाईआ। ख़ाली वेख के किले गढ़, मैं अंदरों करां दुहाईआ। इउँ भासदा जिवें सभ दी उखड़न वाली जड़, सिर सके ना कोई उठाईआ। दीआ दीपक रिहा कोई ना बल, बलदी अग्ग ना कोई बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन भगतां साचा दित्ता किसे ना फल, कूड़ कुड़िआरां दीवे गुल रिहा कराईआ। (१० कत्तक शहनशाही सम्मत १)

दीवाली कहे मेरा सच प्रकाश, प्रभ जोत नाल वडयाईआ। जुग जुग भगतां अंदर मेरा खेल तमाश, नित नवित्त साची सेव कमाईआ । हुक्म मन्न साहिब गुणतास, सच स्वामी सीस निवाईआ। जिन्हां दे अंदरों अन्ध अन्धेर जाए विनाश, अबिनाशी करता करे रुशनाईआ । तिस मण्डल होवे मेरी रहिरास, सच समिगरी इक्क प्रगटाईआ। सच दवारे कर के वास, आपणा नूर दिआं चमकाईआ। अवतार पैगम्बर गुरू जिस दे दास, तिस दा रूप अनूप प्रगटाईआ। खेल तक्क पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। लक्ख चुरासी अंदर कर के वास, सृष्टी दृष्टी अंदर फोल फुलाईआ। कवण वस्सया प्रभ दे पास, भगत सुहेला कवण अखवाईआ। जिस दा साहिब उत्ते विश्वास, विशिआं तों बाहर राह तकाईआ। उस दी पूरी होवे आस, सिध्धा रस्ता देवे धुरदरगाहीआ। दीवाली कहे मैं भगतां देवां शाबाश, गुरमुखां नाल वडयाईआ। जिन्हां दा लेखा होवे खलास, चुरासी विच्च ना कोई भवाईआ। तन वजूद पहनणा पए ना कोई लबास, ओढण तन ना कोई हंढाईआ। पवण स्वासी रहे ना कोई स्वास, रजो तमो सतो ना कोई रंग रंगाईआ। शंकर तक्कणा पए ना उत्ते कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म ना ध्यान लगाईआ। जिन्हां निरंतर प्रभ मेरा कीता प्रकाश, दीपक दीआ आत्म परमात्म दित्ता जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दीवाली कहे मैं कोई धार नहीं अग्ग दी, दीवा बत्ती ना कोई वडयाईआ। मैं धार सूरे सर्बग्ग दी, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ । प्रकाश विच्चों प्रकाश हो के जगदी, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मेरी खेल उप्पर शाह रग दी, नौं दवारे डेरा ढाहीआ। मैं साथण

नहीं जीव अलपग दी, कूड़ क्रिया ना कोई वडयाईआ। मेरी आशा भगतां प्रेम विच्च सद्द दी, सद्दा देवे थाउँ थाईंआ। ओनां घड़ी सुलक्खणी होवे अज्ज दी, जिनां मिल्या धुरदरगाहीआ। जो सृष्टी जगत माया प्यार विच्च बलदी, ममता मोह विच्च हलकाईआ। साहिब सतिगुर दा साथ छड्डदी, नाता कूड़ नाल बंधाईआ। कूड़ी आसा होवे कग दी, तृष्ना तृप्त ना कोई रखवाईआ। दीवाली कहे मैं प्रकाश हो के प्रकाश धुर दा लभ्भदी, भगत सुहेले वेख वखाईआ। मेरी आसा नहीं कोई मदि दी, तृष्ना तृखा ना कोई वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

दीवाली कहे मैनूं ब्रह्मा कीता प्यार, दीपक दीआ अगम्म जलाईआ। विष्नूं मेरी बध्धी धार, जोती जोत नाल रुशनाईआ। शंकर मेरी कीती विचार, कैलाश उप्पर कर रुशनाईआ। इन्दर मेरा कीता दीदार, जोत वेख अगम्म अथाहीआ। पड़दा चुकदे रहे पैगम्बर गुर अवतार, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। मेरी जगमग जोत अपार, अपरंपर स्वामी दिती प्रगटाईआ। अष्टभुज मैनूं लिआंदा विच्च संसार, दीपक नौं नौं जगाईआ। फेर जगी बल दवार, बावन रंग वेख्या चाईं चाईंआ। राम दित्ता आधार, मिली माण वडयाईआ। कृष्न ने अरजन दित्ता वखाल, प्रभ जोती जोत रुशनाईआ। मैं जुग जुग चलदी रही साल बसाल, सम्मत सम्मती पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा वेखदी रही हाल, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। बिना भगतां घर दीपक सक्कया कोई ना बाल, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जगत दीवाली सभ नूं कीता कंगाल, जगत वासना विच्च सृष्ट हलकाईआ। मैं सदा जगदी रही सच सच्ची धर्मसाल, काया मन्दर अंदर आपणी आप कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस अंदर आपणा दीपक देवे बाल, दीवाली कहे मैं सदा उस दे नाल जगत रंग दा पन्ध मुकाईआ। (१३ कत्तक शहनशाही सम्मत ६)

कलिजुग कहे दीवाली मेरा लुट्टण आई सोना चांदी, चन्द सितार अक्ख खुल्हाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया भन्नण आई हाण्डी, उम्मत नबी रसूलां ध्यान लगाईआ। लेखा वेखण आई जन भगतां किस बिध चलदी कांडी, कांड दीन दुनी बदलाईआ। जिस झगढ़ा मेटणा सूर गाँ ढांडी, ढंडोरा देवे अगम्म अथाहीआ। प्यार रहणा नहीं आंढी गवांढी, संगी संग ना कोई बणाईआ। कलिजुग अन्तम सभ दी पत्त जांदी, जांदी सके ना कोई अटकाईआ। गुर अवतारां पूरी करे तांघी, तृष्ना पैगम्बरां लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

कलिजुग कहे दीवाली कढ्ढे मेरा दीवाला, दीवालीआ जगत जहान कराईआ। मैं अग्गे किस दा दिआं अहिवाला, संदेशा संदेश विच्चों जणाईआ। की खेल करे पुरख अकाला, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने लेखे लाया भगतां दा गुरमाला, गोबिन्द गढ़ी चमकौर गिआ जणाईआ। उह लेखा वेखे अन्तम हाला, हालत दीन दुनी खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट होणा अन्धेरा काला, कल कलकी आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे समां रहे ना बाहला, जगत वंड ना कोई वंडाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां बदल देवे चाला, चाल

अवल्लड़ी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

कलिजुग कहे दीवाली करे केहड़ी कारी, की करनी कार कमाईआ। मुहम्मद लेखा रिहा विचारी, बिन नैणां नैण उठाईआ। नाता तुटदा जांदा चार यारी, यराना तोड़ ना कोई निभाईआ। चारों कुण्ट रैण अंधिआरी, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। मुहब्बत रहे ना किसे प्यारी, प्रेमी प्रीतम प्रेम ना कोई निभाईआ। चारों कुण्ट होणी खुआरी, खार विच्च दिसे लोकाईआ। जिस ने भगतां दी लेखे लाउणी सीस चुक्की होई तग़ारी, तऱां तऱां आपणा हुक्म वरताईआ। सभ दी अन्तम करे बेइतबारी, इतबार सके ना कोई रखाईआ। उम्मत उम्मती करे ग़द्दारी साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी कला वरताई ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ।

कलिजुग कहे दीवाली लेखा वेखे सभ दा उत्ते वही, खाते पूरब फोल फुलाईआ। जिस दी पैगम्बरां पाई सही, सही सलामत नूर इल्लाहीआ। जिस ने भगतां लेखे लाउणी पहली कत्तक वाली कही, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। निरगुण धार बण मुदेई, मुद्दा वेखे थाउँ थाईंआ। जगत चानणा चन्न कोई ना रही, रहमत रहीम ना कोई कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। दीवाली कहे मेरा किसे ना समझया चानण, अक्खां वालयां नज़र कदे ना आईआ। मैनूं कोटां विच्चों भगत सुहेले जानण, जिन्ां दी जनणी मिले वडयाईआ। मेरा प्रकाश उत्ते असमानण, नूर नूर विच्च रुशनाईआ। मेरा सच घर दा कामन, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। मैनूं राम ने राम दा कीता जामन, विचोला विचला इक्क बणाईआ। दीवाली कहे जिस वेले भगवन भगतां दे अंदरों मेटे अन्धेरी शामन, शम्ा नूर जोत करे रुशनाईआ। उस वेले प्रकाश होवे कोटन भानन, जगत दीपक दी लोड़ रहे ना राईआ। हरिजन तक्कण ज़िमी असमानण, ज़िमी असमान तों बाहर इक्को नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

दीवाली कहे मैनूं सभ ने किहा दौली, दौलतमंद अखवाईआ। मेरा खेल उप्पर धौली, धरनी धरत धवल सुहाईआ। मैं सच दस्सां दीनां मज़हबां दी कीमत नहीं रहणी पौली, रुपईआ रोक ना कोई वखाईआ। सभ दा लेखा मुकणा हौली हौली, हौले भार सर्ब दए वखाईआ। मैं जुग चौकड़ी होई नहीं तौली, आहिस्ता आहिस्ता आपणा पन्ध मुकाईआ। नव नौ चार पिच्छों जन भगत फरकन डौली, डांवाडोल होए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करे धरनी नाल धौली, धर्म दी धार नाल बंधाईआ। (२ कत्तक शहनशाही सम्मत ७)

नारद कहे राम वेख लै आपणी दुनियां वाली दीवाली, दिवाला निकलया खलक खुदाईआ। अन्तर निरंतर सभ दी धार होई काली, बाहर दीपकां करन रुशनाईआ। घर मन्दर सोहे ना कोई धर्मसाली, पवित्र गृह नज़र कोई ना आईआ। फल रिहा ना किसे पत डाली, टैहणी

टैहणी रंग ना कोई रंगाईआ। मैं वैरागण हो के बणां सवाली, दर तेरे वासता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दीवाली कहे सुण मेरे राम रमईआ, रमता रमता दिआं जणाईआ । संदेशा देवां साचे सईआ, की सुनेहड़ा रिहा दृढ़ाईआ। लेखा वेखव लै कढ़ु के आपणी वहीआ, बिन अक्खरां अक्खर ध्यान लगाईआ । जो इशारा कीता मां मतरेई ककईआ, दसरथ संग ना कोई रखाईआ। की धार होणी कलिजुग अन्तम कूड़ कुड़िआर दी नईआ, मोह विकारा हड़ वगाईआ। की आशा रक्ख के गई दुर्गा अष्टभुज मईआ, सिँघ असवार ध्यान लगाईआ। की संदेशा दे के गिआ काहन घनईआ, घनी शाम की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

नारद कहे राम जी बाहरों जगदे वेखव लै दीवे, तेल बाती नाल दीन दुनी वडयाईआ। तेरी नाम मसती विच्च कोई ना खीवे, साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। सचखण्ड दवारिउँ वेखव लै हो के नीवें, धरनी उत्ते ध्यान लगाईआ। सच प्यार कोई ना जीवे, कूड़ क्रिया जगत हलकाईआ। सभ दा लहणा तक लै अन्तम साडे तिन्न हत्थ सीवें, शाह पातशाह बचया रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे राम जी दीवा बाती केहड़े कार, तेल बत्ती की वडयाईआ। जिन्नां दे अन्तर वस्सया नहीं निरँकार, हिरदे हरि ना कोई टिकाईआ। उह फिरदे विच्च अन्ध अंधिआर, जगत लोचन ना कोई रुशनाईआ। कलिजुग दा तक्क लै विवहार, की विवहारी कार कमाईआ। जिस ने सृष्टी मानव जाती कीती बेकार, बेरुजगार होई लोकाईआ। आत्म परमात्म किरत करे ना कोई संसार, साची करनी ना कोई कमाईआ। गुरदर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ रोवण धाहां मार, कूक कूक सुणाईआ। हरि भगत दवारा करे गिरयाज़ार, हाए उफ कर जणाईआ। प्रभू दी धार तों जगत जहान होया बाहर, प्यार विच्च ना कोई समाईआ। दीआ बाती जगत मन्दरां उत्ते करे उजिआर, काया अन्धेरा दूर ना कोई कराईआ। नाले राम नूं कीती निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। झट राम ने कीता इशार, सहज नाल सुणाईआ। नारदा सतिजुग कूक रिहा पुकार, दो जहान सुणाईआ। मेरा मार्ग होवे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए वडयाईआ। कोई दीवा बत्ती अग्गे जगाए ना भगत दवार, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। जो बुझ जाए फिर हो ना सके उजिआर, जगावण वाला नज़र कोई ना आईआ। हरिभगत दवारे अंदर हरिभगत उह होण जिन्नां दे अंदर प्रभू दा दीप सदा रहे त्यार, दिवस रैण इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे राम जी आपणा पुराणा वेखो हिसाब, जगत अंकड़िआं बाहर ध्यान लगाईआ। आपणी कढ़ु के वेखो किताब, बिन हरफ़ हरूफ़ लिखाईआ। सम्मत शहनशाही बारां दा रिवाज, सहज नाल समझाईआ। हुक्म देवे गरीब निवाज़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । जो हुक्म वरतणा देस माझ, लेखा लिखणा कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

शहनशाही सम्मत बारां कहे मेरे अन्तर आए अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दीवाली

वाले दिन भगत दवारे वज्जा होवेगा जंद, जंदरा कुंजी हत्थ ना किसे फड़ाईआ। नौं दिन फेर रहेगा बन्द, अंदर वड़ दरस कोइ ना पाईआ। एह खेल करे सूरा सर्बंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। ढाई साल तक्क जेठूवाल दी संगत परशाद सके कोई ना वंड, भोग घर ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल सदा बख्शंद, बखशिश रहमत आपणी आप कमाईआ। (१८ कत्तक शहनशाही सम्मत ११)

दुशहरा : जगत दुशहरा दहसर रावण, राम राम दुहाईआ। राम नालों दहिसर नूं बहुते गावण, एह प्रभ दी बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा नाल बावन, निरगुण धार अगम्म अथाहीआ। जिस दा हिसाब गुरू ग्रंथ दी धार इकावन, पंज इक्क सोभा पाईआ। जिस दा भेव जगत जुग दामन, पलू जगत वखाईआ। रावण दा भेव ना कोई आया समझावण, कवण राम कवण रावण रावण राम की वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क समझाईआ। रावण राम कदे ना मरदा, मरन विच्च कदे ना आईआ। जिस नूं राम मारया उह रावण सचखण्ड दवारे वड़दा, सच सच विच्च समाईआ। जिस रावण पिच्छे राम रिहा लड़दा, उह रावण राम रूप पैहलों आया प्रगटाईआ। जे रावण एह खेल ना करदा, फेर आदि दी रीती जुग जुग पूर ना कोई कराईआ। एह खेल ओस अगम्मे घर दा, जिथ्थे राम ते रावण बैठे सोभा पाईआ। जगत विहार मन मत बुद्धि विच्च चलदा, द्वैत सभ दे विच्च टिकाईआ। भारत वालिआं आपणा माण रक्खया इक्क गल्ल दा, आपणी लै अंगढ़ाईआ। अंदाज़ा नहीं लाया ओस दे बल दा, जिस त्रेता जुग दित्ता बदलाईआ। जगत जगिआसूआं विचार चलदा, जीव जंत सलाह पकाईआ। साडा राम अवतारी अयुधिआ मलदा, सिँघासण सोभा पाईआ। सभ दे अंदर सल क्यों सीता नूं रावण छलदा, सतवन्ती सति गवाईआ। एसे गुस्से विच्च भारत रावण जलदा, असल भेव ना कोई खुल्हाईआ। सच सच सच रावण ते राम इक्को दवारे पलदा, दूजा दर ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक पड़दा दए चुकाईआ। (५ कत्तक स स ५)

धन : सोहँ साचा शब्द दे सच्चा धन माल। महाराज शेर सिँघ गुरसिख साचे आत्म करे लाल गुलाल। (१७ सावण २००८ बि)

फल टुट्टा आए ना कम्म, जिस मालण हत्थ ना लाईआ। जीव सदा ना रहण स्वासा दम, दम छुपे पए फाहीआ। जगत ना मिटणी तृष्ना तम, तृखा सके ना कोई बुझाईआ। जिस सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बंन्ह, सो जन आपणा बेड़ा पार कराईआ। एका शब्द सुणाए कंन, दूजी आवाज़ कन्न ना कोई पाईआ। एका देवे नाम धन, दूजा धन संग ना किसे जाईआ। हरिजन तेरा तेरे घर जाए मन्न , मनौण दूजे घर ना कोई जाईआ। काया कपड़ छन्न छप्पर साचा मन्दर वस्सया अंदर, दिवस रैण रैण परभात, दरस वखाए इक्क इकांत, अकल कल धार हरि निरँकार, गुरसिख प्यार तन शंगार, मालण फूलन गुंदे वारो वार, नाम तागा प्रेम सूई नक्का गुरसिख तेरी गंढ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हिस्सा भगत वंडाईआ। (२१ फगण २०१७ बि)

नाम धन शब्द गुर रास, गुरसिख खज़ाने आपे पाईआ। आपे वसे सदा पास, निकटी हो हो दरस दिखाईआ। सदा सद होए दासी दास, दासन दासी सेव कमाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल सोभा पाईआ। रव सस कर कर बैठे आस, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता पैहलां गुरसिखां पूरी करे आस, दूजी धार फेर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। साचा नाम माल धनवन्ता, दर घर साचे आपे वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर होए मंगता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। माण रखाए हरिजन जिउँ जन जनका, हरिजन जानकी आप परनाइंदा। अकल कल हरि खेल वरतंता, अनद बिनोदी भेव ना आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे खेल खलाइंदा। नाम धन शब्द भंडारा, भगवन हरि हरि आप वरताईआ। दानव देव मुन जन मुनीशर तपीश्र मंगण वारो वारा, रखीशर जगदीशर सीस सर्ब झुकाइंदा। लेखा जाणे आपणा ईसर, ईश्वर आपणे विच्च समाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वड्डा वड सालाहिंदा। (२१ फगण २०१७ बि)

धन्न : धन्न धन्न धन्न गुरदेव, प्रगट हो जिस दरस दिखाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलू काल अन्त आण कराया। धन्न धन्न धन्न गुर चरन सेव, मोहण माधव जिन घर माहि पाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, छड देह जोत रूप समाया। धन्न धन्न धन्न सर्ब अभेव, कलिजुग निहकलंक अखवाया। धन्न धन्न धन्न प्रभ गुरदेव, लोकमात बैकुण्ठ धाम बणाया। धन्न धन्न धन्न प्रभ गुरदेव, विछड़यां जिन चरनीं लगाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गुरसिखां गुर माण दिवाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गुरसिखां गुर सच दरसाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, जोत रूप सभ खेल रचाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, फूल वरखा सिर सिखां लाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गण गंधरब चरनीं सीस निवाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, तेती करोड़ खड़े दर सीस झुकाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलिजुग आ सिख वडिआया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, सोहँ दे ज्ञान दीपक फेर जगाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कलिजुग लए तार चरन जिस सीस झुकाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, पारब्रह्म परमेश्वर हो घर ठांडे आया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, कोट अपराधी तार साध संगत विच्च मिलाया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, देवे चरन निवास जिनूं इक्क मन ध्याया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, दे के ब्रह्म ज्ञान अन्ध अज्ञान गवाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, अमृत दे भंडार दुखीआं दा दुःख गवाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, निन्दकां सिर छार कोट जन्म घोगढ़ दा पाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, चार जुग होए खुआर, विश्टा मुख रखाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, मन में करे गुमान कूड़ कुटंब गिराया। धन्न धन्न धन्न गुरदेव, बेमुख ना करे पछाण जमां दे वस पवाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, गवाए जन्म हार सूकर जून लिखाया । धन्न धन्न धन्न गुरदेव, महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार भगत जनां नूं पार लंघाया। (१८ जेठ २००७ बि)

दए वड्डिआईआं चार जुग, जग मिलण वधाईआं। धन्न धन्न धन्न गुरसंगतां, गुरदर ते आईआं। रिख मुन जाइण मन्न, बहत्तर भगत प्रभ जोत जगाईआं। लिखत कराए होए प्रसंन, रसना देवे भगत वड्डिआईआं। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, निहकलंक संग प्रीतां लाईआं। महाराज शेर सिँघ उत्तम दरस, कर दरस सभ भुक्खां लाहीआं। (१० चेत २००८ बि)

धूड़ : गुरचरन गुरमुख साची धूढ़ी। प्रभ अबिनाशी आप बणाए साचे सन्त मूर्ख मुगध मूढ़ी। मेल मिलावा साचे कन्त, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़ी। दरस दिखाए आदिन अन्त, जोत जोत सरूप हरि, बेमुख जीवां आपे बीड़े शब्द बूड़ी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत हरि दर भिखार, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, देवे वर नाम निरञ्जण साचा अंजन गुरचरन प्रीती मस्तक साची धूड़ा। (१२ जेठ २०१२ बि)

चरन कँवल साची धूड़, धूढ़ी मस्तक हरि जणाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन टिक्का नाम लगाइंदा। नाता तोड़े माया ममता कूड़ो कूड़, हउमे हंगता रोग गवाइंदा। निज घर निज आत्म जोती धरे साचा नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द अनादी अनहद वजाए साची तूर, तुरत आपणा हुक्म सुणाइंदा। आसा मनसा करे पूर, निरासा रूप ना कोई वखाइंदा। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, मुख नकाब ना पर्दा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा एकँकारा इक्क इकल्ला आप जणाइंदा। (१० मध्घर २०१६ बि)

भरम भुलेखा करो दूर, दर दवार रिहा जणाईआ। प्रगट होया हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। पैहलों बख्शे सर्ब कसूर, फेर दिती चरन सरनाईआ। अन्तम आसा करे पूर, निरासा कोई रहण ना पाईआ। नाता तुटे सृष्टी कूड़, सतिगुर चरन मिले सरनाईआ। सतिगुर सरन साची धूड़, निर्मल जोत करे रुशनाईआ । चतर सुघड़ बणाए मूढ़, जिस जन आपणा भेव खुल्हाईआ। नाद सुणाए इक्को तूर, तुरीआ नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वडयाईआ। (२१ फग्गण २०१६ बि)

साची धूड अमोलक वस्त अगम्म, हरि करता आप प्रगटाईआ। जेहड़ी लथ्थी नहीं उतों किसे चंम, हड्ड मास नाड़ी ना कोई रगढ़ाईआ । जिस दी सेवा कीती नहीं किसे पवण स्वास दम, तन वजूद नज़र कोई ना आईआ। करनी दे करते आपे कर के आपणे कम्म, कामना आपणे नाल रखवाईआ। आपे सेवक साजण बण के हम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वरताईआ।

धूड़ कहे जद होई मेहर, चरन कँवल सरनाईआ। प्रभ दा वज़न आदि तों सवा सेर, जुगादि विच्च रखवाईआ। जिस दा लहणा सके ना कोई नबेड़, अन्त कहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ।

सवा सेर चरन धूड़ अपार, हरि करते आप प्रगटाईआ। हुक्म दित्ता धुर दरबार, धुर दरबारी आप सुणाईआ। शब्द दुलारा कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर उठाईआ। एहदा चलणा इक्क विवहार, विवहारी हो के आप जणाईआ। इस नूं कर त्यार, अमृत जल विच्च छुहाईआ। दोहां दा विहार, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ । जोती जोत अगम्मी बाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। (११ चेत श सं ४)

धृिग : धृिग जीवण संसार, जिनां गुर दर्शन ना पाया। पल्लू फिराया आप, भगवान बीठला आया। (५ विसाख २००७ बि)

बेमुख धृिग जीवणा। बेमुख धृिग खाणा पीवणा। बेमुख धृिग पहनणा सोवणा। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा बीज ना सतिजुग बोवणा। (१ माघ २००६ बि)

सृष्ट सबाई दए हुलारा। इक्को लग्गे धक्का भारा। बेमुख डिगण मूंह दे भारा। उतों वज्जे शब्द कटारा। गुरसिख वेखण प्रभ साचे दा साचा खाड़ा। बेमुख अग्गों कढ़ुण हाढ़ा। चरनां नाल छुहावण दाहड़ा। अग्गे जोगा ना कोल किसे दे भाड़ा। धर्म राए अग्गे बैठा चबाई जांदा विच्च दाहड़ां। बेमुख अग्गे कदम उठाउँदा, तपया दिसे तन्दूर जिउँ लग्गी अगन हाढ़ा। पिच्छे उठ उठ बेमुख वल मां दे जांदा, क्यों छड्ड आई माता मैनूं विच्च उजाड़ां। ना कुछ खांदा ना कुछ पींदा, अग्गों मिलदीआं झाड़ां। मैं निज तेरे घर जम्मदा, निज जगत विच्च जींवदा, मेरा लेख होया माड़ा। धृिग धृिग मां संसार तूं जिस ना दस्सया राह, ना प्रभ साचे घर वाड़ा। कवण मेरी अन्त पकड़े बांह, घर बाहर कढ़ु तूं कीआ बन्द कवाड़ा। झूठी माणी मैं तेरी छाँ, अग्गे लगदी अग्ग विच्च बहत्तर नाड़ां। मुड़ के कुख तेरी विच्च आवां ना, ना दुःख पावां ना तन नूं साड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव आप मिटाए मगर लगाए अगम्मी धाड़ां। (१७ मध्घर २०१० बि)

मत बुध अंञाण, ज्ञान ना जाणया। आपे बण जगत प्रधान, आपणा रंग ना माणया। ना सुझे पीण खाण, अठ्ठे पहर रहे नूरानया। धृिग धृिग धृिग जीवण जीण, जो चले ना प्रभ के भाणया। दिवस रैण तड़पे जिउँ जल मीन, मिले ना ठंढा पाणीआ । कोई ना करे ठांढा सीन, रसना रस फिरे हलकानीआ। मिले ढोई ना लोकां तीन, जिस छड्डया पुरख सुजानीआ। आपे भन्ने हँकारी बीन, फड़ शब्द तीर कमानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल करे सर्ब पछाणीआ। (१६ हाढ़ २०१३ बि)

सम्मत सोलां हाढ़ सतारां, हरि हरि रंग रंगावणा। गुरमुखां दस्से सच विहारा, सतिजुग साचे मार्ग पावणा। देवे दरस घर घर घर बारा, घर घर विच्च दीप जगावणा। मदिरा मास चाह जो जन लाए रसन दवारा, दरगाह धाम ना कोई वखावणा। धृिग धृिग धृिग जीवण संसारा, जिस जन गुर तों मुख भवावणा। अन्तम बेड़ा डुब्बे विच्च मंझधारा, किसे ना पार करावणा। मानस जन्म मिल्या एका वारा, दूजी वार ना किसे वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खण्डा आपणे हत्थ, शब्द धार हो उजिआर, नर निरँकार लोकमात चमकावणा। मदिरा मास मुख लग्गे चाह, हरि संगत विच्च रहण ना पाईआ। हरि संगत धक्का देणा ला, मनमुख कोई दिस ना आईआ। इक्की सिख बणे गवाह, ना सके कोई मिटाईआ। सत्त सागर मस बण रहे लिखा, लेखा लिखत ना कोई मुकाईआ। इक्की खण्डे इक्कीआं हत्थां विच्च दए चमका, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। शब्द दीवार दए बणा, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताईआ। (५ जेठ २०१६ बि)

धन्न वड्डिआई गुंग मख, जूठ झूठ ना कोई विचारदा। धृिग जीवण दिसे उस मनुख, जो रसना काम क्रोध हँकारदा। गूंगे मिले साचा सुख, अजपा जाप तन उच्चारदा। दस दस मास मात गरभ उलटा होए रुख, चुरासी जन्म ना कोई निवारदा। गुंगे उपजिआ एका सुख, अन्तर आत्म अमृत ठारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुंग मुख आप उभारदा। (२३ जेठ २०१६ बि)

धृिग संसार जीवना, बिन हरि नाम प्यार। गुर सतिगुर चरनी थीवना, देवणहारा नाम अधार। साचा प्याला एका पीवणा, भरया नाम जाम करतार। बीज अमृत सच्चा बीवना, फल लग्गे अपर अपार। तन पाटा आपणा सीवणा, नाम तागा गंढणहार। मन आपणा करना नीवणा, निउँ निउँ हरी दवार निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बख्शे सच विहार। (२७ जेठ २०१६ बि)

मदिरा मास करन अहार, धृिग धृिग जीवण धृिग जीवास, दरगाह साची कोई ना होए सहाईआ। नानक गोबिन्द ना वस्सया पास, वेले अन्त ना दए गवाहीआ। रसना गाया ना स्वास स्वास, मन तन धन गुर अग्गे ना भेट चढ़ाईआ। गुरसिख साचे बल बल जास, धन्न धन्न धन्न तेरी वडयाईआ। तेरी आसा ना होए निरास, पूरन आसा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, सतिजुग साची नींह रखवाईआ। (१२ हाढ़ २०१६ बि)

जुग जुग वछोड़ा कटया, कलिजुग तेरी अन्तम वार। गुरमुख मेटे दूई द्वैती फट्टया, अमृत आत्म उप्पर डार। चौदां लोक वखाए एका हटया, गुर चरन दवार भिखार। लेखा चुक्के तीर्थ तटया, पाया पुरख इक्क निरँकार। गुरमुख विरले लाहा, खटया, सृष्ट सबाई सुत्ती पैर पसार। कलिजुग सीस पावे घटया, धृिग जीवण दस्से करे धृिग धृिग धृिग कार। गुरमुख दवारे आए नट्ठया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, निरगुण सरगुण जोत धर, जोती जामा अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं देवे इक्क आधार । (२७ हाढ़ २०१७ बि)

गुरमुख मेल मिलनया, मेला हरि दवार। सतिगुर पूरा चढ़ाए चंनया, निरगुण जोत करे आकार। जो घड़या सो भंनया, थिर रहे ना विच्च संसार। कलिजुग जीव अन्तम जाणा डंनया, जिस भुल्लया हरि करतर। धृिग जन्म जन्म मां जिस हरि भगत मात ना जणया, माणस जन्म होया ख़वार। बांझ रहन्दी मात कंनया, सेज आए ना कन्त भतार। माणस मनुख जो वेले अन्तम जाए डंनया, लक्ख चुरासी होए ख़वार। बिन गुरसिख हरि का राग ना सुणे कोई कंनया, सतिगुर पूरा आप सुणाए सच्ची गुफ़तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिखां पैज रिहा सुआर। (१ कत्तक २०१७ बि)

धीरज धीर सति सन्तोख ज्ञान, हरि साचा सच जणाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन गुर ध्यान, गुर मंत्र इक्क समझाइंदा। धृिग जीवण जीव नादान, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोई कराइंदा। मनमुख भुल्ले जीव अज्ञाण, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। मिल्या मेल पंज शैतान,

घर घर अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाच नचाइंदा। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, तिस जन आपणा मार्ग आप वखाइंदा। शब्दी शब्द देवे दान, दाता दानी आप वरताइंदा। आसा तृष्ना तृखा तैंकाल सर्ब मिट जाण, तैंकाल दरसी आप मिटाइंदा। गुरसिख होए चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुरसिख गोबिन्द घाट गुर सतिगुर आप बहाइंदा । (११ फग्गण २०१७ बि)

धृिग गुरसिख जो खावे हड्डी, एह गोबिन्द गिआ समझाईआ। गोबिन्द दी किरपान धार किसे बक्करे दी गर्दन नहीं वढ्ढी, प्रेम रत नाल खण्डा दित्ता रंगाईआ। गोदावरी कन्ढे माधो नाल कीती नहीं कोई ठग्गी, बन्दे दा लहणा झोली पाईआ। किरपान मिआन विच्चों नहीं कढ्ढी, ना बक्करयां कोई झटकाईआ। सोलवें साल विच्च सारे हुक्म कर देणे रद्दी, नवां लेखा देण बणाईआ। चार वरन सिखी आवे भज्जी, नौं खण्ड पृथ्मी नेत्र नैणां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। (१ माघ श सं १)

सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं ते छड्ड के आई चौदां तबक घराना, नाता मुहम्मद नालों तुड़ाईआ। वाअदा कर लउ केहड़ा मेरे प्रभू दे नाल पक्का रक्खू याराना, दोवें हत्थ दिउ वखाईआ। जिस ने रहणा बेगाना, उह मुड़ के भगत दवारे कदे ना आईआ। उह आपणा मिलदा रहे मासड़ फुफी मामा, ताइआं चाचिआं नाल आपणा झट्ट लंघाईआ। मां पिओ दा जो झल्ल ना सके सतिगुर वास्ते ताअना, धृिग जीवण उहदा धृिग उहदी माईआ। किसे कम्म ना आवे रसना दा खाणा, जिस दी रसना सतिगुर ना ढोला गाईआ। (२७ पोह श सं ४)

भगतो एह दुनियांदारां दी ढकी, ठग्ग चोर विच्च बैठे डेरा लाईआ । अज्ज तों सारे प्रभ दे नाल कर लउ पक्की, पक्का नाता लउ जुड़ाईआ । तुहाढ्ढी आत्मा जिस ने तुहाढ्ढे विच्च रक्खी, जदों चाहे फूक मार के दए बुझाईआ। फिर ना कोई किसे दी नार ना कोई किसे दा पती, बांह विच्च बांह पा के, हैट पैंट सजा के, साड़ी बूट लगा के, पेटी कोट छुहा के, बुल्लीं सुरखी ला के, मथ्थे बिन्दी टका के, टेडा चीर कढा के, मेंढी सीस गुंदा के, वाल बनाउटी बणा के, कन्नी कांटे लटका के, गल हार सुहा के, चूड़ीआं गुट्टां नाल रला के, मातलोक दिआं बज़ारां विच्च टहिलण कोई ना जाईआ। धृिग एहो जिहे रिशतिआं नूं जेहड़े मरन तों पिच्छों सारे जाण तजा के, हत्थीं आउण जला के, रोवन सिआपे पा के, हाए हाए कर सुणाईआ। बलहारी जाओ उस सतिगुर सच्चे शाह के, जो मरन तों पैहलों शाह रग दे उत्ते पहुंचे आ के, सहज नाल आत्म सेजा उत्ते बह के, गुरसिख आपणी गोद टिका के, किपाल विच्चों दयाल हो के भज्जे चाईं चाईआ । साकां सनबंधीआं दे कोलों डाक्टर वैद हकीम मुनीआं दे कोलों, आपणी आत्मा आपणे विच्च लै जाए छुपा के, ओस वेले कोई ना कहे क्यों साडा मां पिओ भैण भरा पुत्तर धी साक सज्जण सैण नार कन्त नालों करे जुदाईआ। जे जीउँदा कोई घर छड्ड के सतिगुर चरन लग्गे आ के, पिच्छों सारे रिशतेदार करन लड़ाईआ। जे कोई कच्चा भगत होवे ते उहनूं छड्डण हटा के, प्रभ दा भगत आपणा तन मन सतिगुर लेखे लाईआ। एसे कर के धरू प्रहिलाद गए समझा के, रविदास

चुमारा दए गवाहीआ। जिस पाया तिस आपणा आप गुआ के, नाता दुनी नालों तजाईआ। (२७ पोह श सं ४)

दरस करन दी जिस लग्गी प्यास : साचा दर्शन जो जन लोड़े, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा घर सुत्यां बौहड़े, बांहों पकड़ लए उठाईआ। सुरती शब्दी घर घर विच्च जोड़े, टुट्टी गंढ वखाईआ। पंच विकारा दर तों होड़े, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। स्वछ सरूपी नज़री आए मोहरे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कर प्रकाश अन्ध घोरे, आपणा पड़दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन देवे थाउं थाईंआ।

जो जन साचा दरस मंगे, इक्क ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा काया चोली रंगे, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। पौड़ी चढ़ाए आपणे डण्डे, घर घर विच्च दए वड्डिआईआ। पार कराए डूंघे सागर कन्ढे, शौहु दरया ना कोई रुड़ाईआ। आत्म देवे इक्क अनन्दे, परमानंद वखाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए छन्दे, अजप्पा जाप समझाईआ। बन्दगी लाए आपणे बन्दे, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। विच्चों कढ्ढे वासना गंदे, सच सुगंधी नाम भराईआ। माणस जन्म होए ना भंगे, लक्ख चुरासी देवे तन्द तुड़ाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां गुरमुखां दे अंदर लंघे, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। देवे दरस जीउ पिण्डे, इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिंधे, कँवल नाभ नाभ उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे दरस मन तृप्ताईआ।

जो जन दरस करन दी रक्खे आसा, आसा मनसा नाल मिलाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल तिस दा दासी दासा, ठाकर बण के ठोकर नाम लगाईआ। चरन कँवल उप्पर धवल देवे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जो जन आए वेखण तमाशा, तिन्नां जगत तमाशे नाल रलाईआ। जो जन आए करन हासा, तिन्नां हँस-मुख सालाहीआ। जो जन आए प्रभ वसे सदा पासा, तिन्नां अन्तर दरस दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउं थाईंआ।

दरस करन दी जिस लग्गी प्यास, आत्म रही बिललाईआ। तिन्नां नाम कटोरा दए ग्लास, घाड़त घड़ी नज़र किसे ना आईआ। मन मत बुध तिन्ने कर ना सकण उदास, चंचल रूप ना कोई वटाईआ । अंदर वड़ के जाए आख, उठ गुरसिख दरसन कर चाईं चाईंआ । घर मेला कमलापात, कँवल नैण फेरा पाईआ। जन भगतां मिल इक्क जमात, जिथ्थे इक्को नाम पढ़ाईआ। सतिगुर नज़री आए साख्यात, पर्दा नज़र कोई ना आईआ। सनमुख होए कर बात, अग्गे पिच्छे मुख ना कोई छुपाईआ। दरस कीत्यां मिले नजात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

साचा दरस जो जन जाणे, अन्जाणत दए जणाईआ। गुरसिख गुर दोवें चलण इक्क दूजे दे भाणे, भाणे भाणे विच्च समाईआ। गुरमुख चतर सुघड़ सिआणे, मूर्ख मूढ़े आपणा रूप वटाईआ। दर घर साचे होण परवाने, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा नाम वर, दरस इक्को घर जणाईआ।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆